पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या......... ..   आगत संख्या...........

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३०वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

हिन्दू ...
स्थापना हेतु
संघर्ष करो।

संस्थापक
स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु:
सम्पादक : राकेशरानी

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग,
करौलबाग, नई दिल्ली-५
दूरभाष : ५६२६३६
५६४७४१
८०१२११
वार्षिक मूल्य : ३० रुपए
विदेश में : विमान से ४५ पौंड,
६५ डालर
समुद्री डाक से ४ पौंड, ६ डालर

आजीवन : ५०१ रुपए
विदेश में : १००१)
यह प्रति : तीन रुपये
वर्ष १७ : अंक १
वैशाख संवत् २०४१
मई १९८४

आओ, नव-संकल्प संजोएं

१९८४ में आपका प्रिय मासिक "जन-ज्ञान" अपने १६ वर्ष पूरे करके सत्रहवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। १६ वर्ष में राष्ट्र की रक्षा के लिए समाज में जागृति लाने के लिए सोये हिन्दुत्व को हिन्दुस्तान की जनता में जगाने के लिए जन-ज्ञान द्वारा जो भी कार्य किया गया है, उसकी प्रेरणा देने वाला—वह तेज और ओज से भरा व्यक्तित्व जन-ज्ञान तथा दयानंद संस्थान के संस्थापक महात्मा वेदभिक्षु: जन-ज्ञान को सत्रहवें वर्ष में प्रवेश पर भौतिक शरीर में हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनका आशीर्वाद सदैव हमारे साथ है।

लगभग चार वर्ष पूर्व सन् १९७९ में जब उन्होंने हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना की थी, उस समय अपने आपको हिन्दू कहने में हिन्दुस्तान की जनता के प्रमुख नेताओं को भी संकोच होता था। आर्यसमाज के हमारे कुछ भाई भी "हम आर्य हैं" कहकर हिन्दू शब्द का विरोध कर रहे थे, लेकिन महात्मा वेदभिक्षु: जी ने हिन्दू शब्द गूंजाने के लिए "जन-ज्ञान" में लिखने के साथ-साथ लगभग ३० लघु पुस्तिकाएं लाखों की संख्या पार करके करोड़ों की संख्या में प्रकाशित कीं। जन-ज्ञान के विशेषांक निकाले। जन-ज्ञान का प्रत्येक अंक हिन्दू विशेषांक ही लगता है। उन्होंने हिन्दू शब्द की परिभाषा ही देशभक्ति के ढांचे में की है। उनका कहना था कि जो अन्य सम्प्रदाय इस्लाम-ईसाईयत आदि हैं, उनकी देशभक्ति हिन्दुस्तान के प्रति नहीं हो सकती। हिन्दू शब्द देशभक्ति का प्रतीक है। जो हिन्दू है, वही देशभक्त हो सकता है।

महात्मा वेदभिक्षु : जी ने अपने मार्ग दर्शन महर्षि दयानन्द, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द एवं पंडित लेखराम के जीवन से प्रेरणा लेकर स्वातन्त्र्यवीर सावरकर के हिन्दू राष्ट्र के उद्घोष और हिन्दू संगठन आंदोलन को अपनी प्रचंड कर्मशक्ति से गतिमान् किया था। महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द और वीर सावरनर के समान ही महात्मा वेदभिक्षु : की आराध्य देवता भी यह महान् आर्य जाति और यह अजेय हिन्दू राष्ट्र ही था। उसके ही हित चिन्तन में उन्होंने अपनी जीवन समिधा संघर्ष पथ पर चलते-चलते समर्पित कर दी। वे आज हमारे मध्य नहीं हैं, किन्तु हम संकल्प ग्रहण करते हैं कि उन्होंने जो पथ हमें दिखाया है, हम उस पर पूर्ण निष्ठा के साथ अपने कदम बढ़ाते रहेंगे।

विरोध और आपदायें हमें तोड़ भले ही दें लेकिन झुका नहीं सकेंगी। महात्माजी का प्रेरक जीवन हमें राह दिखा रहा है। हम उस पर निर्भीकता के साथ बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहेंगे। आत्मविश्वास हमारा है। जन-ज्ञान के प्रिय पाठकों, हिन्दू रक्षा समिति के कार्यकर्ताओं और दयानन्द-संस्थान के लाखों समर्थकों की शुभ कामनाएं और आशीर्वाद हमें निरन्तर कर्तव्य पथ पर चलते रहने की प्रेरणा दे रहे हैं।

—राकेशरानी

इस अंक में पढ़िए

वीर सावरकर का जीवन : प्रेरक है उसका हर क्षण

मई मास भारतीय इतिहास के अनेक प्रेरक पृष्ठों का गवाह है। दस मई ह उस ऐतिहासिक संग्राम की याद दिलाती है, जो भारत माता के पांव में पड़ी जंजीरों को काटने के लिए स्वधर्म और स्वराज्य के दीवानों ने १८५७ में प्रारम्भ किया था। ब्रिटिश दासता से मातृभूमि को मुक्ति दिलाने के लिए रक्त की होली खेलने वाले नाना साहब पेशवा, वीरवर तात्या टोपे, क्रान्ति दूत मंगल पांडे औ वीर कुंवरसिंह के नाम सहसा ही मानस पटल पर उभर उठते हैं और या आती है वह महान् वीरांगना (लक्ष्मीबाई) भी जिसने बुन्देलखंड में आजादी अलख जगाई थी। बूढ़े बहादुरशाह जफर की पंक्तियां भी याद हो आती हैं जिस ब्रिटिश राज्य सत्ता को चुनौती देते हुए उद्घोष किया था—

गाजियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की।
तख्ते लन्दन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की।।

अंग्रेजों के खिलाफ लड़ा गया यह पहला स्वाधीनता संग्राम असफल गया था। इसकी असफलता का प्रमुख कारण यह था कि जब सहस्रों क्रान्तिवी अपने शीश हथेली पर रखकर स्वातन्त्र्य लक्ष्मी का जय-जयकार करते हुए र भूमि में उतरे थे, तभी पंजाब के कुछ अपनों ने ही धोखा देकर इस महायज्ञ विध्व में विदेशी सत्ताधीशों को अपना सहयोग देकर विजय को पराजय में बदल दिया था। गुरु गोविन्दसिंह ने अपने जिस स्वधर्म और स्वराज्य के अनुष्ठान को पू करने के लिए अपने चारों लाल बलिवेदी पर समर्पित कर दिए थे, जिसके लि वीर बंदा वैरागी ने अपना अंग-भंग करवाया था, भाई मतिदास ने गुरु तेगबहा दुर के साथ-साथ अपना तन आरे से चिरवाया था, उसी क्रम में प्रारम्भ कि अनुष्ठान को खुद को गुरु गोविन्दसिंह का अनुयायी बताने वाले कुछ पथभ्र अंग्रेजों के चाटुकार बनकर असफल बनाने में आगे आये थे। इन अपनों ने ही स्वतन्त्र हिन्दुतान के स्वप्न को उस समय असफल कर दिया था।

ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध आ यह स्वातन्त्र्य समर असफल भले ही हो गय हो, लेकिन जयिष्णु जवानों ने रक्त की स्याही और अस्थियों की लेखनी बना कर इतिहास का जो प्रेरक अध्याय लिखा था उससे भावी पीढ़ियों ने भी शिक्ष ली। उनका बलिदान स्वदेश की स्वतन्त्रता और स्वधर्म के संवर्धन हेतु अने राष्ट्र भक्तों के लिए प्रेरणा का अजस्त्र स्रोत साबित हुआ।

इसी प्रेरक इतिहास को भारत माता के जिस वरेण्य पुत्र ने अपनी पैनी लेखनी और सजग दृष्टि से एक रोमांचक गाथा के रूप में १९०९ में ब्रिटिश साम्राज्य की मांद में प्रवेश कर एक प्रेरक पुस्तक के रूप में विश्व इतिहास को समर्पित किया उस क्रान्ति दूत (स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर) की जन्म तिथि भी २८ मई है। इस वर्ष तो इसका और भी अधिक महत्त्व है, क्योंकि यह वर्ष वीर सावरकर जन्म शताब्दी वर्ष भी है। २७ मई पं० जवाहरलाल नेहरू की भी पुण्य तिथि है, जिन्होंने भारत की महानता का सपना अपने नेत्रों में संजोया था।

स्वातन्त्र्यवीर सावरकर देश का वह आग्नेय जीवनव्रती महापुरुष था जिसके त्याग और बलिदान की अतुल कहानी मुर्दा दिलों में भी नवप्राण भरने में समर्थ है। वह कालजयी, वह क्रान्तिकारियों का मुकुट मणि केवल वाक्शूर ही नहीं था अपितु उसने अपने जीवन का हर क्षण और रक्त का हर कण मातृभूमि हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता के लिए समर्पित किया था। अण्डमान के क्रूर कारागार की काल कोठरियों में उसने कीलों के सहारे प्रचीरों को कागज बनाकर कमला जैसे महाकाव्य का सृजन किया था तो हिन्दुत्व का रचनाकार भी वह महान् साहित्यकार ही था। उसने भारत की अखंडता और स्वतन्त्रता के लिए पूर्ण समर्पित भाव से संघर्ष किया था। उसके त्याग के समक्ष हिमालय भी नतमस्तक है और गंगा-यमुना की पावन जल धाराएं आज भी उसकी गौरव गाथा गा रही हैं। हिन्दू भूमि के उस महान् सपूत ने अपने त्याग और बलिदान को नीलाम चढ़ाने की बजाय राष्ट्र के मेरुदंड हिन्दू समाज को कुरीतियों से सर्वथा मुक्त कर एक आधुनिकतम सबल हिन्दू राष्ट्र की रचनार्थ हिन्दू महासभा के कर्णधार के रूप में समग्र भारत में जाग्रति का शंखनाद किया था, विधि की विडम्बना ही है कि ज्ञान-विज्ञान में भारत को प्रथम श्रेणी का हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए जीवन के अन्तिम प्राण तक सक्रिय रहा यह अजेय सेनानी वर्तमान सत्ताधीशों की उपेक्षा का शिकार बना तो साथ ही उस हिन्दू समाज ने भी उसकी चेतावनियों की उपेक्षा की जिसके संगठन को उसने अपने जीवन का मूल मन्त्र बनाया था।

आज देश का इतिहास एक संक्रमण काल से गुजर रहा है। ऋषि-महर्षियों और बलिदानी गुरुओं की पदरज से पावन पंचनद (पंजाब) की धरती में फिर कुछ अपने ही गुरु गोविन्दसिंह, बलिदानी बंदा वैरागी, वीर शिरोमणि हरिसिंह नलव और केशधारी व सहजधारी हिन्दुओं की एकता के प्रबल पक्षधर महाराजा रणजीतसिंह एवं पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, देवता स्वरूप भाई परमानन्द एवं अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द तथा शहीदे आजम भगतसिंह की कल्पना के भारत को गारत करने की फिराक में हैं। किन्तु हम इस स्थिति को

चिन्ताजनक मानते हुए भी निराश नहीं हैं। हमारा विश्वास है कि स्वातन्त्र्य वीर सावरकर और महात्मा वेद भिक्षु: जी के सपने अवश्य ही साकार होंगे।

अन्तरिक्ष में भारत माता के लौह लाड़ले राकेश शर्मा की उड़ान विज्ञान के क्षेत्र में भारत के कीर्तिमान की कहानी कह रही है और यह जता रही है कि स्वातन्त्र्य वीर सावरकर ने जिस वैज्ञानिक दृष्टि से आधुनिकतम भारत का सपना अपने नेत्रों में संजोया था वह पूर्णता पा रहा है। भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करने का जो उद्घोष वीर सावरकर के सपने को पूरा करने के लिए महात्मा वेदभिक्षु: जी ने गुंजाया था अब उसकी गूंज कन्या कुमारी के समीप मदुरै में आयोजित हिन्दू सम्मेलन में गूंजती सुनाई पड़ती है—तो बम्बई काकड़वाड़ी में जहां देव दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी, अब शिव सैनिकों के मुख से भी उच्चारण हो रहा है।

दिल्ली में आयोजित धर्म संसद् में भी समान नागरिक संहिता का स्वर उभरा है तो पूर्वांचल की उपत्यकाओं में भी हिन्दू संगठन का महामन्त्र गुंजित हो रहा है। गुजरात में भी शुद्धि आंदोलन गतिमान् हो रहा है। पंजाब से केरल तक का हिन्दू आज अपने अधिकारों के प्रति सजग हो उठा है। हमारा विश्वास है कि हिन्दू संगठन महायज्ञ जितना अधिक प्रबल होता जायेगा विघटनकारी शक्तियां उतनी ही क्षीण होती जायेंगी। सबल और सजग हिन्दू ही मानवता के कल्याण की प्रतिश्रुति देने में समर्थ हो सकेगा, क्योंकि हिन्दुत्व ही इसका अधिष्ठान है वेद की पावन विचारधारा ही प्राणवायु। यह विचारधारा वसुधैव कुटुम्बकम् और सर्वे भवन्तु सुखिन: के महान लक्ष्य से अनुप्राणित है।

आओ हम संकल्प ग्रहण करें कि हम देव दयानन्द, स्वातन्त्र्य वीर सावरकर के सपनों को साकार करने और महात्मा वेदभिक्षु जी के अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए अहर्निश सजग और सचेष्ट रहेंगे। नाना साहब, रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे का बलिदान हमें कर्तव्य पथ पर अडिग रहने की प्रेरणा देता रहेगा। पंडित जवाहरलाल नेहरू के नाम का डिमडिमनाद हम भले ही नहीं करते हैं किंतु हमने इस तथ्य को कभी भी नहीं भुलाया है कि उन्होंने आधुनिक भारत के निर्माण में पूर्ण समर्पण भाव से योगदान प्रदान किया था।

भारत माता के इन वरेण्य पुत्रों के प्रेरक जीवन हमें राह दिखायेंगे। हम हिन्दुस्तान को एक ऐसा महान् राष्ट्र बनायेंगे जो विश्व की उद्भ्रान्त मानवता को सत्पथ दिखायेगा और फिर ऐसा अवसर भी आयेगा कि, जब सारा विश्व भारत की महिमा गायेगा और सभ्यता तथा संस्कृति की इस आदि भूमि आर्यावर्त की विरुदावलि गायेगा।▭

धर्म संसद् का अधिवेशन :
एक सराहनीय प्रयास

गत मास राजधानी (नई दिल्ली) में धर्म संसद् का अधिवेशन हुआ। यह देश भर के लगभग छः सौ धर्माचार्यों का एक अभूतपूर्व संगम था। जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी शांतानन्द जी एवं अनेक मठाधीश तथा मंडलेश्वर एक ही मंच पर उपस्थित थे। इन धर्माचार्यों को एक ही मंच पर लाने और एक ही पंगत में बैठकर भोजन करते हुए जिसने भी देखा, वह उस दृश्य से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा।

इस धर्म संसद् का समारम्भ किया स्वामी चिन्मयानन्द जी ने, जिनकी ख्याति देश-विदेश में है। उन्होंने अपने भाषण में जो सर्वाधिक प्रेरक बात कही वह यह है कि "राजनीति राजाओं की चीज है और धर्मगुरु उसमें केवल तभी उतरते हैं जब राजा अपने कर्त्तव्य में असफल हो जाता है।" आज ऐसा ही अवसर उपस्थित है। देश और समाज छीजता जा रहा है, उसका संकट और आंतरिक कलह गहराता जा रहा है। ऐसी स्थिति में धर्म गुरु ही पथ-प्रदर्शन कर सकते हैं। यही सोचकर वे यहां एकत्रित हुए हैं।"

विराट् हिन्दू समाज के नेता डा० कर्णसिंह ने भी इस अवसर पर अपनी ओजपूर्ण वाणी में स्थिति का विवेचन किया। प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने तो कहा कि आज की समस्या का समाधान हिन्दू राष्ट्र ही है।

स्वामी चिन्मयानन्द जी यदि अंग्रजी के स्थान पर हिन्दी अथवा संस्कृत में अपने विचार व्यक्त करते तो बात शायद और अधिक प्रेरित करती। आयोजकों का यह दावा भी बड़ी सीमा तक सही है कि सम्राट् स्कंदगुप्त के समय के बाद यह धर्म संसद् अपने ढंग का पहला ही प्रयास था।

धर्म ससद् का यह आयोजन विश्व हिन्दू परिषद् का प्रयास था। इस संसद् के स्वरूप को देखकर एक प्रश्न सहसा ही मानसपटल पर उभरा कि १९६६ में जब हिन्दू परिषद् का गठन हुआ या तो अकाली दल के नेता मास्टर तारासिंह, मुनि सुशीलकुमार तथा आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता इसके संस्थापकों में शामिल

थे। लेकिन धर्म संसद् में जहां विभिन्न हिन्दू सम्प्रदायों के धर्माचार्यों ने भाग लिया वहां न सिख (नामधारी समुदाय को छोड़कर) प्रतिनिधि इसमें नजर आये और न ही आर्यसमाज का कोई मूर्धन्य संन्यासी या नेता ही। यह भी कहा जा सकता है कि विश्व हिन्दू परिषद् की स्थापना के दो दशक बाद इस धर्म संसद् में उन्हीं सम्प्रदायों की साझेदारी प्रमुख थी जिन्हें सनातन धर्म के दायरे में समाहित किया जा सकता है। अन्य समुदायों का प्रतिनिधत्व सिर्फ खानापुरी के लिए ही रहा।

धर्म के विषय में आज का अंग्रेजीदां भारतीय एक विचित्र-सी दुविधा में है। अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षा में पले लोग खुले तौर पर धर्म से नाता जोड़ते हुए कतराते हैं। यही लोग अपने निजी जीवन में बड़े कर्म कांडी तथा नए-नए आधुनिक अवतारों की हाजिरी बजाने में एक दूसरे से होड़ लेते हैं लेकिन दैनिक जीवन के अनिवार्य अंग के रूप में धर्म को जीने वाले सामान्य हिन्दू उन्हें अंधविश्वासी प्रतीत होते हैं। इन लोगों ने सामाजिक जीवन संचालन में धर्म के योगदान की उपेक्षा की है और धर्म को भी अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति का साधन बना लिया है।

यह स्थिति ब्रिटिश राज में प्रचलित की गई शिक्षा-नीति का जो अभी तक यथापूर्व चल रही है, परिणाम है। इतिहास साक्षी है कि अंग्रेजों की इस शिक्षा नीति का वास्तविक उद्देश्य अपना शासन सुचारु रूप से चलाना तथा भारत की जनता को ईसाई धर्म से प्रभावित करना था। पिछली शताब्दी की ब्रिटिश सत्ता ने भारतीयों में धर्म के प्रति उपेक्षा की भावना पैदा की है।

इस उपेक्षा ने हिन्दुस्थान के दो भागों में बांट दिया है। एक ओर सामान्य भारतीय या हिन्दू हैं, जो परम्परा से मिले धर्म से व्यावहारिक जीवन तक सब-कुछ ज्यों का त्यों अपनाए हुए हैं और दूसरी ओर वे लोग हैं जो शासन और शक्ति से सम्पन्न हैं, लेकिन अपनी परम्परा की कोई जानकारी उन्हें नहीं है, और न ही उस पर उनकी आस्था है।

लोकतन्त्र और समाजवाद के जिन मूल्यों का आज ढिंढोरा पीटा जाता है, वे देश को चलाने का एकमात्र महामन्त्र दौलत बढ़ाना ही मानते हैं। परिणामतः आम आदमी की आवश्यकता पूर्ति के साधन घटते जा रहे हैं। बेरोजगारी और असमानता बढ़ती जा रही है। संगच्छध्वं संवदध्वम् की वैदिक मान्यताएं हमारे समाज के कर्णधारों के जीवन से जुदा होती जा रही है। वे इस तथ्य को भुलाते जा रहे हैं कि कोई सभ्यता धन-वैभव बढ़ाने के अभियान के सहारे ही नहीं चल पाती। उसे अपने लोगों के भौतिक सम्बन्धों के लिए एक आध्यात्मिक

आधार भी खोजना पड़ता है। एक समाज के रूप में रहने के लिए परस्पर स्वार्थों की भी एक सामुदायिक दृष्टि आवश्यकता होती है। वैदिक धर्म और उसके अन्तर्गत आने वाले सभी सम्प्रदायों ने इस की खोज की है।

पिछली सदी में ईसाई तत्ववेत्ताओं द्वारा यही आरोप लगाया जाता रहा है कि हिन्दुओं के अनेक देवी-देवता हैं लेकिन ऐसा ईश्वर नहीं है जिसने समूची सृष्टि की रचना की है। जो उसका स्वामी और शासक हो। उनका यह भी कहना है कि हिन्दुओं का न कोई एक शास्त्र है और न कोई एक मसीहा है। आज भी अनेक अंग्रेजीदां हिन्दू इस प्रचार का शिकार होकर धर्म के प्रति शंकाओं से भरे रहते हैं।

ये लोग इस तथ्य को भूल जाते हैं कि वैदिक धर्म और हिन्दुत्व की ही यह विशेषता है कि उसने सृष्टि और ईश्वर को अलग नहीं किया तथा मनुष्य की स्वतन्त्रता के साथ कोई समझौता नहीं किया। हमारी धार्मिक परम्परा ऐसे लोगों की देन है, जिन्होंने अपने युग के हिसाब से धर्म की नये सिरे से व्याख्या कर आध्यात्मिकता की लहर को प्रवाहित किए रखा है।

समाज और धर्म संस्थाओं का एक दूसरे पर से नियन्त्रण हो समाप्त होना वर्तमान दुरवस्था का मूल कारण है। अत एव आवश्यकता इस बात की है कि धर्म संसद् जैसा मंच इस दिशा में कोई हो एकदम उठाए।

—राकेशरानी

महात्मा वेद भिक्षु की अमरवाणी

क्या हिन्दू फिर विश्व विजयी बनेगा ?

यह प्रश्न है। इसे हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि क्या आर्यों (हिन्दुओं) का चक्रवर्ती साम्राज्य फिर से धरती पर स्थापित होगा ? जब हम हिन्दुओं (आर्यों) के चक्रवर्ती राज्य की बात करते हैं तो हमारे मस्तिष्क में गूंजती है प्रभु की वाणी—

वयं जयेम —हम जीतेंगे।
कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्—संसार को आर्य बनाओ।
वयं साम्राज्यवादिन:—हम साम्राज्यवादी हैं।

ये तीन उद्घोषणाएं भारत के प्राचीन आर्यों की मन:स्थिति को स्पष्ट करती हैं। आज का हिन्दू जो वस्तुत: प्राचीन आर्य पुरुषों का उत्तराधिकारी है, इन तीनों बातों को विस्मृत कर चुका है। आज आवश्यकता है कि प्रत्येक हिन्दू इन तीनों बातों का सार तत्त्व समझे और झूठे व सर्वनाशकारी नारों से बचे।

प्रथम बात है विजय की ! आर्य (हिन्दू) कभी हारता नहीं। हारने का अपराध उसने कभी किया ही नहीं। यह इसलिए कि वह सत्य के मार्ग का पथिक है। वह युद्ध-संघर्ष निजी स्वार्थ के लिए नहीं करता, वह सत्य की रक्षा के लिए ही अस्त्र-शस्त्र उठाता है। और जहां सत्य वहां जय ! सत्य कभी हारता नहीं। हार ही नहीं सकता।

हमारा चिन्तन शांति-प्रेम-एकता पर आधारित है। हम 'जीओ और जीने दो' के दर्शन पर विश्वास करते हैं। किन्तु यदि कोई स्वार्थी, आसुरी भावों से प्रेरणा प्राप्त कर शांतिप्रिय लोगों की शांति भंग कर उन पवित्र कल्याणकारी कार्यों में विघ्न उपस्थित करता है तब हिन्दू (आर्य) संघर्ष करता है और उस संघर्ष में विजय उसके चरण चूमती है।

आदि सृष्टि से ५००० वर्ष पूर्व तक हमने सत्य की ध्वजा को संभाल—धरती पर हमारा एकछत्र राज्य रहा। जिस आततायी ने भी सिर उठाया, उसे

(शेष पृष्ठ १४ पर)

पंडिता राकेशरानी धर्म संसद् के अधिवेशन में

(हमारे कार्यालय संवाददाता से)

नई दिल्ली। सात और आठ अप्रैल को विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा धर्म संसद् का अधिवेशन आयोजित हुआ। परिषद् के नेताओं का विचार है कि राजनैतिक दलों ने देश की हालत इतनी बिगाड़ दी है कि साधु-महात्मा ही उसे ठीक कर सकते हैं। इस अधिवेशन में प्राधान्य साधु-महात्माओं का ही था। स्वामी चिन्मयानन्दजी ने प्रथम दिन के खुले अधिवेशन में इस आशय के विचार प्रकट भी किए। प्रथम दिन ही खुले अधिवेशन के पूर्व प्रात:काल प्रस्तावों पर विचार करने के लिए लगभग आध दर्शन उपसमितियों की बैठकें हुई। मुख्य उपसमिति की बैठक मावलंकर हॉल के मंच पर हुई। दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष और जन-ज्ञान की सम्पादक पंडिता राकेशरानी इस बैठक में आमन्त्रित थीं। राकेशरानी जी ने कहा कि "आपके एक प्रस्ताव में कहा गया है कि हिन्दू समाज में चेतना जाग्रत की जाये। इस प्रस्ताव को क्रियात्मक रूप देने के लिए हमने जन-ज्ञान के माध्यम से ईसाई-मुस्लिम षड्यन्त्रों का भंडाफोड़ किया और हिन्दू समाज को विदेशी खतरों के प्रति सावधान किया। इस पर हमारी सरकार ने हम पर २८ मुकद्दमे दायर किए। पिछले ही महीने मुझे एक मुकद्दमे के सिलसिले में मलकापुर (महाराष्ट्र) की अदालत में पेश होना पड़ा, क्योंकि पिछले वर्ष नांदुरा (महाराष्ट्र) की एक सार्वजनिक सभा में मेरे और स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षु जी के भाषणों को आपत्तिजनक ठहराया गया है। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप खुले अधिवेशन में ऐसे मामले को अवश्य उठाएं।" राकेशरानीजी ने बैठक के संयोजक श्री देवददत्त के माध्यम से अपनी मांग स्वामी विजयानन्द, परिषद् के महामन्त्री श्री हरमोहन लाल और गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ तक भी पहुंचाई। अन्य अनेक प्रतिष्ठित सज्जनों से भी यह अनुरोध किया, लेकिन किसी ने भी यह प्रश्न उठाने की आवश्यकता न समझी।
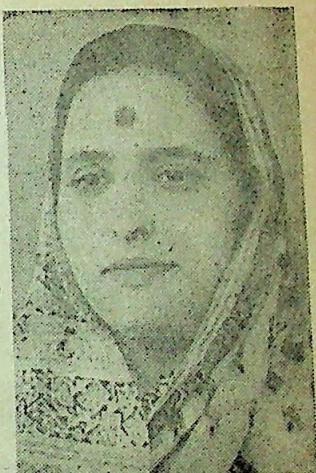
सामयिक विचार

—सत्यपाल शास्त्री

पंजाब की बिगड़ती स्थिति

पंजाब की स्थिति दिन प्रतिदिन विषम से विषमतर होती जा रही है। आज जब ये पंक्तियां लिखी जा रही हैं, १८ अप्रैल है और आज के टाइम्स ऑफ इण्डिया का मुख्य शीर्षक है —पंजाब में उग्रवादियों ने अपनी गतिविधियां तेज कर दीं। सब कुछ देखकर भी भारत सरकार यही कहे जा रही है कि वह अपराधियों को पकड़ने केलिए पुलिस को अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में प्रविष्ट होने की अनुमति न देगी। सरकार का यह रुख किसी भी समझदार व्यक्ति की समझ में नहीं आ रहा। आखिर अभी कितना रक्त-पात और होगा, जब सरकार स्वर्ण मन्दिर में छिपे अपराधियों को पकड़ेगी। अकाली नेता इस बात से इन्कार करते आये हैं कि अपराधियों ने स्वर्ण मन्दिर में शरण ले रखी है या वहां हथियार जमा किये गये हैं। लेकिन वैशाखी के बाद स्वर्ण मन्दिर में जो घटताएं हुई हैं उनसे अकालियों के दावे झूठे सिद्ध हो जाते हैं। वैशाखी के मेले के अवसर पर लोंगोवाल और भिंडरांवाले के प्रमुख समर्थकों ने एक-दूसरे पर गम्भीर आरोप लगाये। अगले ही दिन स्वर्ण मन्दिर परिसर के ठीक सामने भिंडरांवाले के एक प्रमुख समर्थक सुरिन्दर सिंह सोढी की हत्या कर दी गयी, उसी दिन सोढी के एक साथी का शव मिला। १५ अप्रैल की रात को अमृतसर और जालंधर के मध्य में स्थित मानावाला नामक स्थान पर सोढी के हत्यारे सुरेन्द्रछिन्दा की हत्या कर दी गई। सोढी की हत्या में सहयोगी बलजीत कौर की हत्या करके उसके शव के टुकड़े-टुकड़े कर दिए गये।सोढी और भिंडरवाले की हत्या के लिए छिन्दा को दो लाख रुपये दिये गये। यह सब हुआ, लेकिन फिर भी गृहमन्त्री प्रकाशचन्द सेठी लोक सभा में कहते रहे कि पुलिस स्वर्णमन्दिर में प्रविष्ट न होगी। आखिर यह हो क्या रहा और यह स्थिति कब तक चलेगी ? क्या स्वर्ण मन्दिर पर सरकारी कानून लागू नहीं होते ? चौधरी चरण सिंह ने पिछले वर्ष लोक सभा में कहा था कि "यह क्या बात हुई कि कोई अपराधी अपराध करके स्वर्ण मन्दिर में प्रविष्ट हो जाये और पुलिस उसे गिरफ्तार न करे।" पंजाब में निर्दोष हिन्दुओं की हत्याएं हो रही हैं और इन्दिरा सरकार हरकत में नहीं आ रही। खुल्लम-खुल्ला आरोप लगाए जाते हैं कि हत्याओं और लूटमार का यह सारा खेल इन्दिरा कांग्रेस का

रचा हुआ है, फिर भी इन्दिरा जी इस ओर ध्यान देने की बजाय उलटे विपक्ष पर दोषारोपण करके अपना और जनता का समय नष्ट कर रही हैं और अखबारों की कीमती जगह खराब कर रही हैं। आखिर उनका उनका इरादा क्या है ? क्या वे इस विषम स्थिति की आड़ लेकर राष्ट्रपतीय शासन प्रणाली लागू करना चाहती हैं या राजीव गांधी को प्रधानमन्त्री बनाकर स्वयं राष्ट्रपति बनना चाहती हैं ? पंजाब की घटनाओं से आम आदमी का दिल दहल जाता है, लेकिन इन्दिराजी इस बात की भी आवश्यकता नहीं समझतीं कि जब संसद् में पंजाब की स्थिति पर विचार हो, तब कम से कम सदन में उपस्थित तो हों। स्वामी अग्निवेश जी नें प्रधानमन्त्री से एक चुभता हुआ प्रश्न किया है कि "यदि उग्रवादी राजीव गांधी की हत्या करके (परमात्मा ने करे कि ऐसा हो) स्वर्ण मन्दिर में प्रविष्ट हो जाएं, तो क्या तब भी हत्यारों को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस को स्वर्ण मन्दिर में न जाने दिया जाएगा ?" इस प्रश्न का उत्तर मिलना चाहिए। इस समय तो हालत यह है कि देश में दो सरकारें चल रही हैं—नई दिल्ली में इन्दिरा जी की और स्वर्णमन्दिर में लोंगोवाल और भिंडरांवाले की। क्या इस स्थिति को देखकर इन्दिरा जी की आत्मा विद्रोह नहीं करती ? पंजाब में शासन नाम की कोई चीज रह ही नहीं गई। अप्रैल में ही पंजाब में तीन प्रमुख नेताओं की हत्या की गई। अमृतसर में हरबंसलाल खन्ना की और चण्डीगढ़ में संसद् सदस्य डा० विश्वनाथ तिवारी व हिन्दू सुरक्षा समिति की चण्डीगढ़ शाखा के अध्यक्ष इन्द्रपाल गुप्त की। इससे पूर्व २८ मार्च को नई दिल्ली के भीड़-भाड़ वाले क्षेत्र तिलक मार्ग पर दिन दहाड़े हरबंससिंह मनचन्दा की हत्या की गई। मनचन्दा का अंगरक्षक हत्यारों का बाल भी बांका न कर सका। अब वह (अंगरक्षक) मुअत्तल है। यह इस बात का संकेत है कि उसने अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं किया। पिछले दिनों श्री के० नरेन्द्र ने 'वीर अर्जुन' में लिखा था कि "पंजाब के ८० प्रतिशत पुलिस कर्मचारी सिख हैं। उनकी सहानुभूति उग्रवादियों के साथ है और वे हत्याएं होती देखकर भी उनकी अनदेखी करते हैं। इन्दिरा जी ने यह कहकर जनता के वोट लिये थे कि "वोट उन्हें दें, जो काम करें।" क्या इन्दिरा सरकार के काम करने की यही शैली है ? संसद् में आए दिन पंजाब की स्थिति पर बहसें होती हैं, लेकिन नतीजा वही ढाक के तीन पात। गृहमन्त्री की घोषणाओं में कोई नई बात नहीं होती और संसदीय कार्यमन्त्री बूटासिंह की कोशिश यह रहती है कि कोई न कोई तकनीकी मुद्दा उठाकर बहस को टाल दिया जाए।

इस स्तम्भ में हम कई बार लिख चुके हैं कि अपराधियों को पकड़ने के लिए पुलिस को स्वर्ण मन्दिर में प्रवेश की अनुमति मिलनी चाहिए। सी० आर० पी०

एफ० को स्वर्ण मन्दिर के इर्दगिर्द तैनात करने से बात नहीं बनेगी, क्योंकि जैसा समाचार पत्रों में छप भी चुका है, उग्रवारी सुरंगों के रास्ते स्वर्णमन्दिर में प्रविष्ट हो जाते हैं। 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में चांद जोशी ने लिखा है कि उग्रवादियों द्वारा इस्तेमाल किये जा रहे हथियारों पर विदेशी चिह्न हैं। पाकिस्तान सरकार के प्रतिवाद के बावजूद यह धारणा जोर पकड़ती जा रही है कि पाकिस्तान उग्रवादियों को हथियार सप्लाई कर रहा है और सिखों के वेश में पाकिस्तानी मुसलमान हिंसात्मक कार्रवाइयां कर रहे हैं। बड़े-बड़े नेताओं की हत्या के लिए करोड़ों डालरों की लेन-देन के भी समाचार हैं। सन् १९४७ वाले हालात पैदा हो रहे हैं। सरकार को चाहिए कि या तो वह अकाली दल से राजनैतिक समझौता करे या उसके आन्दोलन के दमन के लिए पुलिस को स्वर्णमन्दिर में प्रवेश की अनुमति दे।

(पृष्ठ १० का शेष)

कुचल दिया गया और हम शान्ति की रक्षा पूरी शक्ति से करते रहे। किन्तु पिछले ५००० वर्षों में हमने अपनी शान, आन और ज्ञान को भुला दिया। धीरे-धीरे हम अपना स्वरूप समाप्त करते गए। उदात्त भावनाएं विस्मृत कर हम अपने को दुर्बल-दीन समझ हीन भावना से ग्रस्त हो गए।

हमारी इच्छा है कि हिन्दुओं के मन में फिर से विश्वविजय की भावना जागे। चक्रवर्ती साम्राज्य भूमंडल में हिन्दुओं का आर्यों का हो, यह कामना मन में उभरे और इसका आरम्भ हम अपने देश भारत में धर्म राज्य की स्थापना का व्रत लेकर करे। हम धर्मनिरपेक्ष नहीं, धर्म राज्य के लिए यत्नशील हों। ऐसा धर्म जिसका विरोधी कोई भी न हो सके।

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिए

क्र.	पुस्तक	मूल्य
१.	चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	६० पैसे
२.	भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षु :	५० पैसे
३.	क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	५० पैसे
४.	हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु :	५० पैसे
५.	मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	५ रु०
६.	हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	५० पैसे
७.	पोस्टर : दो प्रकार के	८० पैसे
८.	इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी	५० पैसे
९.	शुद्धि का मंत्र—कुंवर चांदकरण शारदा	८० पैसे
१०.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी	५० पैसे
११.	हिन्दू जागो ! देश बचाओ !	५० पैसे
१२.	इस्लाम—एक परिचय	५० पैसे
१३.	Bible in the Balance	६० पैसे
१४.	A Challenge to the Christian Faith	२५ पैसे
१५.	पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु :	५० पैसे
१६.	पादरियों को चुनौती	५० पैसे
१७.	बाइबिल को चुनौती—ओम्प्रकाश त्यागी	५० पैसे
१८.	क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	५० पैसे
१९.	...और पादरी भाग गया	५० पैसे
२०.	Christianity Unmasked	१.०० पैसे
२१.	The Clarion Call	४० पैसे
२२.	जन-ज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक	६ रु०
२३.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ?	५० पैसे
२४.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा ?	५० पैसे
२५.	तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	६० पैसे
२६.	जन-ज्ञान का महान् हिन्दू विशेषांक	६)
२७.	हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का सन्देश	५० पैसे

१००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत और
५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन ।
प्रत्येक आदेश के साथ १/४ धन अगाऊ भेजें ।

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

पंजाब में हत्याओं का सिलसिला बन्द करवाइये :

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह के नाम खुला प

महोदय,

पंजाब हिन्दू सुरक्षा समिति की चण्डीगढ़ शाखा के अध्यक्ष इन्द्रपाल जी गुप की अपनी दूकान पर दिन दहाड़े हत्या, ३ अप्रैल को राज्य सभा के सदस्य डा बी० एन० तिवारी की गोली मार की गई हत्या के बाद ऐसा दूसर हमला है, जो हिन्दूसमाज की आशंकाओं को पुष्ट करता है। पंजाब के सीमां गांवों से भयाक्रांत हिन्दू परिवार देश-विभाजन के बाद शरणार्थियों की तर भाग रहे हैं। सारा कारोबार ठप्प है। कोई नहीं जानता कि दूकान पर आय व्यक्ति ग्राहक है या उग्रवादी हत्यारा! लोग मकान, दूकान आदि स्थाव सम्पत्तियां और पालतू पशु बेचकर उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि सुरक्षित प्रदेश को भाग रहे हैं। ऐसी स्थिति में बिना सरकारी संरक्षण के जनता या हिन् सुरक्षा समिति इस रक्तपात और खुले हत्याकाण्ड से नागरिकों की रक्षा औ जन सेवा की दिशा में क्या कर सकती है ? हथगोले फेंकने, अन्धाधुन्ध फायरि तथा इस कत्लेआम को रोकने की जिम्मेदार सरकार का क्या कर्त्तव्य है ? य आज का एक जलता हुआ प्रश्न है। कल क्या होने वाला है, कोई नहीं जानता आपसे अपील है कि आप देश के बहुसंख्यक हिन्दुओं की रक्षा के लि कोई कारगर उपाय करें, जिससे उनकी और उनके बाल-बच्चों तथा नौजवान की रक्षा की जा सके। क्योंकि वे ही सरकार के प्रधान संचालक और श्रंग रक्षक हैं।

दयानन्द कालेज
अजमेर

विनीत
धर्मवी

सम्पादक, मुद्रक व प्रकाशक—पंडिता राकेशरानी द्वारा जन-ज्ञान मुद्रणालय दिल्ली-३६ में छपा।

मेरी महाराष्ट्र यात्रा

मलकापुर (महाराष्ट्र) की अदालत में पेशी के लिए मुझे पिछले महीने वहां जाना पड़ा। (इसकी संक्षिप्त रपट आप पिछले अंक में पढ़ चुके हैं।) मैं २७ मार्च की रात को अपने दामाद राकेश भार्गव के साथ रवाना हुई। ग्वालियर, झांसी, विदिशा, भोपाल आदि रेल स्टेशनों को पार करती हुई हमारी रेलगाड़ी समय से चार घण्टे लेट सुबह आठ बजे भुसावल रेलवे स्टेशन पर पहुंची। रेलवे स्टेशन पर भाई चन्द्रशेखर गाडगील तथा डा· कुलकर्णी एडवोकेट बुन्देले तथा अन्य बंधुओं के साथ उपस्थित थे। वहां से हम जीप पर मलकापुर रवाना हुए। मलकापुर में हमारे आगमन पर हमारा परिचय वहां उपस्थित उस समय लगभग दर्जन-भर वकीलों से हुआ जिनमें सर्व श्री जैन, और रावत के नाम उल्लेखनीय हैं। नाश्ता वगैरह कर हम अदालत में पेश हुए, जहां हमारी व्यक्तिगत जमानत लेकर हमें रिहा कर दिया गया। बाद में रावत जी के पिताजी के दर्शन करके बहुत प्रसन्ता हुई। वे हिन्दू सभा के कार्यकर्त्ता हैं।" वहां से हम शेगांव गए और वहां हमने गजानन मन्दिर में प्रसाद ग्रहण किया। वहां से नांदुरा होते हुए हम अकोला रवाना हुए। वहां भी हमारा हिन्दू सेना के कार्यकर्त्ताओं से परिचय हुआ, चन्द्रशेखर गाडगील के घर भोजन किया। अगले दिन सुबह ६ बजे हम नागपुर पहुंचे। वहां श्री गाडगील जी ने अपने द्वारा संचालित स्कूल, व्यायामशालाएं आदि दिखलाईं। वहां वन्देमातरम् का स्वर गूंजता देखकर हमारा चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। इन स्कूलों में भारतीयता, आधुनिकता, धार्मिकता और सैनिक प्रशिक्षण का समावेश है। यदि भारत के सभी स्कूलों में ऐसी शिक्षा प्रणाली चालू हो जाए तो भारत की अनेक समस्याएं अपना समाधान पा जायेंगी।

इस यात्रा में मुझे श्री गाडगील और डॉ० कुलकर्णी का विशेष सहयोग मिला। इसके लिए मैं आभारी तो हूं, पर रस्मी धन्यवाद देकर उन्हें शर्मिन्दा नहीं करूंगा। उन्होंने जो कुछ किया, इस काम को अपना काम समझकर और मुझे अपनी बहन समझकर किया।

नागपुर से हम नई दिल्ली रवाना हुए और दो अप्रैल को सुबह सकुशल यहां पहुंच गये।

—राकेशरानी

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान वी नां।
पंज तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां॥
जगत भिखारी फिरत है सबको दाता राम।
कहु नानक मन सिमर तिह पूरन होवहि काम॥
चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होय।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहि कोय॥
जो उपजियो सो बिनस है परो काल के गाल।
नानक हर गुन गाय ले छांड़ सकल जंजाल॥
राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार।
कह नानक थिर कछु नहिं सुपने जियुं संसार॥
झूठ बखान कहा करे जग सुपने जियुं जात।
इनमें कछु तेरो नहिं नानक कहियो बखान॥
बिरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की।
लोभ ग्रसयो दसहु दिस धावत आस लगयो धन की॥
संग सखा सब तज गए कोऊ न निबाहियो साथ।
कह नानक एह विपत में टेक एक रघुनाथ॥

—श्री गुरु नानकदेव जी

जो हमको हरमेस उचरि है।
ते सब नरक कुंड महिं परि है॥

दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज

देव जी

हाराज

०६

टी०

घाट-

सामने,

रोड;

राम जन्मस्थान की वापसी के लिए संघर्ष की गौरव-गाथा

—प्रतापनारायण मिश्र

करोड़ों हिन्दुओं के आराध्य देवता राम स्वतन्त्र भारत में भी सरकारी ताले में कैद हैं। क्या यह आश्चर्य नहीं है? देश के कोने-कोने से श्रद्धालु जन उमंग-उल्लास के साथ 'रामजन्मभूमि" के दर्शन के लिए अयोध्या आते हैं पर सलाखों में बन्द प्रतिमा को दूर से ही प्रणाम कर भारी मन से लौटते हैं—हृदय में एक भारी वेदना लेकर। प्राचीन जन्मस्थान के विवाद को लेकर १६ जनवरी १९५० से अदालत में मुकद्दमा चल रहा है।

युगों-युगों से प्रतिवर्ष चैत्र रामनवमी को मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म-दिवस देश मनाता चला आ रहा है। ग्राम-नगर की वीथिकाएं दीपमालिकाओं से झिलमिला उठती हैं। घर-घर में झांकियां सजती हैं। भारत का कण-कण राम नाम की धुन से गूंज उठता है। हिन्दू समाज पर न मालूम कितने बर्बर आक्रमण हुए। विदेशी हमलावरों ने राम को और उनकी स्मृति को कोटि-कोटि अन्तः-करणों से निकालने के लिए एड़ी से चोटी तक का जोर लगाया। किन्तु रोम-रोम में रमे राम को वे आज तक न निकाल सके। कैसी विडम्बना है कि सहस्रों वर्षों पुराने उन्हीं राम के "जन्मस्थान" पर आज भी खड़ी है बाबरी मस्जिद? बहुत लम्बी कहानी है अयोध्या राम के जन्मस्थान की।

विध्वंस कथा—सन् १५२६ में बाबर अपनी प्रथम मुठभेड़ में चित्तौड़ के राणा सांगा से पराजित हुआ। उसने भागकर अयोध्या के पास सेरवा और घाघरा नदी के संगम पर अपना पड़ाव डाला। उसने वहीं पर रहने वाले मुसल-मान फकीर जलालशाह की शरण ली। पराजय ने उसके मन में घोर निराशा भर दी थी। जलालशाह और ख्वाजा कजल अब्बास कलन्दर ने राम जन्मस्थान मन्दिर को तोड़कर उसे मस्जिद बनाने का बाबर को परामर्श दिया। पहले तो वह हिचकिचाया। दोनों फकीरों की हिदायत थी कि "हिन्दुओं के इस पवित्र मन्दिर को तोड़ने से ही इस्लाम की जड़ें हिन्दुस्थान में मजबूत होंगी।" उनकी यह बात उसके सिर चढ़ गई। विजित देशों के समाज पर विजेता अपनी धाक

का सिक्का जमाने और उनमें हीनता का भाव उत्पन्न करने के लिये वहां के श्रद्धास्थानों एवं मानबिंदुओं को उद्ध्वस्त करता आया है। संसार में जहां-जहां इस्लाम गया, उसने यही किया है। इतिहास इसका साक्षी है। बाबर अपने वजीर मीर बकी खां ताशकंदी खां को यह काम सौंपकर दिल्ली चला गया।

सन् १५२८ में मीर बंकी खां के नेतृत्व में मुगल सेना "राम जन्मस्थान" पर टूट पड़ी। किन्तु उसे भूमिसात् करने में उन्हें लोहे के चने चबाने पड़े। हमले का समाचार चारों ओर आग के समान फैल गया। दूर-दूर से हिन्दुओं के सशस्त्र जत्थे अयोध्या की ओर बढ़ चले। कई दिन तक विकट संग्राम हुआ। अंग्रेज इतिहासकार कनिंघम ने इस हमले को इस प्रकार प्रस्तुत किया है— "जन्मभूमि मन्दिर को गिराने के समय हिन्दुओं ने अपनी जान की बाजी लगा दी थी। एक लाख चौहत्तर हजार हिन्दुओं की लाशें गिरने के बाद ही मीर बंकी खां तोप से मन्दिर गिराने में सफल हो सका था।" (लखनऊ गजेटियर का ३६वां ग्रंक, पृष्ठ ३) हैमिस्टन बाराबंकी जिले के गजेटियर में तो यहां तक लिखता है कि "जलालशाह ने हिन्दुओं के खून का गारा बनाकर मस्जिद की नींव बनवाने के लिए लाखौरी ईंटें दी थीं।" बाबर स्वयं अपने आत्मचरित में लिखता है— "हजरत कल अब्बास मूला आशिकन कलन्दर साहब की इजाजत से जन्मभूमि को मिस्मार करके मैंने उसी के मसाले से उसी जगह पर मस्जिद तामीर की।" (बाबरनामा पृष्ठ १७३)

उक्त युद्ध में हिन्दू सेनाओं का नेतृत्व महान् बलिदानी महताब सिंह ने किया था। ये फैजाबाद जिले के भीटी रियासत के राजा थे। हसबर के राजा रणविजय सिंह, मकरही के राजा संग्राम सिंह आदि भी इस युद्ध में बलिदान हुए थे। मीर बकी ने जब राम जन्मभूमि पर आक्रमण किया, उस समय महताबसिंह तीर्थयात्रा पर निकले थे। जन्मभूमि की रक्षा के लिए इस नरपुंगव ने तीर्थयात्रा को युद्ध यात्रा में बदल दिया। बात-बात में हजारों हिन्दू एकत्र हो गए। महताब सिंह आदि लाखों हिंदुओं का जीवन उत्सर्ग इस बात का ज्वलंत प्रमाण है कि मानबिन्दुओं की रक्षा के लिए ध्येयवादी कैसा बलिदान करता है? काफी संघर्ष के बाद ही मीर बंकी खां तोप से मन्दिर को उड़ा सका था।

बाबरी मस्जिद कैसी बनी?—६ जुलाई सन् १९२४ ई० के माडर्न रिव्यू में ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में फारसी लिपि में एक शाही फरमान छपा था, जिसके नीचे बाबर के शासनकाल की शाही मुहर अंकित थी। वह इस प्रकार है "शहंशाहे हिन्द मलिकुल जहां बादशाह बाबर के हुक्म से हजरत जलालशाह के हुक्म के बमूजिब अयोध्या में "श्री राम की जन्मभूमि" गिराकर उसकी जगह उसी मसाले से मस्जिद तामीर करने की

इजाजत दे दी गई है। बजरिये इस हुक्मनामे के तुमको बतौर इत्तिला के आगाह किया जाता है कि हिन्दुथान के किसी भी गैर [illegible] हिन्दू अयोध्या न जाने पावे। जिस शख्स पर शुबह हो उसे फौरन गिरफ्तार करके दाखिले कैदखाना कर दिया जाए। हुक्म की सख्ती से तामील हो, फर्ज समझकर। (शाही मुहर)

शाही फरमान के पश्चात् श्री मन्दिर के मलबे पर मस्जिद खड़ी करने में उनको जान के लाले पड़ गए। बलिदानियों का तांता लगा रहा। दिन भर मस्जिद बनती और रात्रि में दीवारें ढह जातीं। अनेकों दन्तकथाएं चल पड़ीं कि "हनुमान् जी के चमत्कार से दीवारें धराशायी हो जाती थीं।" सत्य बात यह है कि हिन्दू छापामार जत्थे आते और उन्हें तोड़कर न जाने किधर गायब हो जाते। मुगल हाकिम परेशान हो गए।

हिन्दुओं के अयोध्या प्रदेश पर पाबन्दी के बावजूद मस्जिद खड़ी न हो सकी। इसी पर जलालशाह ने बाबर को चिट्ठी लिखवाई कि वह आए। तत्पश्चात् बाबर स्वयं आया और हिन्दू महात्माओं से परामर्श किया। द्वार पर मुड़िया और फारसी भाषा में "सीता पाक स्थान" लिखवा दिया गया। मुसलमानों को केवल शुक्र के दिन नमाज पढ़ने की और हिन्दुओं को मस्जिद के भीतर निरन्तर पूजा पाठ करने की अनुमति प्रदान कर दी गई। उसके साथ ही चन्दन की लकड़ी लगाकर मस्जिद के द्वार में भी परिवर्तन किया गया। तात्पर्य यह कि उसका स्वरूप मस्जिद का बन पाए, ऐसा उसमें बदल किया गया।

बाबर लिखता है कि "मीर बंकी ने मेरे पास खत लिखा कि अयोध्या की राम जन्मभूमि को मिस्मार करके जो मस्जिद तामीर की जा रही है, उसकी दीवारें अपने आप गिर पड़ती हैं। दिन-भर में जितनी दीवार तामीर होती है, शाम को वह अपने आप गिर जाती है। इस पर मैंने खुद वहां जाकर सारी बातें अपनी आंखों से देखकर हिन्दू औलिया फकीरों को बुलाकर मसला उनके सामने रखा। कई दिन तक गौर के बाद उन्होंने मस्जिद में मुझे चन्द तरमीमें करने की राय दी। पांच शर्तें रखी गईं। यानी मस्जिद का नाम "सीता पाक" रखा जाए। पीछे की ओर परिक्रमा का रास्ता बनाया जाए। सदर गुम्बद के दरवाजों में लकड़ी बराई और मीनारें गिरा दी जायें। हिन्दू महात्माओं को इबादत करने दी जाए। उनकी राय मैंने मान ली तब मस्जिद तैयार हो सकी।" (तुजकेबाबरी, पृष्ठ ५२३)

प्रमाण क्या कहते हैं?—बाबरी मस्जिद में "सीता पाक स्थान" अंकित, मीनार रहित गुम्बज और परिक्रमा मार्ग आज भी देखा जा सकता है जबकि

मस्जिदों में लकड़ी के दरवाजे नहीं लगाए जाते। इसके बावजूद चंदन के लकड़ी के दरवाजे वहां विद्यमान हैं। प्राचीन कसौटी के ८४ खम्भों में १ बाबरी मस्जिद में, दो बाहर फाटक पर और ६ फजल अब्बास की कब्र (जिसकी प्रेरणा से मन्दिर तोड़ा गया था) लगे हुए हैं। शेष लखनऊ, फैजाबाद और लन्दन के संग्रहालयों में रखे हैं। लोमश रामायण में इन ८४ खम्भ का उल्लेख किया गया है। सभी में हनुमान् की मूर्त्तियां आज भी अंकित हैं। सभी अकाट्य तथ्य ऐसे हैं जो यह प्रमाणित करते हैं कि "राम जन्मस्थान" क भूमिसात् कर उसी के मलबे से उसी स्थान पर बाबर ने मस्जिद बनवाई थी।

अकबर का हुक्मनामा—राम जन्मस्थान पर बाबरी मस्जिद को लेक आगे भी हिन्दू जनता संघर्ष करती रही। हुमायूं के समय सिरसिण्डा, राजपु आदि ग्रामों के सूर्यवंशी क्षत्रियों ने संगठित होकर धावा बोल दिया शाही छावनियों को काट डाला। मस्जिद का अगला द्वार तोड़-फोड़कर नष्ट क दिया गया। १५३० में इन युद्धों में स्वामी महेश्वरानन्द संन्यासी और हंसव रियासत की रानी जयराज कुमारी ने शस्त्र उठाए थे ताकि मुगलों से "जन्म भूमि" मुक्त कराई जा सके। जयकुमारी ने तीन हजार सशस्त्र महिलाओं क लेकर शत्रुओं के होश ठिकाने लगा मन्दिर को पुनः अपने अधिकार में क लिया था। मुगलों की शाही कुमक सहायता को आई। लड़ते-लड़ते रानी जय कुमारी "जन्मभूमि" पर शहीद हो गई। अनेक लोग मारे गए। उसी सम क्षेत्रीय जनता ने शपथ ली कि "जब तक राम जन्मभूमि मुक्त नहीं कर लेते, त तक सिर पर न पगड़ी बांधेंगे और न ही छाता लगायेंगे। जूते भी नहीं पहनेंगे इस कठोर प्रतिज्ञा का अब तक उनके वंशज निर्वाह करते चले आ रहे हैं।

अकबर के कार्यकाल में उन्होंने पुनः संगठित रूप से जन्मभूमि पर आक्रम किया। कई छापामार लड़ाइयां हुई। शाही सेना को भगाकर मस्जिद के साम एक चबूतरा बना लिया गया। परेशान हो अकबर ने टोडरमल और बीरब की सलाह पर इसी चबूतरे पर भगवान् की प्रतिमा स्थापित करने की आज्ञ प्रदान कर युद्धविराम किया। दीवाने अकबरी में लिखा है —"जन्मभूमि क वापिस लेने के लिए हिन्दुओं ने २० हमले किए। अपनी हिन्दू रिआया की दिल शिकनी न हो इसलिए शहंशाहे हिंद जलालुद्दीन अकबर ने बीरबल और टोडरम की राय से उन्हें बाबरी मस्जिद के सामने एक चबूतरा बनाकर उस पर ए छोटा-सा राम मन्दिर तामीर कर लेने की इजाजत बख्श दी और हुक्म किय गया कि कोई शख्स उनके पूजा-पाठ में किसी तरह की रोक-टोक न करे।" (दीवाने अकबरी से)

गुरु गोविन्द और वैष्णवदास द्वारा पुनर्मुक्ति—अकबर के बाद जहांगीर, शाहजहां और अवध के नवाबों की ओर से राम जन्मभूमि के विरुद्ध कोई विशेष छेड़छाड़ नहीं की गई। बावरी मस्जिद के बगल में सीता रसोई तथा अन्य हिन्दू उपासना मन्दिर हिन्दुओं के अधिकार में ही बने रहे। १६४० में जब औरंगजेब गद्दी पर बैठा तो उसने राम जन्मभूमि ही नहीं, अयोध्या को ही ध्वंस कर डालने के लिए बीड़ा उठाया। समर्थ रामदास के शिष्य परशुराम मठ स्थित संन्यासी वैष्णवदास ने मुगल सिपहसालार जांबाज खां को खूब छकाया। ये उत्तर भारत में भ्रमण करते हुए अन्याय के विरुद्ध हिन्दू जनता को खड़ा करते। फैजाबाद और बाराबंकी जिलों के सूर्यवंशी क्षत्रियों और राजाओं, गृहस्थों एवं दस हजार चिमटाधारी साधुओं ने जांबाज खां के पैर उखाड़ दिए। हिंदुओं ने इस दौरान ३० बार के आक्रमणों में उन्हें शिकस्त दी थी। औरंगजेब ने चिढ़कर जांबाज खां को पदच्युत कर दिया।

औरंगजेब ने सय्यद हसन अली की अध्यक्षता में ५० हजार की मुगल सेना भेजी। गुरु गोबिंद सिंह ने भी अपने अधीनस्थ सिखों की एक जबर्दस्त सेना ले वैष्णवदास की उस युद्ध में सहायता की थी। सिखों और साधुओं तथा क्षत्रियों ने तीन दल बनाए। बाराबंकी के रुदौली, फैजाबाद के सआदतगंज और अयोध्या के जालपा नाला पर बड़ी लड़ाई हुई। शाही सेना के पैर उखड़ गए। मुगल सिपहसालार सय्यद हसन अली तमाम मुगल सैनिकों के साथ मारा गया। कुछ समय के लिए राम जन्मभूमि पुनः हिन्दुओं के अधिकार में आ गई।

औरंगजेब लिखता है—'बावरी मस्जिद के लिये काफिरों ने ३० हमले किये। सबमें लापरवाही की वजह से शाही फौज ने शिकस्त खाई। आखिरी हमला गुरु गोविन्दसिंह के साथ वैष्णवदास का हुआ। उसमें शाही फौज का सबसे ज्यादह नुक्सान हुआ। इस लड़ाई में शाहजादा मनसबदार सरदार हसन अली खां भी मारे गये।" (आलमगीरनामा पृष्ठ ६२३)

१६६४ में औरंगजेब ने पुनः जन्मभूमि पर आक्रमण किया। हिन्दू जनता ने प्रबल प्रतिरोध किया। इस युद्ध में १० हजार हिंदू शहीद हुए। औरंगजेब ने आलमगीरनामा में लिखा है—" मुतवातिर चार बरस की खामोशी के बाद रमजान की सातवीं तारीख के रोज शाही फौज ने फिर से अयोध्या में वाके जन्मभूमि पर हमला बोला। इसमें दस हजार हिन्दू हलाक हुए। उसका जो चबूतरा था और छोटा-सा बुतखाना, वे दोनों जमींदोज कर दिए गए और फिलहाल शाही फौज के कब्जे में हैं" (आलमगीरनामा पृष्ठ ६३०)

मुक्ति अभियान रुका नहीं—बहुत दिनों तक श्रद्धालु हिन्दू जन रामनवमी के दिन भक्तिभाव से चबूतरा (जो अब गड्ढे की शक्ल में हो गया था) पर

जल-अक्षत चढ़ाते रहे। इधर लखनऊ में नवाबी शासन का उदय हुआ। नवाब अली के काल में हिंदुओं ने फिर जन्मभूमि की मुक्ति के लिए आक्रमण किया। पर सफलता न मिली। नवाब नासिरुद्दीन तख्तनशीं हुआ। इस समय नवाबी और शाही सेना का संयुक्त सामना हुआ। इस भयानक संग्राम में भीटी, हसवर, मकरही, खजुराहट, दियरा और अमेठी के राजागण भी सम्मिलित हुए थे। युद्ध में शाही सेना की धज्जियां उड़ गयीं। जन्मभूमि पर हिंदुओं का पुनः अधिकार हो गया।

फैजाबाद गजेटियर में कनिंघम लिखता है—"इस बार शाही सेना एक ओर खड़ी तमाशा देखती रही। यह संग्राम ऐसा भयंकर था कि वर्णन के बाहर है। दो दिन-रात के इस युद्ध में सेना पराजित हुई।" वह आगे लिखता है कि यह "सबसे बड़ा बलवा था। इस समय अयोध्या के राजा मानसिंह ने नवाब वाजिद अलीशाह से कह-सुनकर चबूतरा फिर बनवा देने की आज्ञा दिलवाई। चबूतरा बना और भगवान् की मूर्ति की स्थापना हुई।"

जब मुसलमानों ने स्वयं जन्मभूमि वापिस की—बहादुरशाह जफर सम्राट् घोषित किए गए। अंग्रेजों के विरुद्ध १८५७ का स्वाधीनता संग्राम छिड़ गया। अयोध्या एवं गोंडा के राजा देवीबख्शसिंह तथा बाबा रामचरण दास की अध्यक्षता में जनता संगठित हो गई। उस समय क्रांतिकारी मुसलमान नेता अमीर अली ने अयोध्या (फैजाबाद) के मुसलमानों का आह्वान किया कि "हिंदुओं के खुदा श्री रामचन्द्र जी की पैदाइशी जगह पर जो बाबरी मस्जिद बनी है, वह हम हिंदुओं को बखुशी सुपुर्द कर दें। क्योंकि हिंदू-मुस्लिम नाइत्तफाकी की यह सबसे बड़ी जड़ है। ऐसा करके हम इनके दिलों पर फतह पा जायेंगे।"

अमीर अली के इस प्रस्ताव का सारे मुसलमानों ने एक स्वर से समर्थन किया। अंग्रेजों में घबराहट फैल गई। हिंदू-मुस्लिम बटे रहें और परस्पर लड़ते रहें अतः वे झगड़े की जड़ को बनाये रखना चाहते थे। सुलतानपुर जिले के गजेटियर के पृष्ठ ३६ पर कर्नल मार्टिन की रिपोर्ट का अवलोकन करें—

"अयोध्या की बाबरी मस्जिद को मुसलमानों के द्वारा हिंदुओं को वापिस दिए जाने की खबर सुनकर हम लोगों (अंग्रेजों) में घबराहट फैल गई। अच्छा हुआ गदर का पासा पलट गया। अमीर अली और बलवाई बाबा रामचरण दास को फांसी पर लटका दिया गया। फैजाबाद और अयोध्या के बलवाइयों की कमर टूट गई और तमाम जिले पर हमारा रोब जम गया, क्योंकि गोंडा का राजा देवीबख्श सिंह फरार हो चुका था।"

१८ मार्च सन् १८५८ को जन्मभूमि के ही परिसर में कुबेर टीला पर स्थित

इमली
फांसी
के वृक्ष
स्मार
किया
दिया

बाबर
की इ
आरा

मारा
भेजी
मस्जि

दिन
मस्जि
दीन

तक
हुमाय
५, न
हुए

प्रया
करा
अयो
के र
पृष्ठ

होगा

वैशा

इमली के पेड़ पर बाबा रामचरणदास और अमीर अली दोनों देशभक्त शहीदों को फांसी पर लटका दिया गया। बहुत दिनों तक तीर्थयात्री उनकी स्मृति में इमली के वृक्ष पर पुष्प-अक्षत चढ़ाते रहे। अन्त में अंग्रेजों ने इन देशभक्तों के अंतिम स्मारक वृक्ष को भी कटवा दिया। इस प्रकार मुसलमानों और हिंदुओं के द्वारा किया गया राम जन्मभूमि उद्धार का सामूहिक प्रयत्न भी अंग्रेजों ने व्यर्थ कर दिया।

दिल्ली गजेटियर पृष्ठ १०४ के अनुसार—"१८५७ के युद्ध में हार के बाद बाबरी मस्जिद के चारों ओर घेरा डाल दिया गया। हिन्दुओं को अन्दर जाने की इजाजत बंद कर दी गई, जबकि पहले हिन्दू-मुसलमान एक ही इमारत में आराधना किया करते थे।"

सन् १८६४ में हिन्दू जनता ने बाबरी मस्जिद पर पुनः प्रबल रूप से छापा मारा। मस्जिद की नयी दीवारें गिरा दी गईं। अंग्रेजों ने उसे दबाने को फौज भेजी। अनेकों हिन्दू पकड़कर जेलों में डाल दिए गए। तमाम दमन के बावजूद मस्जिद के अन्दर के चबूतरे पर हिन्दुओं का कब्जा बना रहा।

भारत आजाद हुआ। २३ दिसम्बर १९४८ के इतिहास का गौरवशाली दिन है वह। ऐसा कहा जाता है कि इस दिन श्री रामचन्द्र जी का बालरूप चित्र मस्जिद में प्रकट हुआ। लाखों की जनता उमड़ पड़ी थी। "भये प्रकट कृपाला दीन दयाला" के समवेत स्वर से अयोध्या पुनः गूंज उठी।

"राम जन्म स्थान की मुक्ति के लिए बाबर के शासनकाल से लेकर आज तक ७६ युद्ध हुए हैं। छिटपुट का तो कुछ कहना ही नहीं। बाबर के समय ४, हुमायूं के काल में १०, अकबर के २०, औरंगजेब के ३०, नवाब सआदत अली के ५, नासिरुद्दीन हैदर के ३, वाजिद अली और अंग्रेजों के समय में दो-दो युद्ध हुए हैं।"

राम जन्मभूमि को मुक्त कराने का हिन्दुओं का ४५० वर्षों से निरन्तर अखड प्रयास चलता आ रहा है। संसार के किसी भी महापुरुष की जन्मभूमि का उद्धार कराने के इतने प्रयत्न कहीं नहीं हुए, जितने राम जन्मस्थान के लिए हुए हैं। अयोध्या का चप्पा-चप्पा असंख्य बलिदानी वीरों के रक्त से रंजित है। अयोध्या के राम जन्मभूमि मन्दिर की मुक्ति संघर्ष तथा इतिहास का एक गौरवशाली पृष्ठ है।

राम जन्मभूमि लौटाई जाए—इस संदर्भ में एक प्रसंग अप्रसांगिक न होगा। १९७७ में जनता सरकार आई। मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने। कुछ

चोटी के मुस्लिम नेता उनसे मिलने गए। अनौपचारिक वार्ता में हिन्दू-मुसलमानो की एकात्मता पर बात चल निकली। मुस्लिम नेताओं ने कहा कि "अब ऐसा समय आया है कि भावनात्मक राष्ट्रीय एकता उत्पन्न की जा सकती है। अभी तक तो कांग्रेस भी अंग्रेजों के समान हिन्दुओं और मुसलमानों को बांटो, लड़ाओ और राज करो नीति पर चल रही थी। अब नए सिरे से इंटीग्रेटिड सोसायटी बनाई जा सकती है।" बात-बात में मोरारजी भाई ने उन्हें परामर्श दिया था—"अयोध्या का राम जन्मस्थान, मथुरा की कृष्ण जन्मभूमि और काशी में बाबा विश्वनाथ का मन्दिर, ये हिन्दुओं के अगाध श्रद्धाकेन्द्र हैं, ये हिन्दुओं के हैं। यह ऐतिहासिक तथ्य है। देश की बहुसंख्यक हिन्दू जनता का उनसे भावनात्मक लगाव है। अच्छा होता यदि आप अपनी ओर से उन्हें हिन्दुओं को लौटाकर राष्ट्रीय एकात्मता की पहल करते।"

प्रश्न उठा था, पर अभी अनुत्तरित है। काश! आज के नेता पुन: १८५७ की एकता की मूल भावना की शुरुआत करते? राष्ट्रीय एकात्मता के प्रतीक "राम जन्म स्थान" को हिन्दुओं को लौटाकर एक नए अध्याय का शुभारम्भ कर कोटि-कोटि जनों के दिलों के रिसते जख्मों में ये मरहम बन शीतलता प्रदान करते और राष्ट्रीय जीवन परम्परा की मुख्य धारा में समरस होते। — ▭

हमें अभिमान है कि हम हिन्दू हैं

वह व्यक्ति हिन्दू है जो हिमगिरि के धवल शृंगों से महोदधि की उत्ताल तरंगों तक विस्तृत इस भूखण्ड को अपनी पितृभूमि के रूप में मान्यता देता है, जो रक्त सम्बन्ध की दृष्टि से उसी महान् जाति का वंशज है, जिसका प्रथम उद्भव वैदिक सप्तसिन्धुओं में हुआ था और जो निरन्तर अग्रगामी होता अन्तर्भूत को पचाती तथा महनीय रूप प्रदान करती हुई हिंदू जाति के नाम से सुख्यात हुई है। जो उत्तराधिकार की दृष्टि से अपने आपको उसी जाति का स्वीकार करता है तथा इस जाति की उस संस्कृति को अपनी संस्कृति के रूप में मान्यता देता है जो संस्कृत भाषा में संचित है—जिसकी अभिव्यक्ति इस जाति के इतिहास, साहित्य, कला, धर्मशास्त्र, व्यवहारशास्त्र, रीति-नीति, विधि-संस्कार और पर्वों के माध्यम से हुई है। इसके साथ ही उस व्यक्ति के लिए वह भी अनिवार्य है कि नह उपर्युक्त बातों के साथ इस देश को अपनी पुण्यभूमि, अपने अवतारों, ऋषियों, महर्षियों की अवतारस्थली एवं इसके कण-कण को तीर्थस्थली समझता हो। हिन्दुत्व के लक्षण हैं—एक राष्ट्र, एक जाति तथा एक संस्कृति। इन सभी लक्षणों को संक्षेप में इस भांति प्रस्तुत किया जा सकता है कि वही व्यक्ति हिन्दू है जो सिन्धुस्थान (हिन्दुस्थान) को केवल पितृभूमि ही नहीं, अपितु पुण्यभूमि भी स्वीकार करता है। हिन्दुत्व के प्रथम दो लक्षणों राष्ट्र तथा जाति का समावेश पितृभूमि शब्द में हो जाता है और तृतीय लक्षण एक संस्कृति की अभिव्यक्ति "पुण्यभूमि" शब्द से होती है, क्योंकि संस्कृति में ही सब संस्कार समाविष्ट हैं और वही किसी भूमि को पुण्यभूमि का रूप प्रदान करती है। उपर्युक्त परिभाषा को और भी अधिक संक्षिप्त रूप में निम्नलिखित श्लोक में प्रस्तुत किया जा सकता है—

आसिन्धु सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः॥

— वीर सावरकर

आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' का सम्मान

आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' अपने आप में एक व्यक्ति नहीं, पूरी संस्था हैं। पिछले दिनों राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक अलंकरण समारोह में उन्हें पद्मश्री से अलंकृत किया गया। 'सुमन' जी कई पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक रह चुके हैं। वे कई वर्ष तक साहित्य अकादमी के प्रकाशन अधिकारी रहे। वे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के कुलपति रह चुके हैं। वहीं के स्नातक हैं। सन् १९७५ में जब आर्यसमाज ने अपनी स्थापना शताब्दी मनाई थी, तब उनका 'वन्दना के स्वर' नाम से एक कविता संग्रह प्रकाशित करने का श्रेय दयानन्द संस्थान को प्राप्त है। जब वे ५० वर्ष के हुए, तब नई दिल्ली के सप्रू हाउस में उनका अभिनन्दन किया गया था और तत्कालीन उपराष्ट्रपति स्वर्गीय डॉक्टर जाकिर हुसैन से उन्हें अभिनन्दनग्रन्थ भेंट करवाया गया था। इन दिनों आप दिवंगत हिन्दी सेवी ग्रन्थमाला पर काम कर रहे हैं। उसकी पूर्ति में भारत सरकार का पूरा सहयोग आपको प्राप्त है। जब आपको पद्मश्री मिलने की घोषणा हुई थी, तब दयानन्द संस्थान की अध्यक्ष पंडिता राकेशरानी जी ने आपको बधाई का सन्देश भेजा था। अब जब उन्हें वह पदक प्राप्त हुआ है, दयानन्द संस्थान उन्हें पुनः बधाई देता है।

—सत्यपाल शास्त्री

प्रो० रत्नसिंह जी की सलाहकार पद पर नियुक्ति

नई दिल्ली। आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् और महानन्द मिशन हरिजन कॉलिज, गाजियाबाद के सेवा निवृत्त उपाचार्य प्रो० रत्नसिंह जी एम० ए० डी० ए० वी० कॉलिज मैनेजिंग कमेटी के धर्म शिक्षा विभाग के सलाहकार नियुक्त हुए हैं।

प्रोफेसर साहब का सारा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार में बीता है। यह महात्मा अमरस्वामी जी (संन्यास पूर्व नाम ठाकुर अमरसिंह जी) का सौभाग्य है कि उन्हें प्रोफेसर साहब जैसा दामाद मिला। वैदिक सिद्धांतों के अतिरिक्त प्रोफेसर साहब दर्शनशास्त्र की प्राचीन और आधुनिक थ्योरियों पर अधिकारपूर्ण वाणी में बोलते हैं। इस नई नियुक्ति पर प्रोफेसर शाहब को जन-ज्ञान की बधाई।

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

१. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य ५००)
२. सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	५०)
३. वेद ज्योति	१५)
४. वेदांजलि : ३६५ मंत्रों की प्रेरक व्याख्या	३०)
५. सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या— पं० चमूपति)	१५)
६. ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में : क्षितीश वेदालंकार	१५)
७. संस्कारविधि: [सजिल्द]	१५)
८. सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	३०)
९. अग्निहोत्र दर्पण (डा० रामनाथ वेदालंकार)	२०)
१०. सत्यार्थ-प्रकाश (१० —१५ इंच) स्थूलाक्षर	१५१)
,, ,, आर्ट पेपर पर	२५१)
११. ज्योति स्तम्भ :	१०)
१२. वैदिक सम्पत्ति	८१)
१३. योगासन :	२)
१४. योग और ब्रह्मचर्य :	३)
१५. Concept of God	५०)
१६. श्रीमद्दयानन्दप्रकाश :	२५)
१७. LIGHT OF TRUTH	५०)
१८. प्रकृति और सर्ग : आचार्य उदयवीर शास्त्री	६)
१९. अथर्ववेद परिचय :	६)

बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाएं।

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, पो० ऑ० अलीपुर, दिल्ली-३६

गांधी ने कहा था—

देश के विभाजन से पहले मेरे शरीर के दो टुकड़े होंगे

मैं अहिंसा का पुजारी होने के नाते प्रस्तावित विभाजन का बलपूर्वक विरोध नहीं कर सकता, यदि भारत के मुसलमान वास्तव में चाहें। परन्तु मैं भारत के विभाजन के कार्य में स्वेच्छा से भाग नहीं ले सकता। मैं उसका विरोध करने के प्रत्येक अहिंसात्मक उपाय का इस्तेमाल करूंगा। विभाजन एक मिथ्यावाद है मेरी आत्मा इसके खिलाफ बगावत करने लगती है कि हिन्दुत्व और इस्लाम दो विरोधी संस्कृतियां और सिद्धांत हैं। मैं इस विचार के खिलाफ हूं कि लाखों भारतीयों ने, जो कल तक हिन्दू थे, आज सिर्फ इस्लाम ग्रहण कर लेने से अपनी राष्ट्रीयता को भी बदल दिया है।

(हरिजन, १३ अप्रैल १९४०)

पने ग्राम-नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित कीजिए

सबसे पहले आप समिति के उद्देश्य और मांगें पढ़ डालिए। यदि आप उनसे सहमत हों तो कम से कम अपने १९ साथी और बनाइए। इस प्रकार २० सदस्य बनाकर उनके फार्म तथा उनके पूरे शुल्क का ड्राफ्ट "अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति" के नाम का बनाकर केन्द्रीय कार्यालय, नई दिल्ली को भेजिए। साथ ही स्वीकृति के लिए पत्र भी लिखें।

स्वीकृति प्राप्त होने पर आप में से जिन्हें संयोजक बनाया जाए—एक अस्थायी कोषाध्यक्ष व मंत्री नियुक्त कर लें तथा अपने यहां विधिवत् कार्यालय बना लैटर-हैड, रसीद बुक आदि छपवा लें। स्थापना के दो मास के भीतर आप एक कार्यकर्ता सम्मेलन बुलाएं और रात्रि को सार्वजनिक सभा हिन्दू रक्षा सम्मेलन के रूप में रखें।

आपका लक्ष्य अधिक से अधिक सदस्य बनाना हो। अपने सदस्यता शुल्क व दान से सम्मेलन कीजिए। साहित्य बांटिए, पोस्टर लगाइए और संगठन को सुदृढ़ बनाइए।

२० सदस्यों के बाद बने सदस्यों का चौथाई शुल्क आप केन्द्र को भेजेंगे। दान रूप में एकत्र सम्पूर्ण धन आप अपने क्षेत्र में व्यय कर सकेंगे, किन्तु आपको सारा हिसाब नियमानुसार रखना होगा।

केन्द्र कभी भी आपके आय-व्यय की जांच कर सकेगा और केन्द्र को यह भी अधिकार होगा कि वह अनियमितता प्रतीत होने पर आपकी समिति भंग कर नयी समिति गठित कर सके।

हिन्दू रक्षा समिति वस्तुतः राष्ट्र के गौरव, परम्पराओं, इतिहास और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए कृतसंकल्प सर्वस्व-समर्पित देशभक्तों का संगठन है। अतः सब इसी दिशा में सोचते हुए सभी कार्य सम्पन्न करें, ताकि सफलता मिल सके।

हम किसी भी संकट में सेवा के लिए सदा प्रस्तुत हैं।

(प्रो०) धर्मवीर, प्रधान मंत्री
अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, करौलबाग, नई दिल्ली-५

महात्मा वेदभिक्षु जी के निधन पर

तुम्हें जाना था, तुम चले गये

—अनिल लोढा

तुम्हें जाना था, तुम चले गये !
हमें छोड़
दुःख के गांव में,
अकेले ही
सुख वृक्ष की छांव में,
चले गये
तुम्हें जाना था, तुम चले गये
रु.ते भी क्यों
पीर पक्षी के पास
होता नहीं है प्रीत अवकाश
सुनने स्नेह-संवाद
किसी मन मयूर के पास
चले गये
तुम्हें जाना था, तुम चले गये
हमें तो देखनी है

जग की नियति,
तुम्हारे मोह भंग के बाद
अपनी गति
निर्निमेष आंखों से
उड़कर गीत पांखों से,
चले गये
तुम्हें जाना था, तुम चले गये
हम अभी रुके रहेंगे,
किसी त्योहार के इन्तजार में
शायद लौट आओ,
चाहे उस तरह ही—जिस तरह
बिन कहे-सुने
चले गये
तुम्हें जाना था,
तुम चले गये ।

★

आग का पेड़

—अनिल लं

मैं
अपने भीतर
आग का एक पेड़ उगाना चाहता हूं
मेरी आस्था
जिसकी जड़ हो,
मेरी ज्ञान गंगा जिसे सींचे
और मेरी कविता—
जिस पर उगा हुला फल हो !
मैं अपने भीतर
आग का एक पेड़ उगाना चाहता हूं !
नहीं !
मुझसे रोशनी की बात मत कीजिये
मैं उसकी बेल नहीं उगाऊंगा
क्योंकि मैं जानता हूं
रोशनी लाने का भ्रम पैदा कर
आग का उगना टाला जा रहा है
और यह कि
उजाले की प्रतीक्षा में बैठाकर
हमें और अधिक गहरे अंधेरे में डाला जा रहा है।
इससे पहले
कि मेरे मन की उर्वर जमीन बंजर हो जाये
और अंधेरा उस पर कैक्टस उगाने लगे,
मैं अपने भीतर
आग का एक पेड़ उगाना चाहता हूं।
हां ! आग का पेड़ उगाना चाहता हूं।

सम्मत
राया
सनीय
ध
को म
गाली
कबीर
और
नाक
सेनाएं
प्रवंच
कहा
मिल्ट
ईश्वर
कवित
'फटफ
भर मे
उद्धत
तथा
वैशा

क्या योग ईसाइयों के लिए नज़ला है ?

—डॉ० सीताराम सहगल

इंग्लेंड के गिरजाघरों के प्रधान श्री जेम्स मक्लैन ने अपने अनुयायियों को धर्मोपदेश में कहा—'भारत की योगसाधनाएं ईसाई धर्म द्वारा सम्मत नहीं है। उसने पैरिश नामक मैगजीन में छपे अपने लेख में भी दुहराया है—योगशास्त्र में ध्यान की जो साधनाएं है वे खतरनाक और अविश्वसनीय हैं। इनके पीछे शैतान का हाथ है।

इस धर्मोपदेश के बारे में हमें इतना ही कहना है कि शायद पादरी साहिब को मालूम नहीं कि हिन्दू शास्त्र में शैतान नहीं होते। संस्कृत में कहीं भी गाली गलौच शब्द नहीं मिलता। केवल दास शब्द का प्रयोग किया गया है जो कबीर जैसे सन्तों ने अपने लिए भी प्रयोग किया है। वैदिक भाषा में देव और असुर की चर्चा है। जहां असुर ईसाई धर्म के शैतान से भिन्न है, खतरनाक नहीं है। यूरोप के शासकों ने मध्यकाल में शैतानों (Satans) की सेनांए भर्ती करली थीं जिन्होंने लूटखसूट मारपीट, आगजनी, हत्याएं तथा प्रवंचनाएं कीं। वृद्ध औरतें इन यातनाओं की शिकार होती थीं जिन्हें 'डायन' कहा जाता था ? भारत में इन्हें 'माताएं और देवियां, कहा गया। महाकवि मिल्टन ने अपने महाकाव्य स्वर्ग नष्ट हो गया (Paradise lolst) में शैतान को ईश्वर से भी 'महीयान्' सिद्ध किया है। कविवर शैली (Shelley) ने अपनी कविता स्काईलार्क में कहा है ऐ पक्षिन्, तुम व्यर्थ में अपने चमकीले परों से 'फटफट' शब्द कर रहे हो। ये शैतान, ये पिशाच और ये भूतात्माएं दुनिया भर में छा गए थे जिनका माध्यम ईसाइयों की नृशंस हत्याएं थीं। पश्चिम के उद्धत राष्ट्रवाद ने भारत के हर आध्यात्मिक तत्त्व में शैतान को देख। अनुदार तथा अवरुद्ध मानस हमेशा विदेशी संस्कृति का प्रतिवाद ही करता है। इन

लोगों को मालूम नहीं कि 'योग' भारतीय संस्कृति का अंग ही नहीं अपि
आज मानवीय मूल्यों की निधि स्वीकृत है ।

सभी सेमिटिक (यहूदी और अरब) धर्मों की शाखा ईसाई संप्रदाय में रो
कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट दो फिरके पैदा हुए जिनमें इस्लाम के शिया सु
सम्प्रदायों की तरह भीषण युद्ध छिड़ गए और आज भी आयरलैण्ड और इंग्लै
में उग्र रूप से होते हैं। यूरोप के कई नगर पुनः जलने लगे। अठार
सदी में इन युद्धों का अन्त जर्मनी के विश्वविख्यात दार्शनिक शोपेनहा
द्वारा हुआ जिन्होंने काण्ट के चरणों में बैठकर भारतीय उपनिषद् व
गीता का अध्ययन किया। उस ने एक नए दर्शन को जन्म दिया
यूरोप के इतिहास में 'क्रिश्चियन वेदान्त' के नाम से प्रसिद्ध है। उससे दो
सम्प्रदायों में शान्ति की स्थापना हुई। इसके बाद यूरोप में पुनर्जाग
Renaissance पैदा हुआ। अंग्रेज पादरी साहिब का भाषण पहला न
है। ख्रुशेव ने भी एक बार योग पर करारी चोट की थी—'भारतीय योग
परिचित होते तो ओलिम्पिक प्रतियोगिताओं में बुरी तरह क्यों हारते ? उस
प्रश्न तो ठीक है परन्तु संकेतित उत्तर ठीक नहीं। भारतीय खिलाड़ी यो
शास्त्र से उसी तरह अनजान हैं जैसे ख्रुशेव साहिब। योग में मांसपेशियों
पुष्ट करने की विधियां नहीं हैं। योग शरीर, मन और आत्मा के विकास
लिए एक विज्ञान है जो हमारे अध्यात्म (Spiritualism) का अंग है।
पादरी साहिब को शायद मालूम नहीं कि अंग्रेजी भाषा के कुछ शब्द
उसके समस्त रूप इसी 'योग' शब्द से बने हैं। शब्दों के अध्ययन से जाति
इतिहास, भूगोल, संस्कृति और संगीत का पता चलता है। अंग्रेजी का प्रसि
शब्द योक (Yoke) ग्रीक 'जुयोव, लैटिन 'जुग्म' और संस्कृत के 'युगम्' श
से साम्यता रखता है। मूल आर्यों की भाषा में वह 'जुगोम' था जो अन्तोद
था। इसका प्रमाण ग्रीक तथा संस्कृत के शब्द हैं जिनमें यह अन्तोदात्त
मिलता है। पाणिनि ने इसकी मूल धातु 'युजिर् योगे' कही है जि
ऐतिहासिक क्रम (Historical sequence) का ज्ञान होता है। जर्मनी
भाषा विज्ञानी प्रोफेसर बौप ने इसे अठारहवीं सदी की बड़ी उपल
(Discovery) कहा था।

रोम के इतिहास में हारे हुए सैनिकों के गले में तलवारों के चक्र पहना
जाते थे जिन्हें पहनाकर उन्हें चलने को कहा जाता था। फिर वही खेती
काम में आया परन्तु वह लकड़ी का बनाया जाता था। अध्यात्म-प्रधान
भारत में योग की क्रिया ने मनुष्य के लिए ईश्वर के पास पहुंचने का दरवाजा
खोल दिया।

आइए, योगशास्त्र का परिचय प्राप्त करें। प्रत्येक इन्सान जिन्दगी को सुखमय बनाना चाहता है और उसके लिए पैसा इकठ्टा करता रहता है। वह पैसे को ही सुख का सोपान समझता है जो उसकी भूल है। वास्तविकता यह है—

पहला सुख नीरोगी काया।
दूसरा सुख घर विच माया।
तीसरा सुख सतवन्ती नार।
चौथा सुख पुत्र आज्ञाकार।
पांचवा सुख सुन्दर वासा।
छठा सुख किसी का न दासा।
सातवां सुख संतोषी मन।
आठवां सुख प्रभु मिलन॥

शरीर को शक्ति देने वाला पदार्थ अन्न है। उससे शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है। शरीर से मन और मन से आत्मा कार्यक्षम होती है। याद रखना चाहिए कि मन अत्यन्त शक्तिशाली इन्द्रिय है, चंचल भी है। वह जबतक अपनी चंचलता नहीं छोड़ता तबतक उसकी शक्ति व्यर्थ जाती है। जैसे जल की भाप खुली छोड़ने से आपके कुकर में सब्जी नहीं पक सकती वैसे ही चंचल मन से कोई काम नहीं हो सकता। कुकर में भाप रहने से सब्जी जल्दी पकती है। ठीक उसी तरह मन को एकाग्र करने से यह लोक और परलोक सुधर सकता है। मन के हारे हार और मन के जीतेजीत।

सामाजिक स्वास्थ्य के लिए योगशास्त्र में ५ यमों को आचरण में लाने को कहा गया है जो इस प्रकार हैं—१. अहिंसा २. सत्य ३. अस्तेय (चोरी न करना) ४. ब्रह्मचर्य और ५. अपरिग्रह (जरूरत से ज्यादा पास में न रखना)। अपनी रूहानी ताकत के लिए पांच नियमों को भी पालना चाहिए जो ये हैं—१. शौच (पवित्रता) २. सन्तोष ३. तप ४. स्वाध्याय और ५. ईश्वर प्रणिधान। ये पांचों नियम व्यक्तिगत विकास के लिए लाज़मी हैं।

आसनों के करने से शरीर में खून का दौरा ठीक रहता है। प्राणायाम से फेफड़ों की शक्ति बढ़ती है। इस से खून साफ होता है। इस में रोग प्रतिबाधक शक्तियाँ (Preventive potentialities) निहित हैं। स्वतन्त्रता के बाद जब हमारे पहले प्रधानमन्त्री पं० नेहरू राष्ट्रमण्डल की बैठकों में लन्दन

कि होटल में ठहरते थे तो वहां वे योगासन करते थे जिन में शीर्षासन उनका प्रिय आसन था। समाचार पत्रों में उसकी चर्चा होती थी। जनता उसे पढ़कर प्रभावित होती थी। आज योग शब्द विश्व में संमोहक बन गया है।

शरीर की कमजोरी का पता हमें कमर की दर्द से लग जाता है। बरसात में कमर की दर्द पानी की बाल्टी उठाते ही परेशान करने लगती है। भले ही हम सल्फर की गोलियों का प्रयोग करें परन्तु उससे वह दूर नहीं होती। थोड़े दिन हुए आलइण्डिया शरीर विज्ञान संस्थान के प्रोफेसर डॉ० पी० के० दवे ने एक व्याख्यान में बताया था कि रीढ़ (Spine) की हड्डी में तभी दर्द शुरु होता है जब शरीर कमजोर हो जाता है। आधुनिक जीवन में तनाव अचूक है। उससे राहत गोलियों से नहीं अपितु शारीरिक व्यायाम से मिलती है, यह दर्द चालीस वर्ष से शुरु हो जाता है और जीवन भर साथ नहीं छोड़ता। यदि आसनों को युवावस्था से शुरु करदें तो सारा जीवन कमर की दर्द से मुक्त हो जाता है।

कमर दर्द के लिए पद्मासन की क्रिया परमोपयोगी होती है जो इस प्रकार है—

इसमें दाहिना पांव बाईं जंघा पर और बायां पांव दाहिनी जंघा पर रखा जाता है। दोनों पांव दोनों जंघाओं पर आते हैं और दोनों हाथ अपने-अपने घुटनों पर रखने होते हैं। पीठ, कमर, गला, सिर, पृष्ठ वंश सीधी समरेखा में होना चाहिए। ऐसा करने से कमर और पेट के स्नायुओं पर अच्छी प्रकार से खिचाव हो जाएगा इस आसन की क्रिया में लम्बी सांस लेनी चाहिए। यदि इसे नदी के तट पर व किसी बगीचे में किया जाए तो ऑक्सीजन का सेवन सारे शरीर को स्वस्थ बना देता हैं अमरीका जैसे देशों में आक्सीजन कक्ष बनाए गए हैं। जहां मरीजों को ६० मिनट तक रखा जाता है। उससे उनके थके-मांदे तन्तुओं को पुनः सिक्त करके तरोताजा हो जाते हैं।

आज के यन्त्र युग में जहां जलवायु दोनों प्रदूषित मिलते हैं वहां वर्ष में एक मास पहाड़ों में निवास शारीरिक स्वास्थ्य के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ है। ऋषियों के केन्द्र नदियों के तटों पर होते थे जहां वृक्ष और पौधे फलों से अवनत होकर अतिथियों का स्वागत करते थे। कण्व ऋषि का तीर्थ मालिनी नदी के तट पर था। विभाजन से पूर्व इन पंक्तियों का लेखक प्रातःकाल रावी के तट पर प्रायः पहुंच जाता था जहां वैद्य श्री ठाकुरदत्त मुलतानी पुल के ऊपर मेरी प्रतीक्षा करते रहते थे। दोनों सरसों के तेल की आपसी मालिश करते थे। फिर नदी में स्नान करने में शरीर स्वयमेव स्वस्थ अनुभव करने लगता था। यदाकदा लाहौर के लारेन्स गार्डन में भी प्रातः भ्रमणार्थ जाना

शेष पृष्ठ ४३ पर

मेरे पापा

—कुमारी दिव्या

मैं आपको एक ऐसे महापुरुष के बारे में बताने जा रही हूं, जिसने अपना सारा जीवन संघर्षों में व्यतीत किया और अन्तिम समय में भी संघर्ष ही किया। मैं गर्व के साथ कह सकती हूं कि वे महापुरुष और कोई नहीं मेरे पापा ही थे।

२१ दिसम्बर १९८३ प्रातः ३ बजे होंगे कि उन्होंने अपने प्राण गहन निद्रा में ही त्याग दिए। वे १५ दिन से पन्त अस्पताल में बीमार चल रहे थे। इस बीच पापा की तबीअत सुधरती-बिगड़ती रही। इस रोग ने करीब ४ साल पहले भी उन पर आक्रमण किया था। उन्हें खून की उल्टियां आई थीं, जिससे उनका स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन बिगड़ता ही चला गया। वे अमर हैं। अभी भी यदि कोई उनका नाम मृत्यु के साथ जोड़ता है तो यह बात मुझे गलत लगती है। क्योंकि वे तो अमर हैं। शरीर का क्या ? वह तो एक नश्वर वस्तु है जो एक न एक दिन मिट ही जाता है। किन्तु आत्मा कदापि समाप्त नहीं होती।

कौन कहता है कि आज मेरे पापा हम सबके बीच नहीं हैं। उनका शरीर ही तो नहीं है—उनके उद्देश्य तो हैं, जिन पर अमल करके हम उनके सपनों को साकार कर सकते हैं, उनकी छवि को उभार सकते हैं। कहा गया है—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः,
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः ॥

अर्थात् आत्मा को न तो शस्त्रों के द्वारा काटा जा सकता है, न ही अग्नि द्वारा जलाया जा सकता है एवं न हवा के द्वारा सुखाया जा सकता है।

हमारे परिवार में किसी की भी आयु अधिक नहीं रही। मेरे दादा (पं० गया प्रसाद शुक्ल) ३६ वर्ष की अवस्था में एवं दादी (विद्यावती शारदा) ४२वर्ष की अवस्था में ही गहन निद्रा में निमग्न हो गए। वे दोनों ही क्रान्ति-

कारी थे । दादा जी को अंग्रेजों ने रुक-रुक कर १३६ घंटे तक कोड़ों से मा
जिससे फेफड़े फट जाने के कारण उनकी मृत्यु हो गयी थी ।

पापा ने 'आर्य', 'आर्यमित्र' एवं 'आर्योदय' नामक अखबारों के सम्पाद
का कार्य संभाला । तत्पश्चात् अपना अधिकांश समय सभाओं में व्यतीत क
दिया । सभाओं में उन्हें कुछ प्राप्ति नहीं हुई अपितु गालियां ही मिलीं । फि
उन्होंने दयानन्द संस्थान की स्थापना की । हिन्दू रक्षा समिति की स्थापन
और इसका इतना अधिक कार्य केवल तीन सालों में ही पूर्ण कर दिया । जि
काम को बड़ी-बड़ी सभायें १०० सालों में पूर्ण न कर सकीं वह कार्य उन्हों
१० सालों में ही पूर्ण कर लिया ।

पापा की इच्छा थी कि मेरे इस बढ़े हुए कार्य को कोई आगे बढ़क
संभाले । पर हम उन जैसा मस्तिष्क कहां से लायें ? हर समय यही चिन्त
कि देश का क्या होगा ? अस्पताल में भी चैन नहीं । अपने अन्तिम समय तक
होशोहवास में थे । काश, मैं पापा जितनी बुद्धिमती बन सकती ।

दिल्ली से जब मैं वापिस देहरादून (४ दिसम्बर १९८३, रविवार के दिन)
आ रही थी तो क्या पता था कि यह पापा से मेरी अन्तिम भेंट होगी । खैर,
कल किसने देखा होता है । यह तो सभी को पता है कि एक न एक दिन सभी को
इस दुनिया से अन्तिम विदाई लेनी ही है । यह भी क्या मालूम था कि पापा
मुझे अन्तिम बार दिल्ली से विदा कर रहे हैं ।

उनकी किसी चीज की सीमा नहीं । प्यार की तो बिल्कुल नहीं । मैंने अपने
पापा की मार तो कभी खाई ही नहीं । कुछ पाया है तो केवल प्यार । अनन्त
सागर की गहराइयों को छू लेने वाला प्यार । डांट कभी पड़ी भी हो तो याद
नहीं । इतना असीम प्यार तो किसी भाग्यशालिनी को ही प्राप्त हो सकता है।

कभी भी किसी चीज की बंदिश न लगाई । लगाई भी होगी तो उन पर
जो वस्तुएं अनुपयोगी हों । जो मांगा सो पाया । उन्होंने मुझे हमेशा अपना बेटा
समझा ।

वे जीवन में कभी किसी के आगे नहीं झुके । झुकना तो उन्होंने सीखा ही नहीं
था । वे सदा कहते थे कि सबसे बड़ा तो भगवान् है; उससे डरना चाहिए,
अन्य किसी से नहीं । उनका हृदय बहुत ही विशाल था । जिस किसी ने जब
कभी भी पापा को किसी भी तरह से क्षति पहुँचाई उस क्षति पहुंचाने वाले
को भी उन्होंने सदैव क्षमा कर दिया ।

उनका भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने का स्वप्न अधूरा ही रह गया। लेकिन एक न एक दिन उनका यह सपना जरूर साकार होगा।

"सच्चाई के मार्ग पर चलने वाले की सदैव विजय होती है, किन्तु उसमें थोड़ा-सा भी झूठ मिल जाने पर बड़ा झूठ उस छोटे झूठ को हरा देता है—यह बात वे अक्सर कहा करते थे।

मेरी मां पर २६ मुद्दमे चले, किन्तु वे तनिक भी विचलित न हुईं इन। दोनों पर दो बार हमला हुआ, मारने की साजिश की गई, किन्तु पीछे हटने की बजाय वे आगे ही बढ़े। पीछे तो कायर लोग हटते हैं और फिर पापा तो सिंहतुल्य थे। भला सिंह कभी पीछे हटा करते हैं?

पापा कहते थे कि यह जीवन तो दूसरों के लिए ही बना है—स्वार्थ सिद्ध करने के लिए नहीं। वास्तव में वे जिए भी तो दूसरों के लिए। देश सेवा हेतु अपना तन-मन-धन सब कुछ अर्पण कर दिया। किसी भी चीज का मोह न किया। निःस्वार्थ सेवा और ऐसा त्याग आजकल के जमाने में दुर्लभ है।

मेरे दादा हीरों के व्यापारी थे। पापा चाहते तो अपार धन राशि जमा कर सकते थे, किन्तु सारे हीरे शादियों में, किसी उत्सव आदि में दान कर दिए। पैसे की तो उनके लिए कोई कीमत ही न थी। समय की कीमत अपेक्षाकृत अधिक थी। पैसे का क्या? वह तो आई-गई वस्तु है किन्तु समय कभी लौटकर नहीं आता। यही बात हमेशा हमसे भी कही।

दस साल में वेद भाष्य घर-घर में पहुंचाया। यही क्या कम आश्चर्य है! कभी हार नहीं मानी। अपने स्वास्थ्य की चिन्ता किए बगैर निरन्तर क्रियाशील रहे। आराम तो शायद उनके जीवन में कभी लिखा ही न था।

हे ईश्वर! मैं तुमसे अधिक नहीं, इतना जरूर कहूंगी कि मेरे पापा जो स्वयं में एक आदर्श थे और जो उनके सद्गुण थे वह मैं भी ग्रहण करूं एवं उनके सपनों को साकार कर सकूं— मुझे इस योग्य बना। मैं संकटों से जूझने का साहस रखूं। कभी भी झूठ के आगे सिर न झुकाऊं। सच्चाई का मार्ग अपनाऊं। प्रभु, आप मेरे पापा की आत्मा को शान्ति दें। ★

युधिष्ठिर को पाठ याद नहीं हुआ

—प्रेमचन्द्र शास्त्री

बच्चो ! इस छोटी-सी कहानी को ध्यान से पढ़ो । कौरवों और पाण्डवों के गुरु द्रोणाचार्य जी थे । वे बड़े प्रेम से अपने शिष्यों को शिक्षा दिया करते थे । अस्त्र-शस्त्र और युद्ध की विद्या के साथ वे धर्म की शिक्षा भी देते । अच्छी शिक्षा देने के कारण उनका नाम दूर-दूर तक फैल गया था ।

एक दिन उन्होंने कौरवों और पाण्डवों को धर्म की शिक्षा देते हुए यह पाठ याद करने को कहा—'क्रोधं मा कुरु' अर्थात् गुस्सा मत कर । सब बच्चे पाठ याद करने लगे ।

अगले दिन गुरुजी ने शिष्यों से पूछा—बच्चो ! कल का पाठ याद कर लिया ? सब बच्चों ने एक स्वर में कहा—हां जी । गुरुजी ने एक-एक करके सबसे पाठ सुनना आरम्भ किया । गुरुजी बोले दुर्योधन ! पाठ सुनाओ ! दुर्योधन ने कहा—'क्रोधं मा कुरु' अर्थात् 'गुस्सा मत कर' । इसके बाद अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव आदि सबसे पाठ सुना । सब ने अपना पाठ गुरुजी को सुना दिया । गुरुजी प्रसन्न हुए और बच्चों को कहा—शाबास, बच्चो ! पाठ इसी प्रकार सदा याद करके आया करो ।

अन्त में गुरुजी ने युधिष्ठिर, से कहा—युधिष्ठिर तुम भी पाठ सुनाओ ! युधिष्ठिर ने नम्रतापूर्वक हाथ जोड़ कर गुरुजी से निवेदन किया कि गुरुजी, मुझे तो पाठ याद नहीं हुआ ! इतना कह युधिष्ठिर मन ही मन कुछ लज्जित-सा हुआ और गुरुजी को आश्चर्य हुआ कि युधिष्ठिर बुद्धिमान् छात्र है, फिर भी आज उसे साधारण-सा पाठ भी याद क्यों नहीं हुआ ! गुरुजी शान्तभाव से युधिष्ठिर से बोले—कल याद कर लाना । युधिष्ठिर ने पाठ याद करने की कोशिश की किन्तु उसे यह पाठ याद नहीं हुआ । अगले दिन गुरुजी ने युधिष्ठिर से फिर पूछा—बेटा युधिष्ठिर ! पाठ याद हो गया ? युधिष्ठिर बोला—गुरुजी, मैंने पाठ याद करने की बहुत कोशिश की, । किन्तु मुझे पाठ याद

नहीं हुआ ! कई दिन तक गुरुजी उससे पूछते और युधिष्ठिर भी यही कहता कि यह पाठ मुझे याद नहीं हुआ ।

अन्त में, एक दिन गुरुजी ने युधिष्ठिर को पास बैठा कर शान्तभाव से उससे पूछा—बेटा, बतलाओ क्या कारण है जो यह साधारण-सा पाठ तुम को याद नहीं होता ? क्या तुम्हारा मन पढ़ाई में नहीं लगता ? या तुम दूसरे बच्चों के साथ खेलते रहते हो और पाठ याद करने का तुम्हें समय नहीं मिलता ? अथवा पाठ याद करने के समय तुम किसी और ही चिन्ता में डूबे रहते हो ? सब बच्चों को यह पाठ याद हो गया, किन्तु अकेले तुम्हें ही याद नहीं हुआ ? क्या कारण है ?

गुरुजी के पूछने पर युधिष्ठिर ने नम्रतापूर्वक हाथ जोड़कर बताया कि गुरुजी ! आपने पढ़ाया था कि 'क्रोधं मा कुरु' अर्थात् 'गुस्सा मत कर' । गुरुजी ! मेरा क्रोध अभी दूर नहीं हुआ, मुझे कभी-कभी क्रोध आ जाता है, इस लिये मैं कहता हूं कि मुझे पाठ याद नहीं हुआ । युधिष्ठिर की इस बात से गुरुजी बहुत अधिक प्रसन्न हुए और उसे छाती से लगा लिया । फिर सब बच्चों के सामने गुरुजी ने इस बात के लिये युधिष्ठिर की प्रशंसा की ।

बच्चो ! पाठ याद करने का मतलब यह नहीं है कि उसके शब्दों का अर्थ याद कर लिया जाये, किन्तु पाठ में जो बात बताई गई हो उस पर आचरण भी करना चाहिये । ऐसा करने से युधिष्टिर की तरह तुम्हारी भी प्रशंसा होगी ।

(पृष्ठ ३८ का शेष)

होता था तो अमृतधारा के आविष्कर्ता वैद्य ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य के यहां आसनों की क्रियाएं देखने को मिलती थीं ।

जब शरीर और मन दोनों स्वस्थ होते हैं तो आत्मशान्ति छाया की तरह हमारा पीछा करती है । इसीलिए गीता ने समत्व को योग की संज्ञा दी है । भगवान् श्री कृष्ण ने योगी बनने की सिफारिश की है—

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः ।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद् योगी भवार्जुन । (६,४६)

—तपस्वी लोगों की अपेक्षा कर्मयोगी श्रेष्ठ है, ज्ञानी पुरुषों की अपेक्षा भी श्रेष्ठ है और कर्मकाण्ड करने वालों की अपेक्षा भी श्रेष्ठ समझा जाता है । इसलिए हे अर्जुन, तू योगी बन ।।

दर्द नहीं मिट पायेगा

—हरिमोहन सिंह कोठिया

राजनीति से जन-गण-मन का,
दर्द नहीं मिट पायेगा ।
धर्म मिटा तो आर्य राष्ट्र का,
स्वाभिमान मिट जायेगा ।

□ □

शब्दों में कोरा परिवर्तन,
भाव बहुत ही बौने हैं ।
जिन पर है पतवार राष्ट्र की,
वे ही हाय घिनौने हैं ॥
धीरे-धीरे मल्लाहों पर से,
ही यकीन उठ जायेगा ।
धर्म मिटा तो आर्य राष्ट्र का,
स्वाभिमान मिट जायेगा ।

□ □

व्यक्ति अपाहिज, नीति पंगु है ।
राजनीति अवसरवादी ।
धर्म लुट रहा किंतु मौन हैं,
कर्णधार पहिने खादी ।
दल की दलदल में परिवर्तन
का रथ खुद रुक जायगा ।
धर्म मिटा तो आर्य राष्ट्र का,
स्वाभिमान मिट जायेगा ।

□ □

छुआछूत की नागिन हिन्दू
जनता को डस जायेगी ।
आर्य संस्कृति वीराने में,
किसको वेद सुनायेगी ॥
बूंद-बूंद कर मंगल-घट का,
स्नेह सलिल चुक जायेगा ।
धर्म मिटा तो आर्य राष्ट्र का,
स्वाभिमान मिट जायेगा ।

□ □

आओ साथियो आगे बढ़कर,
उनको बेनकाब कर दो ।
जिन पर माँ का कर्ज चाहिये
उनसे तय हिसाब कर लो ।
सुदृढ़ संगठन की आभा से,
अन्धकार मिट जाएगा ।
धर्म मिटा तो आर्य राष्ट्र का
स्वाभमिान मिट जायेगा ।

★

उपदेश

मातृ-शक्ति और गृहस्थ परिवार का आदर्श

—स्वर्गीय महात्मा नारायण स्वामी

मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद ।

प्राचीन शिक्षा-पद्धति का मूलमन्त्र ब्राह्मण-ग्रंथ के इस वाक्य में निहित है कि "मातृमान्, पितृमान्, आचार्यवान् पुरुषो वेद"—अर्थात् बालक, बालिकाएं अपनी शिक्षाएं सबसे प्रथम माता, उसके बाद पिता और तीसरे दर्जे पर गुरु से ग्रहण किया करती हैं। मनोविज्ञान के उच्च सिद्धान्त प्रकट करते हैं कि छोटे बालकों का मन अर्थात् वह मस्तिष्क (Objective mind) जो इच्छा-शक्ति का केन्द्र होता है, और जिससे मनुष्य इरादा करके काम किया करता है, चित्त (Subjective mind) अर्थात् उस मस्तिष्क की अपेक्षा जिस पर अनिच्छित प्रभाव अंकित हुआ करते हैं, बहुत कम विकसित हुआ करता है—इसीलिए माता के शिक्षा काल में माता की शिक्षाएं बालक के मन पर कम परन्तु चित्त पर अधिक प्रभाव डाला करती हैं। मन पर जो प्रभाव पड़ा करता है वह तो मन के संकल्प-विकल्पों के संघर्षण में आकर नष्ट-सा भी हो जाया करता है, परन्तु चित्त पर पड़ा प्रभाव हृदयांकित होकर एक प्रकार से अमिट-सा हो जाया करता है। मानव-शरीर की उन सब मांस-पेशियों का सम्बन्ध, जिनके द्वारा मनुष्य कुछ किया करता है, चित्त (दूसरा मस्तिष्क) से होता है। इसलिए चित्त पर पड़ा प्रभाव बिना रोट-टोक के काम में आने लगता है। पिता का शिक्षा-काल वह होता है जिसमें मन (पहला और मुख्य मस्तिष्क) का विकास शुरू हो जाता है। परन्तु वह इतना अधिक विकसित नहीं हो जाता कि जिससे चित्त के काम से उसका प्राबल्य हो सके। अस्तु, पिता की शिक्षा कुछ चित्त पर और कुछ मन पर अपना प्रभाव उत्पन्न

किया करती है। मन पर पड़ा शिक्षा का प्रभाव अस्थिर हुआ करता है, पर चित्त पर पड़ा शिक्षा का प्रभाव स्थिर और अमिट हो जाता है।

गुरु की शिक्षा का समय वह होता है कि जिसमें मन अच्छी प्रकार काम करता है। इसलिए गुरु की प्राय: समस्त शिक्षा का प्रभाव मन पर पड़ने से वह सब अस्थिर होता है। इसलिए गुरुओं में माता का दर्जा ऊंचा माना गया है। संसार का इतिहास साक्षी देता है कि संसार के सभी उच्च श्रेणी के व्यक्ति माता की शिक्षा के प्रभाव से प्रभावित थे। कु का यहां उल्लेख किया जाता है—

(१) मदालसा का जीवन-चरित्र पढ़ने वाले जानते हैं कि किस प्र उसने अपने पहले तीन पुत्रों को तपस्वी बना दिया, जब कि उनके पित इच्छा यह थी कि वे राज्य के उत्तराधिकारी बनें। परन्तु जब उसने अपने की इच्छानुसार चौथे पुत्र ऋतुध्वज को राज्य का उत्तराधिकारी बन चाहा, तब अपने भाइयों के आग्रह करने पर भी वह तपस्वी बन कर वन नहीं गया, अपितु राज्य में आकर राज्य का उत्तराधिकारी बना।

(२) नैपोलियन बोनापार्ट ने एक बार जब वह 'लेडी कैम्पन' के शिक्षा-सम्बन्धी विचार कर रहा था, कहा था कि अच्छी शिक्षा प्राप्त के लिए आवश्यक है कि माताएं अच्छी सुशिक्षिता हों। उसने यह भी कि दृढ़ता, वीरता, नियम-बद्धता और न्याय-परायणता का क्रियात्मक उसने अपनी माता से ग्रहण किया था।

(३) नेलसन, इंग्लैंड के बड़े नाविक ने भी देशहित, उदारता, उत्साह निपुणता अपनी माता से सीखी थी।

(४) आलिवर क्रॉमवेल, इंग्लैंड के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी को भी शुद्ध दृढ़ और पुरुषार्थी उसकी माता ही ने बनाया था। क्रॉमवेल के जीवन-च का लेखक 'फोरेस्टर' उसकी माता के पुरुषार्थ का वर्णन करते हुए कहत कि उसने अपने हाथ की कमाई से अपनी पांच पुत्रियों को विवाह के अ पर बहुमूल्य दहेज दिए और प्रतिष्ठित परिवारों में उनके विवाह किये थे। उसी ने अपने पुत्र (क्रॉमवेल) को भी अपने ही सांचे में ढाला था।

(५) डॉक्टर स्कॉट ने, जिसने अपने नाविलों से आंग्ल भाषा की क पलट दी थी, एक बार अपने परिचित जार्ज इलियट को लिखा था कि बाप और दादा पशु चराया करते थे। परदादा बागी और राजा बेवफा सरदार था। इस प्रकार मेरे परिवार में कोई भी उच्च कोटि

शिक्षित न था। परन्तु मेरी माता प्रोफेसर 'रुदरफोर्ड' (एडिनबरा) की बेटी थी और बड़ी विदुषी और चतुर थी। वह बचपन से ही मेरे भीतर उन विचारों को डालती रही जिनसे मेरा पिता सर्वथा अनभिज्ञ था।

(६) जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक 'कांट' के लिए भी यही बतलाया जाता है कि उसके उच्चकोटि के सदाचारी बनने का श्रेय उसकी माता को ही प्राप्त था।

ये और इस प्रकार की अनेक घटनाएं प्रकट करती हैं कि बालकों और बालिकाओं की अच्छी और उत्तम शिक्षा के लिए माता का सुशिक्षित होना अनिवार्य है।

गृहस्थ परिवार का आदर्श

वेद ने गृहस्थ के प्रत्येक परिवार को राज्य-रूप से समझा है और इस राज्य की महारानी गृह-पत्नी को बतलाया है। वेद प्रजातन्त्री राज्य-विधायक हैं। इसलिए राजत्व-काल की उन्होंने सीमा बांध दी है। मौरूसी राजत्व का अधिकार किसी को नहीं दिया। वह सीमा क्या है ? प्रश्न का उत्तर स्पष्ट है कि राजत्व-काल की सीमा गृहस्थाश्रम की अवधि है। आश्रम-व्यवस्थानुसार मनुष्य की आयु १०० वर्ष की होने पर उसके चार विभाग होते हैं— ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। प्रत्येक आश्रम की अवधि साधारणतया २५ वर्ष की नियत की है। २४ वर्ष तक ब्रह्मचर्य पूर्वक शिक्षा प्राप्त करके पुरुष को २५वें वर्ष में गृहस्थाश्रम में दाखिल होना चाहिए; और ५०-वें वर्ष तक गृहस्थी रहना चाहिए। यह अनुभूत विषय है कि ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करने के बाद कोई पुरुष जब गृहस्थी बनता है तो उसके गृहस्थ के पहले ही वर्ष में सन्तान हो जाती है। इस प्रकार २५वें वर्ष किसी के प्रथम पुत्र के उत्पन्न हो जाने पर उसे २४ वर्ष और गृहस्थाश्रम में रहना चाहिए। अर्थात् ४९वें वर्ष में जाकर उनका ज्येष्ठ पुत्र २४ वर्ष के ब्रह्मचर्य का पालन करके गृहस्थाश्रम में आ जायगा और उस ज्येष्ठ पुत्र के २५वें वर्ष में गृहस्थ की ऊपर बतलाई हुई मर्यादा के अनुसार पुत्र उत्पन्न हो जायगा। बस, ज्येष्ठ पुत्र के एक पुत्र हो जाने पर ५०वें वर्ष में उस गृहस्थ पति और पत्नी को गृहस्थाश्रम छोड़ देना चाहिए और आगे के आश्रमों में चले जाना चाहिए। इसलिए वेद ने कहा है कि—

> ओं सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्र्वां भव।
> ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिदेवृषु ॥

मन्त्र में जो शिक्षा दी गई है उससे स्पष्टतः यह बात निकल आती है कि जिस समय ज्येष्ठ पुत्र का विवाह हो जावे और पुत्र-वधू घर में आ जावे तो गृहस्थी-रूपी राज्य की महारानी को अपने राज्य-कार्य का चार्ज नवागता को दे देना चाहिए। इसीलिए इस मन्त्र में वधू को सम्बोधित करके कहा गया है कि, "हे वधू ! तू श्वसुर, सास, ननद और देवर की सम्राज्ञी (महारानी) हो।" गृहस्थाश्रम के अन्तिम वर्ष में वधू के आ जाने पर सास, ससुर आदि सब परिवार को वधू के शासनाधीन रहना चाहिए, यह भी मन्त्र से स्पष्ट है। इसका कारण यह है कि ससुर और सास अपने पुत्र और वधू को गृहस्थ के कार्य चलाने में सहायता देवें और अपने अनुभव का ज्ञान उन्हें करा देवें क्योंकि उन दोनों के लिए यह काम बिल्कुल नया होगा। वेद ने जहां सास, ससुर आदि को ज्येष्ठ पुत्र और उसकी वधू के शासन में रहने का विधान किया है वहां वधू को भी आदेश दिया है कि—

स्योना भव श्वशुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्यः।
स्योना स्यै सर्वस्य विशे स्योना पुष्ट्यैषः भव ॥

अर्थात् हे वधू ! तू श्वसुर, पति के गृह वालों और समस्त प्रजा के लिए सुख-दात्री हो और इनकी सेवा तथा पोषण में भी तुझे सुखी होना चाहिए। अर्थात् पति और पत्नी का कर्तव्य, इस मन्त्र के द्वारा, यह ठहराया गया कि वे सास, ससुर आदि सबकी—प्रसन्न होकर, बोझ समझ कर नहीं—सेवा, शुश्रूषा और भरण-पोषण करें,। कितनी उत्तम शिक्षा है ! इसी शिक्षा के अनुकूल अनेक सूर्यवंशी राजा रघु तथा विक्रम, भर्तृहरि आदि, राज्य छोड़कर वानप्रस्थी हो गये थे। आज जो गृहस्थ में कलह है, उसका कारण शिक्षा का क्रियात्मक अभाव है। पिता और माता मरने से पहले गृहस्थ छोड़ना नहीं चाहते। अपमानित होकर रहते हैं, चारपाई पर पड़े खों-खों करते हुए घर की चौकीदारी करते हैं, बच्चों को खिलाते हैं, परन्तु घर नहीं छोड़ते।

बनिया दूकान बन्द कर सो चुका था। एक बुढ़िया ने आकर दूकान का द्वार जोर से खटखटाया। बनिया चौंक कर उठा और दरवाजा खोल कर बुढ़िया से पूछा—"क्या चाहिए ?"

"बेटा, दस पैसे का खाने का सोडा दे दे, दर्द के मारे मरी जा रही हूं।" बुढ़िया ने हाथ से पेट को दबाते हुए कहा।

"मेरी दादी, दस पैसे के सोडे के लिए मेरी नींद खराब कर दी। यह दर्द तो गर्म पानी में नमक डाल कर पीने से भी दूर हो जाता !"

"सुखी रहो बेटा, अब सोडे का क्या करूंगी !" इतना कह बुढ़िया चलती बनी।

वायु-प्रदूषण का एकमात्र इलाज

—रामचन्द्र आर्य मुसाफिर

घटना आज से ७०-७२ वर्ष पूर्व की है। मैं अपने पिता जी के पास से (जो पुलिस विभाग में थे) माता जी के साथ अपने ग्राम में गया था जहां मेरे ताऊ, चाचा आदि रहते थे। मेरी आयु उस समय १०-११ वर्ष की होगी। गांव में पहुंच कर सुना कि यहां चारों ओर ग्रामों में महामारी फैल रही है। धडाधड़ पशु मर रहे हैं। साथ ही लोगों को यह भी कहते सुना कि वायु देवता रूठ गये हैं; उन्हें मनाने को जग्य (ग्रामीण शब्द) यज्ञ किया जायेगा मुझे यज्ञ का नाम प्रथम बार ही सुन पड़ा था। वायु देवता कौन है? उसे कैसे प्रसन्न किया जायेगा और जग्य (यज्ञ) क्या वस्तु है? मुझे यह सब जानने की बड़ी उत्सुकता थी! फलतः एक दिन रात्रि को गांव के प्रधान की चौपाल पर बहुत-से व्यक्ति जमा हुए और चन्दा जमा हुआ। दूसरे दिन बाजार से सुगन्धित द्रव्य धड़ियों की संख्या में लाया गया, अनेक स्त्री-पुरुषों ने मिलकर उसकी कुटाई की। पश्चात् गो-घृत व भैंस का घृत मिलाया। कई ग्रामों के बीच एक बाग में कोने पर चामुण्डा देवी का स्थान था। वहां बहुत बड़ा हवन कुण्ड खोदा और गोबर तथा पीली मिट्टी से उसे लीप-पोतकर कई पंडितों ने दुर्गा सप्तशती पुस्तक से यज्ञ प्रारम्भ किया जो ६ दिन तक होता रहा। दिन में दोपहर तक यज्ञ होता था, रात्रि में भगवद्भक्ति के भजन होते थे। हवन की समाप्ति पर बड़ा भारी ब्रह्म भोज भी हुआ जिसमें सभी आसपास के ग्रामों के स्त्री-पुरुषों ने भोजन किया—यहां तक कि बाहर का कोई भी आता-जाता व्यक्ति दीख पड़ा तो उसे भी बिना भोजन किये नहीं जाने दिया।

मेरी माता जी मेरे साथ थीं। उन्होंने बताया पुत्र, कि वायुदेवता प्रसन्न हो गये। गाँवों से बीमारी समाप्त हो गई है। मैंने पूछा वायुदेवता कौन हैं? माता जी ने बताया वायुदेवता हवा का नाम है। वह खराब हो गई थी। सुगन्धित तथा मीठे और घी मिले पदार्थों के अग्नि में जलाने से वह शुद्ध

हो गई है। बस, बात यहां आ गई और समाप्त हो गई। मैं कुछ बड़ा हुआ। विद्
ध्ययन में लगा। आर्यसमाज द्वारा संचालित आर्य कुमार सभा में जाने-आ
लगा। प्रति सप्ताह रविवार को वहां यज्ञ होता था और व्याख्यानों को
बड़े ध्यान से श्रवण करता था। एक दिन एक पंडित जी ने अपने व्याख्
में हवन (यज्ञ) द्वारा आरोग्य प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ, बल प्राप्ति आदि
बहुत कुछ बातें बताई। एक पुस्तक जो पुत्रकामेष्टि यज्ञ पद्धति नाम
थी, व्याख्यान के बाद बिक्री की। एक पुस्तक मैंने भी खरीदी। पुस्तक इट
जिले के स्वर्गीय पं० भीमसेन जी शर्मा लिखित थी जो महर्षि दयानन्द
के शिष्य थे।

उक्त व्याख्यानदाता पंडित जी ने कहा कि इस पुस्तक के लेखक
राजस्थान स्थित किशनगढ़ रियासत के राजा, जो नि:सन्तान थे, उनके
यज्ञ कराया था। पश्चात् समय पर राजा साहब को पुत्र रत्न की प्राप्ति हु
(मैंने अजमेर में आकर किशनगढ़, जो पास ही है, पता चलाया तो ज्ञात हु
कि हां, यज्ञ हुआ था और पुत्र का नाम यज्ञनारायण सिंह रखवाया जि
नाम का आजकल यज्ञनारायण हॉस्पिटल किशनगढ़ में है—लेखक)
ही यह भी कहा कि त्रेतायुग में महाराज दशरथ जी ने यज्ञ कराया। और
पुत्रों को प्राप्त किया था। यह तो प्रसिद्ध बात है आप सब जानते ही
यह यज्ञ पुत्रकामेष्टि कहलाता है।

दिल्ली में फर्रुखसियर नाम का बादशाह शासन करता था। उ
परिवार में किसी देवी को क्षय (टी० बी०—तपेदिक) रोग हो गया था। अ
दवाइयां कीं। लाभ कुछ न हुआ। तब बादशाह को पता चला कि श्री
परमानन्द नाम के वैद्य जो दिल्ली के पास किसी ग्राम में रहते थे वे
सिद्ध वैद्य हैं और क्षय रोग के विशेषज्ञ हैं। उन्हें बुलाया गया। वैद्य जी
रोगी को देखा और अब तक क्या-क्या दवाइयां दी हैं? उसकी जांच
किन्तु इसी बीच देवी ने कहा कि मैं दवा खाते-खाते तंग आ गई हूं। अब
दवा नहीं खाऊंगी।

वैद्य परमानन्द जी ने कहा बेटी, खाना मत, सूंघ तो लोगी। इस पर प्र
हो देवी ने कहा हां, सूंघ लूंगी। फलत: उन सब नुस्खों में से कुछ औष
चुनकर हवन सामग्री की तरह कूट-छानकर तैयार की गई और गौ के
के साथ अग्नि पर कुछ दिन तक नियमपूर्वक जलाई गई उसके सूंघने से
स्वस्थ हो गई; इत्यादि अनेक उदाहरण ग्रन्थों में भरे पड़े हैं।

उपदंश (आतशक) रोग में इलाजुल गुर्बा पुस्तक के निर्माता ने धू

से उपदंश नाश किया है। अलीगढ़ के प्राणाचार्य पत्र के प्रयोग मणिमाला अंक में उपदंश रोग का अनुभूत प्रयोग धूम्रपान लिखा है। इस विषय में अथर्ववेद के तृतीय काण्ड के सूक्त ११के कुछ मन्त्र द्रष्टव्य हैं जो निम्नलिखित हैं—ओम् मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मात् उत राजयक्ष्मात्। ग्रहिर्जग्राह यद्येतदेनं तस्या इन्द्राग्नि प्रमुमुक्तमेनम् ॥१॥

ओम् यदि क्षितायुर्यदिवापरेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव। तमाहरामि निर्ऋते रूपस्थादस्पार्शमेनं शतशारदाय—इत्यादि पूरा सूक्त इस विषय से भरा पड़ा है कि हवन से अज्ञात और ज्ञात रोग या राजयक्ष्मा रोग से यज्ञ द्वारा मुक्ति होती है।

उपरोक्त मंत्रों का संक्षिप्त भाव यह है कि हे जीव, तुझे सुखमय दीर्घायु प्राप्त हो इसलिये हवन द्वारा छुड़ाता हूं। जकड़ने वाले रोगों ने यद्यपि तुझे पकड़ रखा है तथापि इन्द्र (विद्युत) और ऋषि की सहायता से तू उन कष्टों से मुक्त हो सकता है। आयु समाप्त हुई हो, करीब मरने की अवस्था प्राप्त हुई हो, मृत्यु के समीप पहुंचा हुआ हो तो भी उसको उस विनाश की अवस्था से मैं वापस लाता हूं और १०० वर्ष की दीर्घायु प्राप्त कराता हूं ॥२॥

गोपथ ब्राह्मण उ० प्र० १-१९ में लिखा है भैषज्यका यज्ञा वा एते। तस्मात् ऋतु सन्धिषु प्रयुज्यन्ते। ऋतुसन्धिषु व्याधिर्जायते॥

अर्थात् ये औषधियों के जो बड़े-बड़े यज्ञ हैं, इसलिये ऋतु सन्धियों (ऋतुपरिवर्तन पर) में किये जाते हैं कारण कि व्याधियां ऋतु सन्धियों में उत्पन्न होती हैं। ऋतु परिवर्तन पर वायु बिगड़ती है। इससे रोग होते हैं। इन रोगों को रोकने के वास्ते ये औषधि यज्ञ किये जाते हैं। रोगनाशक, पुष्टिकारक और आरोग्यवर्धक बलवर्धक औषधियों का इन में हवन किया जाता है। अतः हवन-यज्ञ से दीर्घायु भी प्राप्त होती है और स्वास्थ्य को भी लाभ होता है।

होली का दहन जिसे कहा जाता है, वह बड़ा यज्ञ ही था, दीपमालिका पर दीपों की कतार और सुगन्धित दीप जलाना यह भी यज्ञ ही था। चैत्र मास में तथा आश्विन मास में एक वर्ष में दो समय ९ दिन तक बड़े-बड़े सामूहिक तथा प्रत्येक घर में व्यक्तिगत यज्ञ किये जाते थे। फलतः रोग के दर्शन नहीं होते थे। आज जितने डाक्टर, वैद्य बढ़ते जा रहे हैं, रोग उनसे कहीं ज्यादा वृद्धि पा रहे हैं। हमारे प्राचीन साहित्य

ऋग्वेद से लेकर पुराण ग्रन्थों तक में हवन की महिमा भरी पड़ी है। ब्रह्म-यज्ञ प्रातः सूर्योदय के समय सायं सूर्यास्त होते समय जो लोग करते हैं उन्हें फेफड़ों सम्बन्धी रोग क्षय, दमा आदि कभी न होंगे ऐसी हमारी मान्यता है।

हमने स्वयं घातक रोग चेचक पर अन्वेषण किया और एक ऐसी हवन सामग्री तैयार की कि कैसी भी भयानक चेचक हो, रोगी कितने ही बड़े कष्ट में हो, एक घण्टा सामग्री उसके पास जलाने पर वह सब कष्टों से पार हो आराम की नींद सोता है। चेचक का नामो-निशान तक न रहेगा।

हमारे प्राचीन साहित्य में मनुष्य समाज को नीरोग, स्वस्थ, बलवान् बनाने के हेतु अनेक यज्ञों का वर्णन है। अथर्ववेद ११वें काण्ड के ७वें सूक्त में वाजपेय, अग्निहोत्र, अश्वमेध और चातुर्मास्यादि का विधान है। मीमांसा दर्शन में महर्षि जैमिनि ने कहा है "स्वर्गकामो यजेत" अर्थात् जो स्वर्ग (सुख) की इच्छा करे वह यज्ञ करे। चूंकि वाम मार्ग के समय यज्ञों में भ्रष्ट मांसादि पदार्थों का प्रयोग किया जाने लगा था अतः यज्ञों से घृणा होना स्वाभाविक था। "यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म" अर्थात् यज्ञ सबसे उत्तम कर्म है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की कृपा से हमें श्रेष्ठ यज्ञों का ज्ञान हुआ है। यज्ञों द्वारा ऋषि प्रकृति पर अधिकार रखते थे। अतः यदि हम चाहते हैं कि हमारा जीवन सुख-ऐश्वर्य से पूर्ण और रोगों से रहित हो तो हमें दीर्घ जीवन प्रदान करने वाले यज्ञों का ग्राम-नगर-घर-महल्लों में अनुष्ठान करना चाहिये। आज संसार में वायु-प्रदूषण का भय सर्वत्र छाया हुआ है, जिससे बचने का एक मात्र उपाय यज्ञ ही है।

सुना जाता है कि बंगलौर या जामनगर में सूर्य किरणों के साथ घूमने वाला अस्पताल है, जो प्रतिक्षण घूमता रहता है। हमारे आचार्यों ने कहा है कि प्रातः निकलते सूर्य की शाम को अस्त होते हुए सूर्य की किरणों को छाती पर लेने से क्षय-टी. बी. नहीं होती, इसीलिए संध्या का विधान सूर्योदय और सूर्यास्त के समय ही है। आशा है शिक्षित जगत् वेद की उक्त आज्ञाओं का पालन कर स्वयं सुखी होगा और जनता को भी सुखी बनायेगा।

★

सफलता की सीढ़ी असफलता के डण्डों से तैयार होती है।

सबसे अधिक निर्धन वे है जिनकी सबसे अधिक इच्छायें हैं।

मुसलमानों के इरादे

—रामबाबू मिश्र 'रत्नेश'

अर्द्ध रात्रि को मुल्ला बोला मस्जिद की मीनार से
उठो मुसलमानो, भारत को गर्क करो तलवार से !
चैन न लेने दो काफिर को अपनी छिड़ी जिहाद से
कभी अलीगढ़ से दंगा तो कभी इलाहाबाद से
चोटी को दाढ़ी से बदलो गीता को कुरआन से
काशी को काबा से दिल्ली को इस्लामाबाद से
राष्ट्र भक्त का कत्ल करा दो मिलकर के गद्दार से
उठो······

वोटों के पीछे दीवाना भारत का नेतृत्व है
इसीलिये तो प्रजातंत्र में अपना बड़ा महत्त्व है।
पैसा तिकड़म दंगा गद्दारी जनमत की चोट से
इंशा अल्लाह कुछ दिन में ही भारत पर स्वामित्व है।
ले ऐटम बम चढ़े जिया-उल-हक जिस दिन सीमा पार से
उठो मुसलमानो······

पूर्वोत्तर प्रान्तों में ईसाई फैलाये दाम हैं—
काश्मीर में अब्दुल्ला दिल्ली में वली इमाम हैं—
खरबों में अरबों का रुपया हर मस्जिद से बँट रहा
सारा भारत एक साथ बोले कबूल इस्लाम है
काटो हर हिन्दू की गर्दन मिल कर मीठे प्यार से
उठो······

घूम रहा मेवाड़ महीपति अपने राजस्थान में
बैठा कहीं शिवाजी निश्चित गुरु-चरणों की आन में
वीर हकीकत बन्दा वैरागी अब भी हैं देश में—
सावधान ! ऐसा न कहीं हो रखना इतना ध्यान में
गुरु गोविन्द सिंह के बालक निकल पड़ें दीवार से
उठो······

मृत देह को गाड़ें नहीं, जलायें

—वि० स० विनोद

मनुष्य के मृत शरीर का अन्तिम कर्म संस्कार किस प्रकार किया जाय, इस सम्बन्ध में विभिन्न धर्म गुरुओं ने भिन्न-भिन्न प्रणालियां निश्चित की हैं, जैसे शव को गाड़ देना या उसका दाह संस्कार करना।

अधिकांश जनसंख्या मुर्दे को गाड़ने की प्रणाली पर ही चलती है। केवल हिन्दुओं के धर्मगुरुओं ने मुर्दे का दाह कर्म करने की प्रथा चालू की। उनका तर्क था कि यह वैज्ञानिक तरीका है। मुर्दे को जलाये जाने से उसका कोई भाग शेष नहीं रहता।

कुछ लोग यह आपत्ति करते हैं कि मुर्दे को जलाने से दुर्गन्ध फैलती है। इसीलिये हिन्दू या वैदिक प्रणाली में ऐसा प्रावधान था कि मुर्दे के वजन का घी तथा उतनी ही सामग्री के साथ मुर्दा जलाया जाय, जिससे दुर्गन्ध न फैले, मंहगाई व अज्ञान के कारण ऐसा नहीं किया जाता। लकड़ियों में ही मुर्दे को जला दिया जाता है।

मुर्दे के दाह कर्म की क्रिया एक वैज्ञानिक क्रिया है, पश्चिम के देश भी जहां मुर्दे को गाड़ने का रिवाज है, दाह कर्म को अपना रहे हैं।

अंग्रेज जब भारत में शासक बन गये, उन्होंने मुर्दे को जलाने का मजाक किया और इसे एक जंगली प्रथा बतलाया। अंग्रेज शासकों का रवैया था कि भारत की हर चीज के प्रति निरादर दिखाते थे और अपने रस्म-रिवाजों की प्रशंसा किया करते थे।

आज यूरोप तथा अमरीका के ईसाई यह मानने लगे हैं कि हिन्दुओं द्वारा मुर्दे को जलाने की प्रथा कम खर्च वाली तो है ही, वैज्ञानिक भी है।

अमरीका के अखबार 'हैराल्ड ट्रिब्यून' में इस सिलसिले में एक लेख प्रकाशित हुआ है उसमें दिये गये कुछ आंकड़े मैं अपने पाठकों की जानकारी के लिए यहां दे रहा हूं।

इस लेख में बताया गया है कि केलिफोर्निया राज्य के टेलीविजन पर छोटी-छोटी नावें दिखाई गई हैं, जिनमें अस्थियों को समुद्र में डालने के लिए ले जाते दिखाया गया है। अखबार ने लिखा है कि मुर्दों को गाड़ने के विषय में अमरीकियों के विचार में क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है।

अमरीका में आज तक मुर्दों को जलाने का सिलसिला कहीं भी नहीं था लेकिन आज यह एक राष्ट्रीय रूप धारण कर रहा है। सन् १९८२ में केलिफोर्निया में ३२.३ प्रतिशत मुर्दों को जलाया गया। जलाने की प्रथा इसलिए भी लोकप्रिय हो रही है कि यह कम खर्चीली प्रथा है। जलाने पर अधिक से अधिक ३०० डालर खर्च होता है, दफनाने पर १००० डालर खर्च होता है। जलाने की प्रथा से भूमि का बचाव भी होता है, गाड़ने में भूमि घिर जाती है। कुछ समय में ही जलाये जाने की प्रथा ४.९ प्रतिशत से बढ़ कर ११.७ प्रतिशत हो गई। सन् १९८२ में मरने वाले १९,८४,७०० में से २३१७८९ को जलाया गया। एक अनुमान के अनुसार ११वीं सदी के प्रारम्भ में ५० प्रतिशत से अधिक मुर्दों को जलाया जाने लगेगा।

ब्रिटेन में आज ७० प्रतिशत मुर्दे जलाये जाते हैं। केलिफोर्निया में १९८२ में ४१,२५८ मुर्दों को जलाया गया। ड्रेलज काउंटी में ४० प्रतिशत मुर्दों को जलाया गया।

अमरीका में कुछ संस्थाएं व्यापारिक रूप में पैदा हो गई हैं जो मुर्दों को जलाती हैं। उनके विरुद्ध कभी-कभी यह भी शिकायत की जाती है कि वे मुर्दे के दांतों से सोना निकाल लेते हैं। अब कई राज्यों में यह कानून बन गया है कि अस्थियों को दूसरी अस्थियों से न मिलाया जाय। गरीब लोगों के लिए जलाने की प्रथा लाभप्रद है, मुर्दा गाड़ने में खर्च बहुत होता था। लेकिन आज भी कुछ लोग धर्म के नाम पर इस नई प्रथा का विरोध कर रहे हैं। लेकिन कब्र बनाने के लिए जो सामान चाहिए वह बहुत कीमती हो गया है।

जापान में ९० प्रतिशत मुर्दों को जलाया जाता है। हवाई टापू पर भी जापान का प्रभाव है। वहां भी गत वर्ष ४६ प्रतिशत मुर्दे जलाये गये। परिस्थितियों से मजबूर होकर धर्म के नाम पर जो जलाने का विरोध करते थे, वह विरोध भी कम हो गया है।

पश्चिम एशिया के देशों में जलाने की प्रथा ने कोई जड़ नहीं पकड़ी क्योंकि वहां धर्म तथा परम्पराओं का प्रभाव अन्य जगहों की बनिस्बत अधिक है। लेकिन कब्रिस्तानों में भूमि चाहिए। इस बात ने वहां की सरकारों को भी

सोचने पर विवश कर दिया है। बड़े-गड़े शहरों में हजारों एकड़ कब्रिस्तानों के लिए सुरक्षित करनी पड़ती है ।

मेरठ नगर पालिका में १६५५-५६ में एक प्रस्ताव पास किया गया कि शहर की आबादी के अन्दर जो कब्रिस्तान आ गये हैं, इनकी जगह शहर बाहर कब्रिस्तान बनाये जायें, लेकिन बाहर कब्रिस्तान बनाने को भूमि न मिल सकी। दूसरे शहर से बाहर मुर्दे का ले जाने को सम्बन्धित लोग तैयार नहीं हुए। फलस्वरूप वह प्रस्ताव जैसा का तैसा ही पड़ा रहा।

देश की आबादी बढ़ रही है, जमीन तो बढ़ती नहीं, कम भले ही जाय। भारत की कुछ भूमि पाकिस्तान ने कब्जा रखी है, कुछ चीन ने। परिवार नियोजन भी यदि चलाया जाय। आबादी तो फिर भी बढ़ेगी, कम यह बात दूसरी है ।

यूरोप के डाक्टरों का मत है कि मुर्दे को दफनाने की बजाय उसका दाह संस्कार अधिक वैज्ञानिक है। इसलिये इसे अपनाना चाहिए। हिन्दुओं मनीषियों ने जलाने की प्रथा वैज्ञानिक आधार पर ही चालू की थी।

★

अमर वाणी

सूर्य बीमारियों को भगाता है ।

—ऋग्वेद

ये सूर्य की रश्मियाँ निश्चित रूप से गन्दगी को दूर करके हमारे लिए स्वास्थ्यवर्धक हैं ।

—शतपथ ब्राह्मण

विटामिन डी को प्राप्त करने का साधन सूर्य की किरणें हैं। जब हमारे शरीर पर पड़ती हैं तो हमारी त्वचा की चिकनाई से मिलकर वे शरीर में विटामिन 'डी' पैदा करती हैं। फिर वह त्वचा द्वारा ही हमारे शरीर घुलमिल जाती हैं। आर्यों ने इसीलिए प्रातःकाल स्नान के बाद 'सूर्योपस्थान मन्त्रों के जाप पर अधिक बल दिया है। आयुर्वेद में इसी की प्राप्ति के लिए धूप में बैठकर तेल मलने का विधान है। तेल की मालिश को घी खाने से अधिक गुणकारी बताया गया है।

—विज्ञान प्रगति

धूम्रपान अत्यन्त खतरनाक है

डॉ. एवरेट डब्लयू. बिट्जेल

आजकल भारत में सिगरेट के प्रत्येक पैकिट पर लिखा रहता है—"कानूनी चेतावनी—धूम्रपान स्वास्थ्य को हानि पहुंचाता है।" यह लेबल यों ही नहीं छापा जाता। जब एक आदमी इसके सम्भावित परिणामों पर गौर करता है तब वह इसका पूरा महत्त्व समझता है। जो हाथ मनुष्य को खिलाता है उसे वह तुरन्त चपतें नहीं जमाता। इसी तरह सिगरेट के बारे में काफी अर्से तक इसके वैज्ञानिक और डाक्टरी तथ्यों का विश्लेषण करने के बाद ही इस तरह का लेबल सब सिगरेट के पैकिटों पर लगाया जाता है।

तम्बाकू के—धूम्रपान के खतरों के बारे में विश्लेषण करने से पहले आइये हम गौर करें, लोग धूम्रपान के खिलाफ जबर्दस्त प्रमाण पाने के बाद भी क्यों धूम्रपान करते हैं?

आपके मानवीय मस्तिष्क में १,५०० करोड़ स्नायु कोशिकाएं है। आपकी चुनने की शक्ति या इच्छा-शक्ति इनमें से कुछ स्नायु कोशिकाओं द्वारा नियमित होती है। तम्बाकू के धुएं में निकोटिन, अलकतरा और अन्य विष मौजूद रहते हैं। निकोटिन ऐसा विष है जो पहले तो उत्तेजित करता है पर बाद में स्नायु कोशिकाओं को स्तम्भित कर देता है। इन दो तरह के कार्यों द्वारा ही विरोधात्मक लक्ष्यों की ओर दौड़ होती है। एक तम्बाकू कम्पनी दावा करती है कि "सिगरेट एक आदमी को ऊपर उठाता है।" दूसरी कहेगी, "सिगरेट आप को शान्त रखता है। इन दोनों दावों में केवल आधी बातें सच हैं क्योंकि दोनों तरह के सिगरेट दोनों काम करेंगे। ये पहले उत्तेजित करेंगे और तब आपकी कुछ स्नायु कोशिकाओं को स्तम्भित करेंगे।

इसके दूसरे प्रभाव के (स्तम्भित करने के) कारण कुछ मात्रा में सुख का बोध होता है जिसके परिणाम स्वरूप धूम्रपान करने की लत लग जाती है। इसके अलावा, धूम्रपान करने वाले की स्नायु कोशिकाओं पर यह प्रभाव विचार करवाता है कि वह धूम्रपान करने पर बढ़िया कार्य कर सकता है;

लेकिन हकीकत में वह बगैर धूम्रपान किये ही बढ़िया कर सकता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के मेरीलैंड विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक डाक्टर डॉनल्ड के : पमरोय ने सन् १९६१ में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के प्राप्त किये परीक्षांकों के अध्ययन की रिपोर्ट दी। अमेरिकन सांख्यिकीय संकेत के अनुसार (ए—४, बी—३, सी—२, डी—१, एफ—०) डाक्टर पमरोय ने देखा कि धूम्रपान नहीं करने वाले विद्यार्थियों ने सब से अच्छा किया। उन्होंने नोट किया कि धूम्रपान नहीं करने वालों की औसत संख्या रही १.९८, धूम्रपान करने वाले जो दिन में १० सिगरेट के हिसाब से पीते थे उनकी औसत संख्या १.९२, दिन में २० सिगरेट पीनेवालों की १.६१ और दिन में २० से अधिक सिगरेट पीने वालों की १.३८ रही। उच्च विद्यालय का यह और अन्य अध्ययन यही दिखलाते हैं कि धूम्रपान करने से मानसिक शक्ति घटती है।

अब हम फेफड़े पर नजर डालें। तम्बाकू के धुएं के अलकतरे से यह खास कर प्रभावित होता है। फेफड़े का कार्य है रक्त में के कार्बन-डायोक्साइड के बदले ऑक्सीजन देना। चूंकि फेफड़े नाजुक ऊतक हैं इसलिए हम देखें कि इनकी रक्षा सामान्य रूप से कैसे की जाती है। श्वसन तन्त्र के तीन मुख्य भाग हैं—नाक, श्वास-नली और फेफड़े।

परमात्मा के द्वारा नाक को इस तरह बनाया गया है कि यह कम-से-कम तीन कार्य करें—(१) धूल के कणों को हटाये या छाने [२] आवश्यकतानुसार हवा को ठंडा या गर्म करे, और [३] हवा में नमी लाये। इस रीति से इसका कार्य फेफड़े के नाजुक ऊतकों की रक्षा करना है। लेकिन मैं आप से पूछता हूं कि क्या आपने किसी को नाक द्वारा सिगरेट पीते देखा है? नहीं। धूम्रपान करने वाले अपने श्वसन तन्त्र के मुख्य भाग से कतराते हैं।

इसके अतिरिक्त वे गर्म, सूखे कणों से भरे धुएं को श्वास-नली द्वारा अपने फेफड़ों में घुसा देते हैं। यह तो हकीकत में खराब बात है। लेकिन इसके अतिरिक्त तम्बाकू धुएं का निकोटिन कुछ और अधिक करता है। श्वासनली के अस्तर में केश की तरह बनी चीजें हैं जिन्हें सिलिया (Cilia) कहते हैं। फेफड़े के नजदीक यदि कोई धूल के कण नीचे आयें तो उन्हें मुंह की ओर झाड़ दे कर ले आने के लिए ये मुंह पर थपेड़े देते रहते हैं। निकोटिन इन सिलिया को सुला देता है। इस तरह धूम्रपान करने वाले को जिसे झाड़ देने वालों की औसत व्यक्ति को अपेक्षा अधिक आवश्यकता है, दीख पाता है कि उसके सब झाड़ देने वाले हड़ताल में हैं। इनकी हड़ताल बैठे रहने या सोने

हने की है और इसलिए धूम्रपान करने वाला अपनी श्वास-नली की सफाई
लिए दूसरे दर्जे की प्रणाली—खांसने [धूम्रपान करने वाले की खांसी] पर
निर्भर करती है

इस रीति से यह चकित होने की बात नहीं है कि फेफड़े का कैंसर रोग
सिगरेट पीने की बढ़ती संख्या के अनुसार बढ़ता जाता है। जब धूम्रपान
करने वाला ऐसे धुएं की सांस लेता है, जिसमें निर्माण करने वाली कई चीजें
फेफड़े में जमती हैं तो क्या आप किसी और कुछ की आशा कर सकते हैं ?
आखिरकार उसके झाड़ देने वाले तो सो रहे हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका में फेफड़े का कैंसर भयानक रूप से बढ़ता जा
रहा है। सन् १९३० में ३,००० से कम कैंसर के रोगी थे, सन् १९५० में
१८,००० थे और १९५५ में २७,००० हो गये। सन् १९६२ में फेफड़े के
कैंसर से ४१,००० की मृत्यु हुई। इसी वर्ष [१९६२] इंगलैंड में जहां की
पुरुष-स्त्रियां अधिक संख्या में धूम्रपान करती हैं—फेफड़े के कैंसर से २५,०००
मरे जबकि उस की आबादी संयुक्त राज्य अमेरिका से एक तिहाई है। कितने
अधिक आदमी बच सकने वाले रोग से मरते हैं।

निकोटिन तम्बाकू का एक प्रभावशाली विष है जो तम्बाकू सूंघने, चबाने
और धूम्रपान करने की लत लगाता है। इसका विष इतना जहरीला है कि
एक चूहे के मुंह में एक छोटी बूंद निकोटीन डालने से वह मर जायेगा और
इसी बूंद का (५०-६० मिलीग्राम) यदि दवा के रूपमें मेरे सिर में इंजेक्शन
लगा दिया जाय तो मैं भी मर जाऊंगा। आपके लिए यह ताज्जुब की बात
होगी पर दो या तीन सिगरेटों में निकोटिन इतनी मात्रा में रहता है।

तो अधिक धूम्रपान करने वाले क्यों मर नहीं जाते ? इसके कम-से-कम
चार कारण हैं कि क्यों धूम्रपान करने वाले जल्दी नहीं मर जाते। (१) जलन
की प्रक्रिया द्वारा निकोटिन का अधिकांश भाग निष्क्रिय हो जाता है। (२)
निकोटिन का अधिकांश भाग जो शरीर में सोख लिया जाता है वह तेजी से
जिगर द्वारा निष्क्रिय कर दिया जाता है। (३) निकोटिन का क्षुद्र भाग बगैर
बदलाहट के गुर्दों द्वारा मूत्र से निकाल दिया जाता है। [४] धूम्रपान करने
वाले का शरीर खास मात्रा में निकोटिन के प्रति सहनशीलता खड़ी कर लेता
खैर, जो भी हो, तम्बाकू का व्यवहार व्यक्ति के सामान्य स्वास्थ्य को
१० खराब करता है। इसके धोखेबाज विष धूम्रपान करने वाले शरीर पर बुरा
प्रभाव डालते हैं। इसके प्रमाण इस प्रकार हैं—६९ वर्ष के अमेरिकनों में जब

१० धूम्रपान नहीं करने वाले मरते हैं तब २२ अत्यधिक धूम्रपान कर
मरते हैं और १७ कम धूम्रपान करने वाले।

निकोटिन के बारे में कहा जाता है कि यह खासकर उन स्नायु कार्यों को कुप्रभावित करता है जो शरीर के स्वचलित कार्यों को नि रखती हैं, जैसे भोजन की पाचन-क्रिया, दिल की धड़कन, रक्तचाप श्वसन प्रणाली। स्नायु प्रणाली के इस भाग को स्वतन्त्र स्नायुतन्त्र जाता है।

जब एक व्यक्ति अपने शरीर में निकोटिन लेता है तो उससे ये परिणाम हैं—छोटी रक्त वाहिकाएं बहुत-कुछ जकड़ जाती हैं जिससे रक्तचा जाता है। इसलिए दिल को अधिक ताकत लगाकर काम करना पड़ता विभिन्न अवयवों को रक्त मिले और इसके साथ निकोटिन दिल के स्ना को प्रभावित करता है जिससे दिल की धड़कन अधिक तेज हो जाती है। उन बैलों की तरह है जिनको अधिक भारी बोझ खिचवाया जाता है फिर उनको अधिक तेज भी चलवाया जाता है। यह तो खराब है ही वाहिकाएं जो दिल की मांसपेशियों को पोषण देतीं और उसमें आवश्य भरती हैं, निकोटिन के प्रभाव से बहुत-कुछ जकड़ जाती हैं। यह उन बैलों के समान है जिनसे अधिक जोर से काम करवाते हुए भूखा ही रखा जाता प्रत्येक आदमी जानता है कि इस तरह के व्यवहार से अच्छी तरह खि और अधिक प्रेम से व्यवहार किए गये बल की अपेक्षा औसत बैल कम में ही मर जायगा। धूम्रपान करने वाले का दिल भी इसी प्रकार है। जल्द यह घिस कर खत्म हो जाता है।

दोस्तो, यदि आप धूम्रपान करने वाले नहीं हैं तो आपको कितना अनुभव करना है। इसके विपरीत यदि आप धूम्रपान करने वाले हों तो जल्द ही धूम्रपान नहीं करने वाले बन सकते हैं। धूम्रपान करने वालों मदद करने के लिए हम लोगों ने बहुत-से धूम्रपान बंद करने की दिवसीय योजना के कार्यक्रम सफलतापूर्वक चलाये हैं। इसके फार्मूले का आप का चुनाव है—"मैं धूम्रपान नहीं करने के लिए चुनता हूं।" जब अपने चुनाव को साक्षात्कार होते हुए देखेंगे तो आप की इच्छाशक्ति अ मजबूत होगी। धूम्रपान त्यागने का सर्वाधिक सुविधा पूर्ण मार्ग है इसे एका त्याग दीजिए। सिगरेट पीना थोड़ा-थोड़ा करके कम करते जाना कुत्ते की को एक बार में एक इन्च काटते जाने के समान है। अपनी भूख को भ देने के लिए कई सप्ताह तक थोड़-थोड़ा निकोटिन देकर अपने जीवन

पने लिए दयनीय मत बनाइये। यदि आप सिगरेट छोड़ने के लक्षणों का मना करेंगे तो आप कितने बुद्धिमान् होकर एक ही सप्ताह में यह काम रा खत्म कर देंगे। इस सप्ताह में आप इन सात नियमोंका पालन कीजिए—

(१) खूब आराम कीजिए।

(२) आसानी से पचने वाला भोजन कीजिए जिसमें विटामिन और सायन अधिक हो (ताजे फल-सब्जियां)।

(३) मसालेदार भोजन और केफिन वाले पेयों [चाय, काफी, कोला] से र रहिये।

(४) पानी खूब पीजिए।

(५) ताजी हवा की कई गहरी सांसें प्रतिदिन लीजिए।

(६) अपनी मांस-पेशियों और इच्छा-शक्ति का व्यायाम कीजिए।

(७) शाम को शीतल, ताजगी देने वाला स्नान कीजिए और सुबह को र शीतल जल द्वारा पूरे शरीर को रगड़िये।

अपनी इच्छा-शक्ति का व्यायाम करने और इन सरल नियमों का पालन र के आप जल्दी ही देख लेंगे कि आप धूम्रपान नहीं करने वाले आनन्दित गों में से एक हैं।

अमर भारती

हमारी जीवनचर्या ऐसी हो जिससे यह सारा जगत् हमको बीमारियों से कर खुशी देने वाला हो।

—यजुर्वेद

अग्निदेव, तुम शरीर की रक्षा करो, आयु बढ़ाओ, शारीरिक स्वास्थ्य में भी कुछ कमी हो उसे पूरा करो, मेरा शरीर पत्थर की तरह दृढ़ हो।

—यजुर्वेद

वह देखो, इन्द्रियों के स्वास्थ्य को बढ़ाने वाले सबके चक्षु स्थानीय प्रकाश-सूर्य भगवान् सामने उदित हो रहे हैं। उनसे स्वास्थ्य को प्राप्त करते हुए सौ वर्षों तक देखें, जियें, सुनें, बोलें तथा किसी के आश्रित (मुहताज) न।

—यजुर्वेद

ऋषि दयानन्द का सच्चा सैनिक चला गया

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्

आज २१ दिसम्बर, १९८३ प्रातः ८ बजे आकाशवाणी के स बुलेटिन द्वारा महात्मा वेदभिक्षु जी के देहावसान का समाचा कर स्तब्ध रह गया। सहसा विश्वास ही नहीं हो रहा था कि भारतीय व संस्कृति का महान् जागरूक प्रहरी अब इस संसार में नहीं है। धर्म के प्रचार व प्रसार की जो तड़प महात्मा वेदभिक्षु के अन्तःकरण वह अनुपमेय है। वे एक शहीद की भांति जिए और शहीद की ही भां धरती से चले गये गत कई वर्षों से भयंकर बीमारी से पीड़ित होने के वे निरन्तर अनथक कार्य करते रहे और समग्र राष्ट्र में एक नयी नया साहस, नयी आशा का संचार करने में उस युग मानव ने अ सफलता प्राप्त की। "जनज्ञान" का "मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूं" मुर्दों में प्राण फूंकने वाला होता था। इस समय राष्ट्र में जो हिन्दू जागी है, उसका अधिकाँश श्रेय महात्मा वेदभिक्षु जी को है।

आर्यसमाज और अन्य हिन्दू नामधारी संस्थाओं के नेता केवल न सम्मान के लिए भाषणबाजी करते रहे हैं, लेकिन महात्मा वेदभिक्षु हिन्दुओं में नवजागरण का मंत्र फूंकने के लिए बलि पथ का अ किया। उनका पथ वही पथ था, जिस पथ पर महर्षि दयानन्द, अमर लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे तपःपूत व्यक्तित्व चले थे।

महात्मा वेदभिक्षु जी के पूर्व नाम पं० भारतेन्द्रनाथ से मेरा सन् १९६७ में हुआ, जब वे आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब के साप्ताहि 'आर्योदय' के संपादक थे। आर्योदय मेरे हाथों में अचानक पड़ उस समय मैं लखनऊ विश्वविद्यालय का छात्र था और ऋषि अथवा आर्यसमाज के कार्य-कलाप से परिचित नहीं था। आर्योदय

भारते
अन्य
का
आर्थि
दायक
प्रभा
'वढ़ो
दी।
से क
पं०
मेरी
बलिक
हैं।
के ले

दयान
रक्षा
'जनज्ञ
वेदभा
आजा
आगे
वे का
पालन
तो ऐ
जैसा
दिखा

गति
होगी
जी के
सकें,
होगी

भारतेन्द्रनाथ का सम्पादकीय पढ़ कर मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ। उसकी अन्य समस्त सामग्री भी मन को छूने वाली थी। उसी समय मैंने 'आर्योदय' का वार्षिक शुल्क (शायद आठ रुपया था) मनीआर्डर से भेज दिया। हालांकि आर्थिक कठिनाइयां इतनी विकराल थीं कि यह आठ रुपया अत्यधिक कष्टदायक महसूस हुआ। फिर मैं निरन्तर आर्योदय पढ़ता रहा। आर्योदय से प्रभावित होकर मैंने कविता लिखना प्रारम्भ किया और मेरी टूटी-फूटी रचना 'वह्रोप्रिय' पं० भारतेन्द्रनाथ जी ने प्रथम बार आर्योदय में प्रकाशित कर दी। इस प्रकाशन से मैं बेहद प्रसन्न हुआ और कई गुना अत्यधिक उत्साह से कविता लिखने लगा। इस प्रकार कविता लिखने की प्रेरणा मुझे पं० भारतेन्द्रनाथ जी से ही मिली, जिसका परिणाम यह हुआ कि अब मेरी कवितायें सारे भारत के न केवल आर्यसमाज से संबंधित पत्र पत्रिकाओं, बल्कि अन्य उच्च कोटि की पत्र पत्रिकाओं में भी निरन्तर प्रकाशित हो रही हैं। मैं अपना काव्य-गुरु पं० भारतेन्द्रनाथ जी को ही मानता हूं, क्योंकि उन्हीं के लेखों तथा उनके द्वारा दिए गए प्रोत्साहन से ही मैं निरन्तर लिखता रहा।

'जनज्ञान' का मैं उसके प्रथम अंक से ही ग्राहक हूँ। जनज्ञान ने महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार रूप देने तथा भारतीय वैदिक संस्कृति की रक्षा करने का अनुपमेय ऐतिहासिक कार्य किया है, इसमें कोई संदेह नहीं। 'जनज्ञान प्रकाशन द्वारा प्रकाशित अतुलित साहित्य एक ऐतिहासिक कार्य है। वेदभाष्य का प्रकाशन और उसका वितरण एक युग का परिवर्तन है। आजादी के पश्चात् आर्य समाज के उद्देश्यों, महर्षि दयानन्द के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने का जो कार्य महात्मा वेदभिक्षु जी ने किया, वह अनुपमेय है। वे कार्य को ही महत्त्व देते थे, कथन को नहीं। वे स्वयं वैदिक मर्यादाओं का पालन करते थे। यही आज के युग में उनकी सबसे बडी विशेषता थी। अब तो ऐसा लग रहा है कि आर्यसमाज अनाथ-सा हो गया है, क्योंकि उन जैसा त्यागी, तपस्वी व सच्चे अर्थों में निष्ठावान् कर्मठ कार्यकर्ता अब नहीं दिखाई दे रहा।

वैदिक साहित्य के प्रकाशन का कार्य तथा जनज्ञान का प्रकाशन अबाध गति से आगे बढ़ता रहे, यही उस युग मानव के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी। भारतीय सभ्यता व संस्कृति की रक्षा में हम भी महात्मा वेदभिक्षु जी के आदर्शों व उनके निर्देशित पथ पर चल कर अपना सर्वस्व समर्पित कर सकें, यही दयानन्द के उस सच्चे सेनानी के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी!

प्रभु से कैसे मिलें ?

—प्रेमप्रकाश वानप्रस्थी

संसार में मानव जब कृत्रिमता अधर्म, पाप, असत्य, भय, भटक आदि से ऊब जाता है तो प्रभु के आंचल की शरण चाहता है। उसकी शरण में सुख है, शान्ति है और आनन्द है। परमात्मा की शरण का मूल्य कोई विरला ही समझता है। जैसे बहरा कान का, गूंगा वाणी का और अन्धा आंख का मूल्य समझता है। जीवन को श्रेष्ठतम और शान्तिमय बनाने का सबसे सुन्दर और पवित्र उपाय प्रभुभक्ति ही है।

भक्ति एक आध्यात्मिक विवाह है। जैसे विवाह का अधिकार ब्रह्मचारी को है, व्यभिचारी को नहीं— ठीक यही बात भक्तिपर लागू होती है, क्योंकि प्रभुभक्ति ब्रह्मचारी ही कर सकता है। विवाह का उद्देश्य सन्तान है। इसीलिए प्रभुभक्त कहता है—'शान्ति' मेरी पत्नी, 'क्षमा' मेरा पुत्र, 'धर्म' मेरा भाई, 'दया' मेरी मित्र, 'सच्चाई' मेरी माता, 'ज्ञान' मेरा पिता और पितामह 'ईश्वर' है। क्या यह सारा परिवार नहीं ? परन्तु अब उसका कर्तव्य परिवार पूजा नहीं, ईश्वर और उसके प्राणियों की पूजा है।

ईश्वर-पूजा के स्थान पर बहुत से लोग मूर्तिपूजा भी करते हैं। मूर्ति और पूजा का कोई भी विरोधी नहीं, परन्तु मूर्ति और पूजा में से जब 'और' निकाल दिया जाये और दोनों को मिला दिया जाये, तो विरोध प्रारम्भ होता है। दूध और पानी दोनों ही ठीक हैं, परन्तु जब इनमें से 'और' निकाल दिया जाये तो विरोध होना स्वाभाविक है। इसका विरोध स्वामी शंकराचार्य, रहीम, कबीर, गुरु नानक देव, महर्षि दयानन्द ने किया। नहीं, नहीं, हम सभी करते हैं। हम सभी कहते हैं, मिलावट अच्छी नहीं। कौन है जो कहता है कि मिलावट अच्छी है।

बन्धुओ ! यदि मूर्ति ही ईश्वर होती तो महर्षि धारणा, ध्यान और समाधि द्वारा इतने प्रभु दर्शन का उपदेश न देते और न ही स्वयं संयमी बनने में कष्ट उठाते। यदि इन्द्रियां ही 'इन्द्र' को जान सकती होतीं, तो कभी

के प्रभु दर्शन हो चुके होते। अभी तक प्रभु दर्शन न होने का कारण हमारा गलत मार्ग चयन है। इन्द्रियों के विषय भौतिक हैं, आध्यात्मिक नहीं। ईश्वर का विषय आध्यात्मिक है, भौतिक नहीं। अतः हम जान गये, ईश्वर 'आत्मा का विषय है, इन्द्रियों का नहीं। अब स्पष्ट हो गया, ईश्वर इन्द्रियों से नहीं, आत्मा से ही जाना जाता है।

जिस प्रकार से कुशल रथवान् खराब मार्ग को छोड़कर, चाहे मार्ग लम्बा भी हो, अच्छे मार्ग से जाता है, वैसे ही भक्त इस शरीर रूपी रथ को जिसके इन्द्रियां रूपी घोड़े हैं उनको सुमार्ग से ले जाता है। कई लोग ऐसा समझते हैं कि जो भक्त हैं वे संसार छोड़ देते हैं। कहां जाते हैं? गंगोत्री। गंगोत्री तो संसार में ही है। बन्धुओ, वे संसार में रहते हुए भी संसार में ऐसे ही लिप्त नहीं होते, जैसे दूध में जिह्वा और जल में कमल। बस यही है संसार छोड़ना।

भक्त का आदर्श भगवान् हैं। आदर्श का अर्थ है उसके गुण-कर्म-स्वभाव को जानना और, धारण करना। भगवान् दयालु, कृपालु, रक्षक, पालक, पोषक और प्रेरक हैं। अर्थात् अनन्त हैं गुण उसके, अनन्त है शक्ति उसकी, अनन्त है ज्ञान उसका, अनन्त है दान उसका, अनन्त है धन उसका, अनन्त हैं गुणी उसके, अर्थात् अनन्त का सब कुछ अनन्त है। अतः उस गुणी के गुणों को जीवन में उतारना ही भक्ति है। जो केवल भांड के समान परमेश्वर का कीर्त्तन करता चला जाता है और अपने जीवन को नहीं सुधारता उसकी भक्ति व्यर्थ है।

भक्ति करने के लिये आहार, व्यवहार, विचार और आचार की शुद्धि तथा संयम को ही 'तप' कहा गया है। परन्तु कई 'पंच अग्नि तप' भी करते हैं। वे चारों ओर उपलों की अग्नि जलाकर सूर्य की धूप में बैठ जाते हैं। वास्तव में यह 'तप' नहीं है। पंच अग्नि तप का अभिप्राय यह है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ये पांच अग्नियां सब में जल रही हैं। जो इनमें रहता हुआ भी नहीं जलता, वही सच्चा साधु है।

प्रायः लोग यह समझते हैं कि भगवान् की भक्ति से भगवान् प्रसन्न होते हैं, मानो भगवान खुशामद पसंद हों। उन्हें समझ लेना चाहिये कि ईश्वर ऐश्वर्यों का निर्माता और दाता है, जो मानव को सुख-शान्ति, ज्ञान और आनन्द के रूप में प्राप्त होता है। अर्थात् भगवान् एक ज्योति स्तंभ (Light-house) हैं। इसीलिए भक्त कहता है तमसो मा ज्योतिर्गमय। अर्थात् मैं

अन्धकार से प्रकाश की ओर चलूं। यदि कोई द्वार बन्द करके बैठेगा तो सूर्य का कुछ नहीं बिगड़ेगा और न ही सूर्य इच्छा करता है कि आप उसके प्रकाश से अवश्य लाभ उठायें—लाभ पहुँचाना सूर्य की इच्छा नहीं, स्वभाव है। जल का स्वभाव जीवन देना है, न कि इच्छा करना कि लोग मुझे पियें! आप भक्ति से लाभ उठाओगे तो आपका ही लाभ होगा।

भक्त अन्याय, अत्याचार, व्यभिचार, अनाचार अर्थात् अधर्म का विरोध करता है। क्योंकि प्रभु भक्ति ने उसे कुन्दन बना दिया है अतः वह सहन नहीं करता। अब उसके गुण, कर्म और स्वभाव भगवान् से प्रेरणा लिए हुए हैं। अब वह अपने में एक विशेष 'आत्मबल' का अनुभव कर रहा है। पाप और पाखण्ड के विरुद्ध आवाज बलवान् ही उठा सकता है। कमजोर तो बोल ही नहीं सकता। बोले तो सुनता कौन है? सचमुच ऋषि की सच्ची और निर्भीक पुकार ने संसार को हिला दिया था। कई समझते हैं कि भक्त कर्म नहीं किया करते या उन्हें नहीं करने चाहिएं। परन्तु जब उनका जीवन आदर्श 'भगवान्' क्रियावान् है तो वे कैसे निकम्मे, आलसी, अकर्मी बने रह सकते हैं। भक्त के कर्म और कर्तव्य घटते नहीं बढ़ते ही जाते हैं, क्योंकि अब उसे अपने परिवार का नहीं, प्रभु के विशाल परिवार का निर्माण करना होता है।

भक्ति जीवन का अमृत सोपान है। भक्त का मार्गदर्शन भगवान् करते हैं। भक्त के भगवान् 'सहारा' और 'किनारा' होते हैं। अतः भक्त मार्ग का त्याग नहीं करता, जबकि सत्य मार्ग में महान् विघ्न आते हैं। भक्ति का अर्थ केवल अपना कल्याण नहीं, अपितु प्रभु से शक्ति पाकर हित करना है। "ईश्वर भक्ति में यदि समाज सेवा का भाव नहीं तो साधना अधूरी है।" इसका प्रमाण गुरु नानक देव, महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में हमारे सामने है। प्राप्त की हुई शक्ति को बांटो! बांटो!! बांटो!!! क्योंकि भगवान् की धरती ने किसी को अन्न देने से इन्कार नहीं किया, भगवान् के जल ने किसी को जीवन देने से इन्कार नहीं किया, भगवान् की वायु ने किसी को प्राण देने से इन्कार नहीं किया, भगवान् के सूर्य ने किसी को प्रकाश देने से इन्कार नहीं किया।

भक्त की पहचान बड़ी सरल है। अन्य लोगों की अपेक्षा उसकी मुखाकृति में आभा, प्रसन्नता, ओजस्विता और वार्ता करने में शान्ति और मधुरता का अनुभव, आंखों में करुणा, नम्रता, दया, पर दुःख कातरता इत्यादि गुण अवश्य होंगे। क्योंकि ये भगवान् के गुण हैं, जो संगति के प्रभाव से

आ जाते हैं। भक्त प्रेमियों को जब एक आस्तिक आनन्द विभोर देखता है तो उसे भी आनन्द की मस्ती चढ़ जाती है। उसका मन लट्टू हो जाता है। सब कुछ भूल जाता है। आनन्द भी इसीलिए आता है। ओ भक्त, तुझे इससे भी अधिक आनन्द चाहिये तो जहां तू सब कुछ भूल जाता है, वहां तू अपने आपको भी भूल जा। भ्रकुटि में जहां तिलक या बिन्दी लगाते हैं वहां प्राणों को स्थापित करके 'ओ३म् का ध्यान करता जा, करता जा। एक समय ऐसा आयेगा कि हृदय पटल पर ज्ञान और आनन्द की वृष्टि हुआ करेगी और तू जीवन्मुक्त कहलायेगा।

भक्ति में विचित्र शक्ति है। भक्त जलती हुई आग में कूद सकता है, बहती हुई नदी में छलांग मार सकता है। शेरों अर्थात् भयंकर वनों में रहना तो वह अपना सामान्य कार्य समझता है। उसे घबराहट, उसे चिन्ता, उसे अशान्ति नहीं होती, बच्चा बलवान् पिता के साथ रहते हुए कभी भय नहीं खाता। अपितु भक्त की भक्ति के प्रबल प्रवाह एवं प्रभाव से शेर, हिरण कुत्ता और बिल्ली, सर्प और न्योला, शेर और बकरी एक साथ रहने लग जाते हैं। भक्त की प्रत्येक क्रिया में शान्ति की—परस्पर प्रेम की छाप होती है। बन्धुओ, भक्त की भक्ति में बहुत कुछ छिपा है। पा जाओ तो बहुत अच्छा है। आप भगवान् की उपासना से भाग्यवान् बन सकते हैं।

प्रार्थना

सभी कुशलपूर्वक हों, सभी रोगरहित हों, सबका कल्याण हो, कोई दुःख-भागी न हो। —उपनिषद्

असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमृतत्व की ओर चलें। —उपनिषद्

सज्जन से की गई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं होती। —कालिदास

मैं राज्य नहीं चाहता, न स्वर्ग चाहता हूं और न पुनर्जन्म। मैं तो दुःख से सन्तप्त प्राणियों के दुःख-दर्दों को दूर करने की कामना करता हूं —रामायण

मैं कोई काम बिना प्रार्थना के किए नहीं करता। मेरी आत्मा के लिए प्रार्थना उतनी ही अनिवार्य है जितना शरीर के लिए भोजन। —महात्मा गांधी

यादें जो भुलाई नहीं जातीं

—राधेश्याम

(राधेश्याम जी) दयानन्द संस्थान के कार्यकर्त्ता हैं। सार्वजनिक समारोह में संस्थान का साहित्य बेचने का उत्तर दायित्व मुख्यतः इन्हीं पर है।)

कितना अजीब-सा लगता है जब मन में ख़याल आता है कि पिताजी (महात्मा वेदभिक्षु जी) नहीं रहे। कितनी अजीब विडम्बना है ईश्वर की। अभी भी लगता है जैसे जो कुछ भी हुआ है स्वप्न में देखा है।

जून १९८२ से लेकर अब तक की स्मृतियां मन को कभी-कभी इतना व्यथित कर देती हैं कि धैर्य का बांध टूट जाता है। अद्भुत और विलक्षण व्यक्तित्व था उनका। कार्यक्षेत्र में कट्टरसिद्धान्तवादी लेकिन किसी की भी परेशानी और दुःख उन्हें ऐसे उद्वेलित करते थे, मानो दूसरों की पीड़ा वे स्वयं भोग रहे हों। पिछली गर्मियों की बात है। मेरी तबीअत खराब थी। मुझे उल्टियां हो रही थीं। अम्माजी (राकेशरानी जी) आफिस के कार्य में व्यस्त थीं। मेरी हालत देखते ही स्वयं पोदीना हरा चीनी में मिलाकर दिया। कितने स्नेहमय थे कि कोई कल्पना नहीं कर सकता। अजमेर में ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी सम्मेलन में मुझे उनके साथ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। एक दिन मेरा पेट कुछ गड़बड़ था, मैंने खाना नहीं खाया था। मुझसे बोले— राधेश्याम तुम खाना नहीं खाते, ऐसा करो, ये लो पांच रुपये। जाओ और लिमका पी आओ। इससे तुम्हारा पेट भी ठीक हो जायेगा। दिल्ली शताब्दी सम्मेलन में मुझे वेद मन्दिर सुबह शीघ्र बुलाया गया था। मैं सुबह साढ़े छः बजे पहुँच गया। सभी लोग चाय वगैरह पी रहे थे। मैं चाय नहीं पीता। तभी स्वयं महात्मा वेदभिक्षु जी स्वयं मेरे लिए दूध गर्म करके लाये। मैं उनकी ममतामयी बातें कहां तक लिखूं? किसी भी कार्यकर्त्ता को कभी भी कार्यकर्त्ता की दृष्टि से नहीं देखा। उन्होंने सदैव सभी कार्यकर्त्ताओं को अपने परिवार जैसा ही स्नेह दिया। उनकी प्यारभरी डांट आज भी याद आती है तो हृदय को बींध देती है। उनकी अन्तिम डांट मेरे लिए ५ दिसम्बर की थी। ५ दिसम्बर जन-ज्ञान एजेन्सी भेजने के दिन की। वी०पी० पैकेट पर टिकट नहीं लग सके थे। काश मुझे पता होता कि······।

वह महान् आत्मा अब हमारे बीच नहीं हैं। परन्तु हमें उनके सपनों को नहीं भुलाना। हमें उनके कार्यों को आगे बढ़ाना है। हमें उनके नारे "हम सब हिन्दू एक हैं" को सदैव स्मरण रखना है। उन्होंने कभी भी अपने परिवार की चिन्ता नहीं की। सब कुछ दयानंद संस्थान की सेवा में अर्पण करते रहे। हम सबको भी पण्डिता राकेश रानी पर चल रहे, देशभक्ति के अपराध में २८ मुकद्दमों का जोश के साथ विरोध करना चाहिए। मेरे प्रिय नवयुवक साथियों- आपकी मां पर जुल्म ढाये जा रहे हैं और आप सोये हुए हैं कितना अजीब सा लगता है। जरा सोचो और हिम्मत के साथ कदम आगे बढ़ाओ। इस संसार से एक दिन सभी को जाना है और खाली हाथ जाना है इसलिए मोह, लालच को त्यागो। उस महान व्यक्ति की आत्मा की शान्ति के लिए देशभक्ति की लड़ाई में कूद पड़ो। उनकी बातें आज भी भुलाई नहीं जा सकतीं। वे सदैव ही प्रेरणा देती रहेंगी।

अनमोल मोती

जिसका पुत्र आज्ञाकारी हो, स्त्री कहना माने, मन में लोभ न हो, वह इस जीवन में स्वर्ग पा जाता है। —महाभारत

स्वर्ग से ऊपर कौन? जो शक्तिशाली होकर क्षमा करते हैं और जो दरिद्र होकर भी दान करते हैं। —महाभारत

सात्त्विक लोग स्वर्ग के अधिकारी होते हैं। —मनुस्मृति

पुण्य से सुन्दर स्त्री मिलती है, स्त्री से सच्चरित्र पुत्र होते हैं। पुत्रों से प्रतिदिन कीर्ति होती है और कीर्ति से यह लोक स्वर्ग के समान है। —भामिनीविलास

माता और मातृभूमि स्वर्ग से बढ़कर होती है। —बाल्मीकि

स्वर्ग और पृथ्वी सब हमारे अन्दर ही हैं। हम पृथ्वी से तो परिचित हैं, पर अपने अन्दर से बिल्कुल परिचित नहीं हैं। —महात्मा गांधी

जहाँ हमारी सुन्दर कल्पना आदर्श का नीड़ बनकर विश्राम करती है वही स्वर्ग है। वही विहार का, वही प्रेम करने का स्थल स्वर्ग है और वह इसी लोक में मिलता है। —जयशंकर प्रसाद

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव

ऋषि बोधोत्सव महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के तत्वावधान में सोल्लास मनाया गया । परम्परागत ढंग से इस वर्ष २३-२-८४ से २६-२-८४ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ श्री हरिओम् सिद्धान्ताचार्य (आचार्य उपदेशक विद्यालय टंकारा) के ब्रह्मत्व में हुआ ।

इस वर्ष पंजाब और हरयाणा में भीषण मारकाट होने के बावजूद आर्यों की उपस्थिति आश्चर्यजनक थी । आर्यों में उत्साह, उल्लास एवं ऋषि प्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ था । इस पर्व के कारण टंकारा जैसा छोटा ग्राम भी सुन्दरता से जगमगा रहा था । प्रथम दिवस उपदेशक महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा ऋषिभक्तों का स्वागत किया गया ।

इस उत्सव में जहां कर्मवीर पं० आनन्दप्रिय जी की अध्यक्षता तथा श्री हरिओम् सिद्धान्ताचार्य के संयोजन में उपदेशक विद्यालय टंकारा, आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ोदा व जामनगर तथा आर्य वीरदल ध्रागध्रा के छात्र-छात्राओं की वाद-विवाद, श्लोक पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, वहीं दूसरी तरफ उपरोक्त शिक्षा संस्थाओं के व्यायाम प्रदर्शन व सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया, जिससे उत्सव की शोभा में चार चांद लग गये । महात्मा आर्यभिक्षु व ट्रस्ट के यशस्वी मंत्री श्री रामनाथ सहगल के अनुरोध व अपील पर आर्य सज्जनों ने सोल्लास सात्त्विक दान भी दिया । पूर्णाहुति के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के प्रधान श्री मंगलसेन जी चोपड़ा के कर-कमलों द्वारा ध्वजारोहण हुआ जिसके संयोजक पं० देवव्रत शास्त्री चैम्बूर, बम्बई वाले थे । उसी समय निकाली गई शोभा यात्रा में आर्यों का उत्साह दर्शनीय था, जिसे देखकर प्रत्येक नर-नारी को अजमेर की दयानन्द निर्वाण शताब्दी की शोभा यात्रा का स्मरण हो जाता था । यह शोभा यात्रा महालय से प्रारम्भ होकर टंकारा की मुख्य गलियों से होकर आर्यसमाज मन्दिर, मेन बाजार, ऋषि जन्म गृह, ऋषि बोध मन्दिर इत्यादि स्थलों से होती हुई पुनः महालय में समाप्त हुई । ...

वर्ष की श्रद्धांजलि सभा में हजारों ऋषिभक्तों ने अपने आचार्य-प्रवर देव दयानन्द के चरणों में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस के ऋषि लंगर की व्यवस्था आर्यसमाज, कच्छ (भुज) और घाटकोपर, बम्बई वालों ने की। ट्रस्ट को इस कड़ी जिम्मेदारी से मुक्त करने के लिए सभी आर्यों ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस वर्ष आर्य जगत् के महान् विद्वान् प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर, आचार्य वीरेन्द्रमुनि जी, (अध्यक्ष विश्व वेदपरिषद्, लखनऊ) स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती (योगेन्द्र पुरुषार्थी), महात्मा आर्यभिक्षु (हरिद्वार), स्वामी सत्यपति व आर्य जगत् के महान् भजनोपदेशक श्री पन्नालाल "पीयूष", माता शिवराजवती व उपदेशक विद्यालय टंकारा के स्नातक श्री मोहनकुमार "चन्दनबाबू" व विद्य व्रत इत्यादि महानुभावों ने अपने सारगर्भित भाषणों व भजनों से आर्य जनता को कृतार्थ किया।

इस उत्सव की सम्पन्नता का सम्पूर्ण श्रेय ट्रस्ट के यशस्वी मंत्री श्री रामनाथ सहगल, दिल्ली व मैनेजिंग ट्रस्टी श्री ओंकारनाथ, बम्बई को है। इन्हीं के सहयोग से अनेकों दानी महानुभावों ने ट्रस्ट के कार्यों को अपने सात्त्विक दान से गति प्रदान की, जिनमें श्री शान्तिप्रकाश जी बहल, दिल्ली व श्रीमती विनोद भसीन (कुवैत) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम को दूरदर्शन (टी० वी०) पर भी दिखाया गया।

अनमोल मोती

मुझे सदा आनन्द, मोद प्रमोद और प्रसन्नता की मनःस्थिति में रखिए। वही मेरे लिए स्वर्ग है। —ऋग्वेद

ज्ञान सब पदार्थों का आधार है। ज्ञान सबसे बड़ा लाभ है। ज्ञान ही सबसे बड़ा कल्याण है। भले पुरुष ज्ञान को स्वर्ग ही समझते हैं। —महाभारत

स्वर्ग में जाने का द्वार प्रेम ही है। —टाल्स्टाय

सबसे बड़ी उदारता दूसरों को क्षमा कर देने में है।

हिन्दू समाज की रक्षा

—आनन्दशंकर पंड्या

हिन्दू समाज की रक्षा के लिए तीन तरह के कार्य आवश्यक हैं।

[१] समाज को जाग्रत करने के लिए झूठे प्रचारों का खण्डन कर सही विचारों का प्रचार करना,

[२] गरीब पिछड़े वर्ग के आर्थिक उत्थान के लिए धन एकत्र कर उनकी सेवा की योजनाएं पूरी करना।

[३] राजनीतिक क्षेत्र में हिंदू समाज को न्याय दिलवाना तथा राजनीतिक स्वार्थों के लिए हिन्दू समाज का जो अहित किया जा है उसका विरोध करना। ये तीनों कार्य एक साथ च चाहिए।

इसमें प्रथम कार्य ज्ञान प्रचार का है जिसके द्वारा तीनों कार्य सरल जाते हैं तथा थोड़े साधनों से फल अधिक मिलता है। एकात्मता यात्रा के इस कार्य पर जोर देना चाहिए। आज हिन्दू समाज को प्रेस का, व्यापारियों का, उद्योगपतियों का तथा राजनीतिज्ञों का सहयोग नहीं मि रहा है क्योंकि उन्हें भविष्य में आने वाले खतरे की जानकारी नहीं है। हिन्दू समाज के उत्थान-पतन में अपनी कुछ जिम्मेदारी नहीं समझते अधिकतर लोग अपने स्वार्थ साधन में ही लगे हुए हैं। जिनके पास साधन शक्ति है उनमें समाज व देश के प्रति भावना की कमी है तथा जिनमें भाव है उनके पास साधन नहीं हैं। यह कमी प्रचार द्वारा ही धीरे-धीरे दूर जा सकेगी। यह कमी ईसाइय, इस्लाम, यहूदी व अन्य धर्मों के साधन सं लोगों में नहीं मिलती है। मैं अपने व्यापार के सिलसिले में सारे विश्व में घू हूं और मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव से यह कहता हूं। हमें आज समाज विचारों की क्रान्ति लानी है। जिस तरह तिलक ने "स्वराज्य हमारा ज सिद्ध अधिकार है" यह विचार फैलाया। इससे इतने बड़े ब्रिटिश साम्राज्य भारत से हट जाना पड़ा। इसी तरह विश्व हिन्दू परिषद् "हिन्दुत्व की

करना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है", "हिन्दू धर्म ही सारे भारतवासी व समस्त मानव समाज को सुख-शांति दे सकता है"। "हिन्दू धर्म के प्रचार से ही भारत में अपराध, हिंसा व भ्रष्टाचार दूर हो सकता है"—ये विचार भारत तथा विश्व में फैलाये ताकि हिंदू धर्म व संस्कृति की चर्चा फैशन में आ जाये, आम जनता हिन्दू धर्म की रक्षा के कार्य को प्राथमिकता दे और धनवाले लोग शादी-विवाह में अनावश्यक तौर पर १० लाख खर्च करने की बजाय उसका आधा हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये दें।

इसके लिये सर्वप्रथम अपने घर व आफिस के प्रत्येक व्यक्ति में अपने रिश्तेदारों व पड़ोसियों में पक्की हिन्दुत्व की भावना भरनी चाहिये तथा देश के आधुनिक बुद्धिजीवी वर्ग को समझना चाहिये कि आज नकली सेक्युलरिज्म का नारा हिन्दू समाज को नष्ट करने का साधन बन गया है।

हिन्दुओं ने आज तक इतिहास से कोई सबक नहीं सीखा है तथा वे किसी समस्या की गहराई में नहीं गये। अब जो संकट आया है उसके द्वारा सारा हिन्दू समाज जाग्रत हो सके तो भारत का भविष्य पुनः अद्वितीय हो सकता है। हजार वर्ष की गुलामी के बाद आज हिंदू स्वतन्त्र है तथा वह चाहे तो अपना आमूल चूल परिवर्तन कर सकता है जिसके लिए विश्व हिंदू परिषद् का प्रचार-तंत्र और तेज होना चाहिए। इसे हिन्दुओं में यह विश्वास पैदा करना है कि यदि देश के समस्त हिंदू एक होकर हुंकार दें या अपने हाथ ऊंचे कर दें तो इनकी समस्त समस्याएं हल हो जायेंगी पर हिन्दू यदि एक होकर काम नहीं कर सके तो बाजी इनके हाथ से निकल जायेगी। फिर वे अपना सब कुछ अर्पण करके भी कुछ नहीं कर सकेंगे।

जन जागरण अभियान व एकात्मता यात्रा के बाद सौभाग्य से आज लोगों में हिन्दू धर्म की रक्षा का साहित्य पढ़ने की रुचि बढ़ रही है। यदि भेजे गये लोगों में २० प्रतिशत लोग भी उसे पढ़ते हैं तो इस साहित्य का भेजना सार्थक हो जाता है। छोटे शहरों के लोग अधिक पढ़ते हैं। इतिहास में भारतवर्ष के दो प्रतिशत लोग ही हमेशा देश की राजनीति को प्रभावित करते रहे हैं। आज लोकतन्त्र में भी वही हाल है। अंग्रेजों ने देश के दो प्रतिशत लोगों को ही अपने विचारों में ढाला। उनमें से जो नेता बने वे विदेशी विचारों के समर्थक रहे अतः वे आज देश की राजनीति को विदेशी ढंग से चलाना चाहते हैं जिससे सब विसंगतियां और भेद उत्पन्न हो रहे हैं। देश के सब साधन व शक्ति उन्हीं के हाथ में हैं अतः उनमें प्रचार के लिए निम्नलिखित उपाय किये जाने चाहिए।

[१] प्रचार साहित्य, पेम्फलेट तथा छोटी पुस्तिकाओं के रूप में आकर्षक टाइटिल देकर और तैयार करवाकर देश के लगभग १५०० प्रभावशाली व्यक्तियों को हर महीने भेजे जाने चाहिये। इसके लिये एक लिस्ट तैयार की जानी चाहिये जिसमें एम. पीज़, प्रेस संपादक, लेखक, उद्योगपति इत्यादि जीवन के हर क्षेत्र के लोग शामिल हों। यह साहित्य होटलों में भी रखा जाना चाहिये। यह साहित्य विदेशों में रहने वाले हिन्दुओं को भी भेजा जाना चाहिये।

[२] आज के युग में हिन्दू संस्कृति की उपयोगिता व इसकी रक्षा के लिए आवश्यक उपायों से संबंधित कुछ टेप संक्षेप में सब भाषाओं में तैयार करवाकर कार्यकर्ताओं में वितरित किये जाने चाहिये। इसमें छुआछूत जैसी कुरीतियों के विरुद्ध वेद तथा धर्म शास्त्रों के वाक्यों का उद्धरण होने चाहिये। इस विषय पर धर्माचार्यों के इंटरव्यू लेकर उनका टेप वितरण करना चाहिये। कुछ विशेष अवसरों के वीडियो टेप भी तैयार करवाकर छोटे शहरों व गावों में दिखाने चाहिए। हिन्दू धर्म के प्रचार के लिए कुछ लघु फिल्में भी बनवानी चाहिये।

[३] जहां सम्भव हो वहां स्कूल-कालेजों में एक बोर्ड लगवाना चाहिये जिसपर वेद, उपनिषद् व गीता के वे वाक्य लगवाने चाहिये जो नई पीढ़ी में कर्मठता का संचार करें। इस तरह के बोर्ड रेलवे स्टेशनों तथा सड़कों के चौराहों पर भी लगाने चाहिये।

[४] हम हिन्दू धर्म व हिन्दू समाज की रक्षा करने के कार्य को सर्वाधिक महत्व देते हैं व हम सब हिन्दू एक हैं। इस तरह की प्रतिज्ञा घर-घर जाकर करवानी होगी। इसमें नारियां व विद्यार्थी पूर्ण सहायता दें। एकात्मता यात्रा के बाद यह "एकात्मता आंदोलन" होना चाहिये।

[५] विविध भारती तथा सीलोन रेडियो के भारत में २५ करोड़ श्रोता हैं अतः उसके द्वारा हर रविवार को हिन्दू धर्म की महानता का प्रचार करना चाहिये कि हिन्दू धर्म विश्व के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इस कार्य के लिये विदेशों में बसने वाले हिंदुओं को चाहिए कि वे वहां एक प्रचार संस्था बनायें।

[६] बड़े धर्माचार्यों, धार्मिक संस्थाओं तथा मन्दिरों का निर्माण हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए हुआ था। चर्च और मस्जिद अपना कार्य कर रहे हैं। इसी तरह मन्दिरों को भी अपना कार्य करना चाहिए। सारा

हिन्दू समाज उनकी ओर इस आशा से देख रहा है। प्रचार कार्य के अलावा उन्हें चाहिये कि वे अपने भक्तों के जीवन की कुछ समस्याओं को हल करने की कोशिश करें। उदाहरणस्वरूप शिक्षा व चिकित्सा के लिए स्कूल व अस्पताल बनवायें। विवाह की समस्या हल करने के लिए विवाह सम्मेलनों की व्यवस्था करें। इस तरह वे हिन्दू समाज के अभ्युदय के केन्द्र बन सकते हैं। मंदिरों की अपार संपत्ति का उपयोग धर्म के प्रचार व धर्म की रक्षा के लिये होना चाहिये तथा सबका एक संगठन होना चाहिये। अन्यथा चर्च व इस्लाम के संगठित प्रसार के सामने असंगठित मंदिर व मठ नहीं टिक सकेंगे। हमें दूसरों से उनका संगठन व एकता सीखनी होगी।

[७] देश के सब धार्मिक नेता मिलकर हिन्दू धर्म का मूल तत्त्व व सार निकालकर वैज्ञानिक हिन्दू धर्म के नाम से एक पुस्तक छपवायें।

[८] हिन्दू धर्म के प्रचार के लिए छोटे-छोटे विज्ञापनों का अधिकाधिक उपयोग करना चाहिये। आज के युग में लोगों के पास पुस्तकें पढ़ने का समय नहीं है। समाचारपत्र सब पढ़ते हैं। उसमें से दसवां हिस्सा भी यदि लोग विज्ञापन पढ़ें तो विचार अतिशीघ्र फैलेंगे तथा लोगों का विश्व हिन्दू परिषद् में विश्वास बढ़ेगा। इससे लाभ यह है कि सेक्युलरिज्म के नाम पर हिन्दू समाज का जो मुंह बन्द कर दिया गया इसे अपना अधिकार वापस मिलेगा! नेताओं को हिन्दू शब्द के नाम से जो अलर्जी हो गई है वह दूर होगी। हिन्दुओं में आत्मविश्वास जाग्रत होगा। विधर्मी लोग हिन्दू धर्म की निन्दा में दिन रात लगे हुए हैं। उनका मुंह बन्द करना आवश्यक है। अन्यथा हिन्दुओं की नई पीढ़ी में अपने धर्म के प्रति हीनता की भावना उत्पन्न हो जायेगी। अत: विज्ञापन द्वारा प्रचार का यह कार्य अत्यन्त महत्त्व का है। हिंदू धर्म की रक्षा का कार्य करने वालों को निरन्तर धन्यवाद देकर उनका उत्साह बढ़ाना चाहिए जैसा कि ईसाई व मुसलमान करते हैं।

[९] समाचारपत्रों में हिन्दू धर्म व समाज को हानि पहुंचाने वाली गलत खबरों को सनसनीखेज बनाकर उन्हें प्रमुख स्थान दिया जाता है जबकि हिन्दू धर्म की अच्छी बातों को अन्दर एक कोने में दो लाइन में छापा जाता है। इन बातों का विरोध पत्रों द्वारा समाचार पत्रों में करना चाहिये। इस कार्य के लिए हजारों व्यक्ति तैयार किये जाने चाहिये। विरोध की सिर्फ चार लाइनें ही काफी हैं। हमारे कार्यकर्ता यह कार्य शुरू करें।

[१०] दीवारों पर ऐसे नारे लिखवाने चाहिये कि "सब हिन्दू एक हैं", "अस्पृश्यता मानवता पर कलंक है", "हिन्दू धर्म की शिक्षा द्वारा हिंसा व

अपराध दूर करो" इत्यादि ।

[११] हिन्दुओं को जगह-जगह इस बात के लिए सत्याग्रह करना चाहिये कि—

[क] स्कूलों कालेजों में हिंदू धर्म की शिक्षा अनिवार्य की जाये ताकि भावी पीढ़ी को नैतिकता व मानवमूल्यों का ज्ञान हो सके। मेरे समय में गीता के कुछ चुने हुए श्लोक व हिन्दू धर्म पर एक छोटी सीपुस्तक कोर्स में थी जिसके कारण ही मेरी हिन्दू धर्म में रुचि हुई।

[ख] देश में परिवार नियोजन का कार्य किसी वर्ग या संप्रदाय की मर्जी पर न छोड़कर उसका सब के द्वारा आवश्यक रूप से पालन करवाने के लिये कड़े कानून बनवाये जायें।

[ग] धर्म परिवर्तन द्वारा हिन्दू धर्म अर्थात् मानव धर्म को नष्ट करने के जो षड्यंत्र हो रहे हैं उन्हें शीघ्र खत्म किया जाय।

[घ] प्राचीन ऐतिहासिक स्थान जिनका मूल्य अरबों रुपया है सरकार ने मुसलमानों को नमाज पढ़ने के लिये सौंप दिये हैं। इसी तरह हिन्दुओं को भी उनके ऐतिहासिक मंदिर वापस मिलने चाहिये।

[१२] व्यापारी अपने व्यापार के जो विज्ञापन देते है वे उनमें कुछ वेद-वाक्य व गीता के वाक्य अर्थ सहित लिखें ताकि जनता को हिन्दू धर्म का ज्ञान हो। दीवाली के कार्डों में भी वेद व गीता के वाक्य लिखवाने चाहिए ताकि हिन्दू धर्म की चर्चा फैशन में आ जाय। आज का समाज वही काम करने लगता है जो फैशन में आता है।

[१३] हिन्दू धर्म पर स्कूलों में विद्यार्थी निबंध लिखें और सर्वश्रेष्ठ निबंध व लेख पर १० हजार रुपये का इनाम प्रतिवर्ष दिया जाये।

[१४] उद्योगपति अपनी मिलों में हिन्दू धर्म का ज्ञान मजदूरों को दें, उनके स्वास्थ्य व शिक्षा का उचित प्रबंध करें तथा उन्हें सच्चे हिन्दू बनायें ताकि वे तोड़फोड़ व हिंसा से दूर रहें।

[१५] मां-बाप अपने बच्चों को हिन्दू धर्म की शिक्षा स्वयं दें जैसे ईसाई व मुसलमान देते हैं तथा हरेकृष्ण मंदिर वाले अपने बच्चों को देते हैं।

[१६] पार्लमेंट में हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये एक लाबी एम.पी.ज की बनानी चाहिये। विश्व की आबादी का दसवां भाग हिन्दू है। अपनी संस्कृति

की रक्षा करना उसका जन्मसिद्ध अधिकार है।

[१७] व्यापारी अपनी आमदनी का कम से कम पचासवां भाग हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये अवश्य निकालें—अधिक से अधिक दसवां भाग।

हिन्दू जनता को क्या करना चाहिये ?

[१८] हिन्दू धर्म किसी धर्म के प्रति घृणा नहीं फैलाता, क्योंकि यह सब धर्मों की माता है। पर आज यह धर्म व समाज विदेशी गतिविधियों के कारण अत्यंत खतरे में है। अतः जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में काम करने वाले हिन्दू जीवन का सर्व प्रथम उद्देश्य हिन्दू धर्म की रक्षा करना मान, इस विषय की पुस्तकें, लेख व भाषण पढ़े। मनोरंजन में से कुछ समय निकालकर यह कार्य करें। ६० वर्ष की उम्र के ऊपर के लोग समाज सेवा का कार्य करें तथा मंदिरों में पूजा करने की बजाय अब उनकी रक्षा का कार्य करें। यही सच्ची पूजा है। यह कार्य १,००० वर्षों से उपेक्षित होने के कारण अधिक आवश्यक हो गया है।

[१९] अपने भोगविलास पर खर्च कम करके वह धन अपने गरीब भाइयों की सेवा में लगायें। अत्यंत गरीबी व सैंकड़ों वर्ष के शोषण के कारण लोग धर्म परिवर्तन के लिये लाचार हो रहे हैं। इसी तरह छुआछूत की भावना भी समाज से पूर्णतया निकाल दें।

[२०] जहां भी एकत्र हों हिंदू समाज की रक्षा के विषय में चर्चा करें ताकि यह विषय फैशन में आ जाये।

[२१] भ्रष्ट नेताओं व फिल्म ऐक्टरों को सुनने, देखने व मान देने की बजाय उन व्यक्तियों का आदर करें जो राष्ट्र प्रेमी, समाज के सेवक व रक्षक हों। ऐसे व्यक्तियों की हर तरह से मदद करें ताकि वे अपना कार्य बढ़ा सकें।

ये योजनाएं सिर्फ योजनाएं नहीं हैं। ये व्यावहारिक हैं तथा इनमें से कुछ को मैं स्वयं २ वर्ष से अमल में ला रहा हूं। मैंने विश्व हिन्दू परिषद् के नाम से इंडियन एक्सप्रेस के सब केन्द्रों से, टाइम्स ऑफ इंडिया, नवभारत टाइम्स तथा अन्य समाचारपत्रों में जिस तरह के विज्ञापन छपवाये हैं उनके उत्तर में सैंकड़ों पत्र विश्व हिन्दू परिषद् को आते रहते हैं। सीताराम जी गोयल की कई पुस्तकें सब एम.पी. को बँटवा दी हैं तथा देश के २०० उद्योगपतियों व धर्माचार्यों को भी भेजी हैं। इस तरह के कार्य कोई भी सरलता से कर सकता है। लोग जो कार्य करें उन्हें परिषद् की मीटिंगों में अवश्य बतलायें

ताकि दूसरों को उससे प्रेरणा मिले। आज हिन्दू समाज के जीवन-मरण का प्रश्न शुरू हो गया है। अतः हमें किसी तरह भी इन योजनाओं को पूर्ण करवाना होगा। साथ ही गरीबों की सेवा व हिन्दू समाज के राजनीतिक अधिकारों के लिये भी संघर्ष चालू रखना होगा। इस कार्य के लिये निःस्वार्थ कार्यकर्ताओं की ट्रेनिंग बहुत आवश्यक है जैसा मिशनरी लोग करते हैं। मिशनरियों के कार्य करने के ढंग का अध्ययन करके हमें अपनी योजनाएं बनानी चाहिये।

विज्ञापन द्वारा जागृति

अब पुनः मैं विज्ञापन के विषय पर आता हूं।

एकात्मता यात्रा से हिन्दू समाज को शक्ति प्राप्त हुई है। उसे शीघ्र बढ़ाना है तो यह विज्ञापन द्वारा ही हो सकता है। विचार फैलाने का यह सबसे सस्ता साधन है। सत्य का प्रचार व असत्य का भंडाफोड़ करने का कार्य आज धन खर्च करके विज्ञापन द्वारा हो सकता है। इसके लिये ४० लाख रुपया खर्च किया जाना चाहिये। मेरे मन में विज्ञापन देने का प्रथम विचार तब आया जब सूचना मंत्री श्री साल्वे ने कहा कि विज्ञापन सामाजिक परिवर्तन का साधन बन सकता है। उसके बाद जब कुछ नेताओं ने विश्व हिन्दू परिषद् पर रोक लगाने की बात की तब मैंने जनता व राजनीतिज्ञों को परिषद् का उद्देश्य समझाने के लिये विज्ञापन की सिरीज शुरु की। इस कार्य में मुझे महाराणा भगवत्सिंह जी का आशीर्वाद व बहुमूल्य परामर्श हमेशा प्राप्त हुआ है। विज्ञापन का खर्च जनता के कुछ लोग भी उठा सकते है। वे अपने नाम से विज्ञापन दिलवा सकते हैं। यदि ४-१० लोग मिल कर कोई विज्ञापन देना चाहते हैं तो उन सबका नाम विज्ञापन में दिया जा सकता हैं। श्री पुल्ला रेड्डी हैदराबाद तथा श्री पुरुषोत्तमदास झुनझुनवाला इस कार्य के लिये तैयार हो गये हैं।

विज्ञापन अत्यंत संयत भाषा में देना चाहिये जिसमें किसी अन्य धर्म की निंदा नहीं होनी चाहिये। अन्यथा सांप्रदायिकता फैलाने का मुकद्दमा चल सकता है।

अभी तक १० विज्ञापन अखिल भारतीय स्तर पर निकाले जा चुके हैं। इनका अनुवाद प्रांतीय भाषाओं में करवा कर अखबारों में छपवाना चाहिये। इन विज्ञापनों द्वारा परिषद् के एक लाख सदस्य बनाये जा सकते हैं तथा धन संग्रह भी किया जा सकता है। पर धन संग्रह के कार्य के लिये विज्ञापन

का प्रयोग करने के लिये पहले केन्द्रीय कार्यालय से सलाह लेनी चाहिये। लगभग ४०० पत्र जो विज्ञापनों के उत्तर में आये हैं उनमें हिन्दुओं के हृदय की व्यथा लिखी है। लगभग सभी ने इस बात की मांग की है कि—

[१] हिन्दुओं के साथ जो अन्याय किया जा रहा है वह शीघ्र दूर होना चाहिये।

[२] हिन्दुओं की उदारता का दुरुपयोग किया जा रहा है। यह बन्द होना चाहिये।

विश्व हिन्दू परिषद् अपने कार्य में आगे बढ़े। हम हिन्दू उसके साथ हैं।

एकात्मता रथ यात्रा बहुत सफल रही। इस तरह के और कार्यक्रम होने चाहिये।

[३] हमारे राजनीतिज्ञ हिन्दुओं को धोखा दे रहे हैं।

[४] हिन्दू धर्म के बारे में हमें साहित्य भेजिये।

[५] हरिजनों के साथ न्याय होना चाहिये तथा छुआछूत और दहेज जैसी सामाजिक बुराइयां शीघ्र दूर होनी चाहिये। हरिजनों को समान आदर मिलना चाहिये। तभी धर्म परिवर्तन रुक सकता है।

ये पत्र भारत के प्रत्येक कोने से आये हैं। कश्मीर, बंगाल, उत्तर प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र पर अधिकतर पत्र दक्षिण से आये है। कुछ पत्र जर्मनी, नाइजीरिया, साउदी अरब, मस्कट, आबूधाबी इत्यादि में बसने वाले हिन्दूओं के भी आये हैं। इन पत्रों को पढ़ने से जनता के हृदय की भावनाएं मालूम पड़ती है जो हमें अपने भविष्य का कार्यक्रम बनाने में सहायक हो सकती हैं। इन पत्र लिखने वालों में से कुछ अच्छे कार्यकर्ता भी हमें मिल सकते हैं।

विज्ञापनों की जेरॉक्स कापियां करके सरकारी अफसरों, एम० पी० ज तथा राज्यों और केन्द्र के मंत्रियों को भेजें। जो राजनीतिक नेता हिन्दू धर्म की निंदा करते हैं अथवा परिषद् पर रोक लगाने की बात करते हैं उन्हें अवश्य भेजें तथा व्यक्तिगत पत्र भी लिखें। दूसरे के भरोसे न रहें। खुद जो हो सके वह कर डालें। जो समाचारपत्र हिन्दू समाज की निंदा करते हैं उन्हें भी विरोध का पत्र लिखें। जो प्रशंसा करते हैं उन्हें धन्यवाद का पत्र लिखें।

एकात्मता यज्ञ के अवसर पर जिन समाचारपत्रों ने हमें अच्छा कवरेज दिया है उन्हें धन्यवाद के पत्र चारों तरफ से जाने चाहिये थे ताकि उनका

उत्साह बढ़े। समाचारपत्रों को भी उत्साह दिलाने की आवश्यकता पड़ती है यह बात मुझे इंडियन एक्सप्रेस के सम्पादक श्री कार्लेकर जी ने कही थी। उन्होंने कहा कि ईसाई लोग इस तरह के हजारों पत्र लिखते हैं।

जब तक हम हिन्दू इतने जाग्रत नहीं होंगे तब तक हमारे लोकतांत्रिक अधिकार कुचले ही जायेंगे। कहावत है कि मां भी उसी बच्चे को दूध पिलाती है जो चिल्लाता है। हिन्दुओं पर अत्याचार होते हैं तब भी हम नहीं चिल्लाते। हमारी इस सहनशीलता को भारत सरकार, विरोधी पक्ष तथा अल्पसंख्यकों ने पहचान लिया है अतः वे सब हम पर मनमानी करने पर तुले हुए हैं।

एक विद्वान् दार्शनिक का कहना है कि दुर्जन व्यक्ति की दुष्टता से संसार का जितना अहित नहीं होता उतना सज्जन पुरुष की निष्क्रियता से होता है। भारत में आज यही हो रहा है। सज्जन पुरुष निष्क्रिय हैं। वे विरोध ही नहीं करते। वे सोचते हैं कि विरोध करने से क्या लाभ है? पर यह उनकी भूल है। मैं छोटा-सा उदाहरण दूं। एकात्मता यज्ञ के शुरू में इन्डियन एक्सप्रेस ने उसको उचित कवरेज नहीं दिया। मैंने अपने मित्रों को कहकर तथा अपने आफिस से २५-३० विरोधपत्र डलवाये। कुछ दिन बाद मैं किसी कार्य से श्री रामनाथ जी गोयनका से जो इन्डियन एक्सप्रेस के मालिक हैं उनसे मिलने गया। उस समय वे मुख्य सम्पादक वर्गीज को पत्र लिख रहे थे कि "जनता की शिकायत है कि इन्डियन एक्सप्रेस में एकात्मता यात्रा को उचित स्थान नहीं मिला है।" इसके बाद इन्डियन एक्सप्रेस में यात्रा बहुत के समाचार आये। इस तरह प्रतिरोध करने का कार्य परिषद् के समस्त केन्द्रों को तथा हिन्दू समाज को करना चाहिये। सब काम केन्द्र नहीं कर सकता।

जनता को जाग्रत करो

यह स्पष्ट दीखता है कि हिन्दू समाज की समस्याएं दिन पर दिन बढ़ती चली जायेंगी और हमारे साधन और कार्यकर्ता कम पड़ते जायेंगे, जिससे सबमें निराशा उत्पन्न होगी। अतः आम जनता को इस कार्य में लगाना होगा। आम जनता ही प्रतिरोध करे; फंड इकट्ठा करे, मीटिंग करे। पर आम जनता को जाग्रत करने का काम हमारा और आपका है। परिषद् के नेताओं को एक बात अवश्य विचारनी चाहिये कि आजादी की लड़ाई के समय हिन्दुओं को जो खतरा था वह आज उससे सौ गुना अधिक है व सौ गुनी तेजी से बढ़ रहा है पर हम लोग हिन्दू जनता को यह बात समझाने में अभी सफल क्यों नहीं हुए हैं? इस प्रश्न के हल पर ही हिन्दू समाज का सारा

भविष्य अवलंबित है। समय तेजी से बदलता जा रहा है। यदि आज हमने अपना कर्तव्य पालन नहीं किया तो कल हमारे हाथ से बाजी निकल जायेगी। कार्यकर्ताओं को अपने अनुभव एक दूसरे को बतलाने चाहिये तथा हिन्दू जनता को जाग्रत करने के नये-नये उपाय खोजने चाहिए। एक हजार वर्ष से यह कार्य अखिल भारतीय स्तर पर नहीं हो सका है यद्यपि स्वामी विवेकानंद जैसे अनेक संतों ने इस कार्य को करने का प्रयत्न किया। हिन्दुओं की आदत हीरो वरशिप की है। वे चाहते हैं कि कोई महान् नेता या अवतार आ कर हमारी समस्याएं हल कर दे। हमें कुछ न करना पड़े। इतिहास में राजा या सेनापति युद्ध में मारा जाता तो सारी सेना भाग खड़ी होती थी। वह कमजोरी हमें दूर करनी होगी और नेताओं की बजाय आम जनता को हिन्दू धर्म की रक्षा करनी होगी। हमें यह भी विचार करना होगा कि जिस तरह गांधीजी ने सत्याग्रह व अनशन द्वारा भारत की जनता को जाग्रत किया था, उन्हीं साधनों से क्या पुनः हिन्दुओं को जाग्रत किया जा सकता है? कुछ लोगों को गांधीजी के कुछ विचारों से मतभेद हो सकता है पर उनकी पद्धति से नहीं जिसके द्वारा उन्होंने इतनी बड़ी ब्रिटिश सल्तनत को भारत से हटा दिया तथा समस्त भारत को एक किया, क्योंकि उन्होंने हिन्दू समाज की कमजोरी समझकर नीति से काम लिया। वे अपने को हमेशा कट्टर हिन्दू कहते थे और रामराज्य व राम नाम की महत्ता बतलाकर हिन्दू समाज को एक मंच पर लाना चाहते थे। उनसे भूलें भी हुई पर हमें उनकी सफलता के अनुभव लेने चाहिये। छुआछूत दूर करने व हरिजनों का मन्दिरों में प्रवेश करवाने के लिये साधु और धर्माचार्य अनशन व सत्याग्रह कर सकते हैं। आज गांधीजी जीवित होते तो वे हिन्दू धर्म की रक्षा का कार्य करते।

थोड़े-से साधनों द्वारा शीघ्र से शीघ्र व अधिक से अधिक स्थायी फल मिले इसी को गीता में कर्मयोग अथवा कर्म की कुशलता कहते हैं—"योगः कर्मसु कौशलम्"। परिषद् के नेताओं व कार्यकर्ताओं को अपने कार्य निरन्तर इस कसौटी पर कसते रहना चाहिये।

विश्व हिन्दू परिषद् के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का निमंत्रण हमें गणेशपुरी, हरे कृष्ण तथा श्री महेश योगी जैसे आश्रमों को अवश्य भेजना चाहिये तथा हिन्दूधर्म से सहानुभूति रखने वाले नानी पालखीवाला जैसे विद्वानों को भी भेजना चाहिये।

ये सब योजनाएं तभी सफल होंगी जब हिन्दू एक हों। हमारे नेताओं

(शेष पृष्ठ ८४ पर)

नारी मुक्ति आन्दोलन : दिशा क्या हो ?

—निशा बत्रा

नारी मुक्ति आन्दोलन की लहर आज भारत में भी तेजी से चल रही है। शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से देखा जाए तो नारी मुक्ति आंदोलन का कल्पना मोहक लगती है परन्तु इसके साथ अनेक ऐसी विसंगतियां जुड़ी हैं जिनके कारण इस आंदोलन द्वारा भारत में महिलाओं के हित साधन में सन्देह ही है।

जैसा "मुक्ति आन्दोलन" शब्द से ज्ञात होता है, नारी को किन्हीं बन्धनों से मुक्त किया जाना है। तदनुसार इस आंदोलन का घोषित उद्देश्य महिलाओं को पुरुष की दासता, उत्पीड़न एवं आर्थिक परतंत्रता से मुक्त करना है अर्थात् आन्दोलकों द्वारा यह स्वीकार किया गया है कि नारी उत्पीड़ित व शोषित है और उसे इस दलदल से निकलने के लिए संघर्ष करना है। नारी को इन अभिशापों से मुक्ति दिलाने के लिए अनेक महिला संगठन कार्यरत हैं। वे महिलाओं के उत्पीड़न के विरुद्ध आवाज उठाते हैं, संघर्ष करते हैं और उन्हें राहत दिलाने का प्रयत्न करते हैं।

यह है नारी मुक्ति आंदोलन का एक पक्ष। सवाल उठता है कि समस्याओं और शोषण के दलदल में से निकलने के बावजूद महिलाओं में यह क्षमता कैसे उत्पन्न की जायेगी कि वे भविष्य में ऐसी अवांछित नियति का शिकार न बन सकें। इसके लिए नारी शिक्षा और नारी चेतना जागरण के सैद्धान्तिक पक्ष को स्वीकृति दी गई है और समाचारपत्रों, पत्रिकाओं तथा सभामंचों और संवाद गोष्ठियों के माध्यम से नारी स्वातंत्र्य चेतना जगाने के अभियान चलाए जाते हैं।

इस समस्त आंदोलन को एक दार्शनिक आधार दिया गया है कि नारी और पुरुष समान हैं अतः उनमें कोई भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए और महिलाओं को जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त होने चाहिए ।

नारी मुक्ति आन्दोलन की पृष्ठभूमि

नारी मुक्ति आन्दोलन का जन्म पश्चिमी देशों में जिन स्थितियों में हुआ, उसकी प्रतिछाया भी उसी रूप में भारत में दिखाई दे रही है। पश्चिमी समाज में महिलाएं सैकड़ो वर्षों से पीड़ित थीं, उन्हें दूसरे दर्जे का नागरिक और उपभोग की वस्तुमात्र समझा जाता था। इसलिए लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास होने पर वहां नारी समता की आवाज उठने लगी और महिलाओं के लिए जीवन के हर क्षेत्र में समान अधिकारों की मांग की जाने लगी, पश्चिमी देशों में महिलाओं को समानता के अधिकार तो इस संघर्ष से जरूर मिले, लेकिन समता के सूत्र में किसी उच्चादर्श के अभाव के कारण वहां पारिवारिक ढांचा लड़खड़ाने लगा और विवाह-विच्छेद, दाम्पत्य तनाव तथा महिलाओं की अन्य समस्याओं ने जन्म लिया ।

भारत में नारी मुक्ति आन्दोलन को भी उसी पृष्ठभूमि और समता के आदर्श के रूप में अपनाया गया। इसलिए वहां भी समस्याओं के आंशिक समाधान के बावजूद इससे महिलाओं के मार्ग में उसी प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होती जा रही हैं ।

भारतीय चिंतन

महिलाओं के उत्पीड़न और आर्थिक परावलम्बन जैसी समस्याओं से तो इनकार नहीं किया जा सकता। हजार साल की लम्बी दासता के कालखंड में यहां अनेक विकृतियां पनपीं। विदेशी आक्रमणकारियों की संस्कृति के प्रदूषण से ही ये विकृतियां आईं, लेकिन भारत के संदर्भ में महिलाओं के बारे में सोचते समय हम यहां की प्राचीन संस्कृति, परम्पराओं और आदर्शों को ध्यान में रखें तो देखेंगे कि नारी की प्रतिष्ठा को प्रस्थापित करने के लिए यही सही मार्ग है और इसी आधार पर समन्वय के सूत्र जोड़े जा सकते हैं।

भारत में नारी को पुरुष के समान नहीं अपितु उससे श्रेष्ठ माना गया है। उसे पूज्य माना गया है—"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" की भावना के अनुसार नारी को समान नहीं, सम्मान्य माना गया है। समानता और श्रेष्ठता की धारणा में बहुत अन्तर है। जब हम समानता के अधिकार

की बात करते हैं, तो यह स्वीकार करते हैं कि समानता का अधिकारी पु
हर क्षेत्र में बराबर होने के कारण प्रतिस्पर्धी है अतः उसे लौकिक संघर्ष में
बराबर समस्याओं को झेलना होगा। प्रतियोगिता की दौड़ में उसे तनाव
प्रक्रिया से भी गुजरना होगा।

समानता नहीं सम्मान

समता के आदर्श को सर्वोच्च मानने के कारण पुरुष वर्ग के सा
सामंजस्य की बजाय हर क्षेत्र में तनाव उत्पन्न होना भी स्वाभाविक ही है
इसकी परिणति हर क्षेत्र में दिखाई दे रही है। पारिवारिक तनाव जै
समस्याएं इसी सामंजस्यहीन मानसिकता की उपज हैं।

इसके विपरीत हमारी संस्कृति में नारी को श्रेष्ठ और सम्मान्य माना ग
है। इसलिए अधिकारों के मामले में समान नहीं, अपितु उसे सम्मान्य मान
ही स्थान दिया जाता रहा है। भारत में अभी भी उस संस्कृति के अनुग
इसी सहज संस्कार से आचरण करते दीखते हैं। उदाहरण के लिए कहीं
महिलाओं को स्थान देते हैं। इसके पीछे नारी की निर्बलता का भाव न
बल्कि नारीत्व के प्रति आदर-सम्मान का ही भाव होता है।

इसके विपरीत समता की मांग ने प्रतियोगिताजन्य संघर्ष खड़े किये
इसमें दो मत नहीं कि नारी को उसके अधिकार मिलें। वे समस्त प्रकार
उत्पीड़नों से मुक्त हों, पर इसके लिए इन आन्दोलनों में भारतीय दृष्टि
सम्मिलन करना ही उचित होगा यानी नारी की श्रेष्ठता और उसके
आदर के भाव की प्रतिष्ठापना का मार्ग ही उचित होगा।

नारी के प्रति सम्मान और पूजा की परम्परागत चेतना के जागर
ही उसके विरुद्ध अत्याचारों का दुश्चक्र रुक सकेगा। यह नहीं भूलना चा
कि समता के पीछे निहित इन संस्कारों को समाप्त करना काफी दु
कि समता का आकांक्षी शोषण का शिकार रहा है। इसके विपरीत नार
प्रति आदर, पूजा और सम्मान का भाव उसके प्रति नतमस्तक कर देता

(पृष्ठ ८१ का शेष)

ने हिन्दी चीनी भाई-भाई और हिन्दू-मुस्लिम भाई--भाई के नारे लगा
उन्हें सब जगह असफलता मिली, क्योंकि उन्होंने सर्वप्रथम हिन्दू-हिन्दू भाई
के नारे नहीं लगाये थे। अब वही करने का समय आ गया है।

हिन्दुओं को यह नीति वाक्य स्मरण रखना चाहिये "हेयं दु
नागतम्" दुःख आने से पहले ही उसकी जड़ काटो। इस वाक्य को
जाने के कारण ही हिन्दू समाज की यह दुर्गति हो रही है। ★

भ्रष्टाचार उन्मूलन संभव है

—डा० राकेश पोपली

भ्रष्टाचार के व्यापार पर आज न किसी को आश्चर्य होता है न ग्लानि। सरकार के कुछ महकमों में तो हर पग पर "दक्षिणा" चढ़ानी पड़ती है। बाबू लोग स्पष्ट ही कह देते हैं—"कुछ खर्च-वर्च करियेगा, यदि नहीं तो फिर इन्तजार करिए।" उत्तर प्रदेश या बिहार में किसी संस्था को पंजीकृत (रजिस्टर्ड) कराने के लिए प्राय: दो सौ रुपये की भेंट चढ़ानी होती है, अन्यथा आप बार-बार राजधानी के चक्कर लगाते रहिए। महीनों के बाद क्लर्क महोदय कुछ न कुछ मीन-मेष निकाल कर फार्म वापिस भेज देंगे और आपको एक बार फिर से इसी धंधे में लग जाना पड़ेगा। इसी प्रकार रेल आरक्षण, आयकर, बैंक ऋण, ग्राम-विकास योजना—हर विभाग में लुटेरे ही दिखाई देते हैं। पुलिस, शराब ठेका आदि विभागों की तो बात ही न पूछिये। अधिकतर लोगों को तो लगता है कि इस बारे में सोचना ही मूर्खता है। जब मंत्री से चपरासी तक सभी इस व्यापार में शामिल हैं तो हमारी-आप की क्या बिसात है कि कुछ कर सकें? तो भी कभी न कभी यह विचार मन में आए बिना नहीं रहता कि क्या एक सजग नागरिक इस विषय में कुछ भी नहीं कर सकता? क्या भ्रष्टाचार की श्रृंखला की हर कड़ी इतनी मजबूत है कि उस पर चोट करना असंभव है और यदि पढ़े-लिखे नागरिक ही बिना प्रतिरोध के दब जाएंगे तो बेचारे कम पढ़े लोग क्या करेंगे?

□ □ □ □

१६२ डाउन टाटानगर एक्सप्रेस! मैं कानपुर से सवार हुआ हूं। साथ में अमरीका से आए एक भारतीय मित्र प्रोफेसर भी हैं जिन्हें वनवासी (आदिवासी) क्षेत्र से परिचित कराने ले जाना है। दूसरे दर्जे में आरक्षण हेतु प्रतीक्षा सूची में हमारा नाम था, किन्तु बारी न आई। जानता हूं कि स्टेशन पर परिचालक (कंडक्टर) को खोजना असंभव है। अत: हम लोग गाड़ी में चढ़ जाते हैं—इस आशा से कि इलाहाबाद में "बर्थ" मिल जाएगी।

रास्ते में एक कंडक्टर को खोज कर मैं बर्थ के विषय में पूछता हूं तो वे दबे स्वर में कहते हैं—"पैसे ?" मैं समझाता हूं कि प्रतीक्षा की सूची में नाम लिखवाने के नाते शुल्क चुकाया जा चुका है। तब वे सज्जन इधर-उधर झांकने के बाद साफ इन्कार कर देते हैं—"गाड़ी में जगह नहीं है।"

जब दस मिनट पहले जगह थी तो अब क्या हो गया ? इस प्रश्न को बार-बार दुहराने पर भी वे कोई ठीक उत्तर नहीं देते। मैं उनका शुभ नाम पूछता हूं। परिचालक महोदय नाम तो नहीं ही बताते, गर्म भी हो उठते हैं। आस-पास के यात्री तमाशा देख रहे हैं। पर मजे की बात यह कि वे हमारी ही बुद्धि पर तरस खा रहे हैं। "दे दो न कुछ भेंट-वेंट, ऐसे थोड़े ही ये लोग बर्थ देंगे," "शिकायत-विकायत से कुछ नहीं होता जी !" "क्या अकेले आप ही मांग रहे हैं ? औरों से भी तो ऐसा ही किया गया है !" आदि बातें सुनने को मिलती हैं। परन्तु मैं कंडक्टर को स्पष्ट कह देता हूं, "देखिए, हम कोई गड़बड़ बात नहीं करेंगे, और आपको भी गड़बड़ नहीं करने देंगे। आप नाम नहीं बताएंगे तो हम मालूम कर लेंगे।" कंडक्टर साहब अपनी शेखी बघारते हैं, "कर लीजिए जो करना है, हम नहीं देंगे आपको ! सौ बर्थ होंगी तो भी नहीं देंगे ! आप ही कौन राजा हरिश्चन्द्र हैं !" परन्तु दो-चार मिनट बाद ही नरम होकर कह उठते हैं—"लाइये टिकट, हम बर्थ लिखे देते हैं। आप हमें गलत क्यों समझते हैं, आदि।" दो बर्थ तुरन्त मिल जाती हैं।

□ □ □ □

यह है टोरी—दक्षिण बिहार में एक छोटा-सा रेलवे स्टेशन। मैं अपने गन्तव्य वनवासी गांव की ओर जाने के लिए टोरी में उतर पड़ता हूं। यहां से आगे बस या ट्रक में जाना होगा। आगे की यात्रा शुरू करने से पहले मैं वापसी का आरक्षण कराना चाहता हूं। स्टेशन मास्टर महोदय सहर्ष आरक्षण कर देते हैं और कहते हैं—"पिचासी रुपये"। मैं टिकट देखता हूं—टोरी से दिल्ली का किराया सत्तर, और दस रुपये आरक्षण के, फिर पिचासी कैसे हो गए ? गणित के इस प्रश्न को बाबू साहब इस प्रकार सुलझाते हैं—"यह तो, साहब, छोटे स्टेशन पर आरक्षण कराने पर, हें हें हें (हसते हुए) देना ही होता है।" मैं विनम्रतापूर्वक कहता हूं, "नहीं, जनाब, रेलवे में ऐसा तो कोई नियम नहीं है।" कुछ कहने-सुनने के बाद वे फरमाते हैं, "अच्छा, अस्सी ही दीजिए।" चलते-चलते रास्ते में मैं कुली को यह बात बताता हूं। वह सिर हिलाता है—"हां, साहब, आपसे तो मान जाते हैं। हम होते तो हमारी थो...

ही सुनते !"

□ □ □ □

और यह है बिहार की सरकारी बस—रांची से नेतरहाट। इस वनवासी क्षेत्र में बसें कम हैं और यात्री अधिक। नेतरहाट की ओर तो सूट-बूट धारी लोग भी जाते रहते हैं; हिल स्टेशन जो ठहरा। मैं देख रहा हूं—कंडक्टर महोदय बड़ी मुस्तैदी के साथ सबसे किराया ले रहे हैं। बड़े कर्त्तव्यनिष्ठ मालूम होते हैं—दूर के कोने तक भी पहुंच कर किराया ले रहे हैं, भीड़ में कोई छूटने न पाये। पर यह क्या ! टिकट तो किसी को नहीं दे रहे। आधा तन ढके वनवासी को भी नहीं, सूटबूट और कैमरे वाले को भी नहीं—एकदम बराबर का व्यवहार ! मुझसे भी किराया ले जाते हैं। थोड़ी देर इन्तजार करने के बाद मैं आवाज लगाता हूं—"कंडक्टर साहब, टिकट तो दे दीजिए !" मेरे बार-बार आग्रह करने पर ऊपर से नीचे तक मुझे देखते हैं कि यह विचित्र जीव कहां से आ गया ! फिर, मानो सब समझ गए हों, मुस्करा कर कह उठते हैं, "ओह, आपको शायद अपने आफिस से टी.ए. (यात्रा भत्ता) लेना होगा !" मेरे इन्कार करने पर दूसरा तीर छोड़ते हैं—"इस गत्ते के डिब्बे में क्या है ?" "पुस्तकें।" "तो साहब, भाड़ा अलग लगेगा।" मेरा उत्तर है—"लाइये, पर रसीद अवश्य दीजिए।" पर थोड़ा आगा-पीछा करने के बाद वे सामान का भाड़ा लिये बिना हो किराये की रसीद बना देते हैं। शायद उन्हें सन्देह हो गया है कि मैं कोई सरकारी अधिकारी हूं और उनको हानि पहुंचा सकता हूं। थोड़ी ही देर में वे मुझे मेरी सीट से उठाकर आगे जाने को कहते हैं, यह कह कर कि "साहब, यहां भीड में आपको तकलीफ होगी।" आगे की सीट पर बैठी एक महिला और बच्चे को ठेल कर उठा देते हैं और मुझे बैठने को कहते हैं। मैं खडा रहता हूं। बस के पिछले भाग की भीड़ में उनका बे-टिकट व्यापार देख कर मुझे कष्ट होगा, शायद यही सोचकर उन्होंने मुझ पर दया करके वहां से दूर कर दिया है।

□ □ □ □

इसी प्रकार के ढेरों उदाहरण दिये जा सकते है—बस और रेल के विषय में ही नहीं, प्राय: हर महकमे में। यदि पढ़ा-लिखा व्यक्ति तन कर खडा हो जाए तो अधिकतर भ्रष्टाचारी या रिश्वतखोर बाबू उसकी आंख से आंख मिलाने का साहस नहीं कर कर सकते। हम लोग सोचते हैं, शिकायत से कुछ नहीं हो सकता। परन्तु कभी-कभी हो भी सकता है। और यह थोड़ी-सी

संभावना भी भ्रष्ट कर्मचारी को डरा सकती है। दुर्भाग्य तो यह है कि आज "प्रबुद्ध" नागरिक शिकायत करता ही नहीं। बेईमान कर्मचारी का सामना करता ही नहीं। उसके बोलने से पहले ही उसकी जेब में स्वयं नोट डाल देता है। यही नहीं, अपनी समझदारी दिखाते हुए अपने मित्रों और युवा पीढ़ी को भी यही सलाह देता है कि "सिर उठाना खतरे का काम है; रिश्वत के आगे घुटने टेकना ही बुद्धिमत्ता है। और फिर हानि क्या है? इस हाथ रिश्वत दो, और उस हाथ तुम भी काला धन कमा लो!" इस प्रवृत्ति का परिणाम हम देख ही रहे हैं। आगे इससे भी भयंकर स्थिति आ सकती है।

कि आज
सामना
ल देता
पीढ़ी को
के आगे
श्वत दो,
परिणाम

शिक्षा जगत्

अभिभावकों में चेतना : एक शुभ संकेत

—नौनिहाल

उत्तर प्रदेश के छात्रों के अभिभावकों के संगठन "उत्तर प्रदेश अभिभावक संघ" ने हाल ही में घोषणा की है कि अभिभावक उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ द्वारा पिछले दिनों लगभग ३४ दिनों तक की गई हड़ताल की अवधि का शिक्षा शुल्क नहीं देंगे। उत्तर प्रदेश अभिभावक संघ का यह निर्णय कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। अभिभावकों के इस निर्णय से पहली बात जो स्पष्ट हुई, वह यह कि अभिभावकों में भी शोषण और अन्याय के विरुद्ध जागरुकता आई है। इस संगठन का बनाया जाना ही इस तथ्य का द्योतक है कि अभिभावक शिक्षा के क्षेत्र में शोषण और अन्याय सहन करने को तैयार नहीं हैं। आज के अभिभावकों में चेतना कितनी बढ़ चुकी है, यह इसी से स्पष्ट हो जाता है कि माध्यमिक शिक्षकों की हड़ताल की अवधि का शिक्षण शुल्क न देने के अपने निर्णय को न्यायोचित प्रमाणित कराने के लिए अब उन्होंने उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटा दिया है।

शोषण और अन्याय

शिक्षा संस्थाएं आज ज्ञान का मन्दिर नहीं रही हैं, वे भ्रष्टाचार का अखाडा बन चुकी हैं। इसी प्रकार आज के शिक्षक भी शिक्षक नहीं रह गये हैं। शिक्षा भी शिक्षक के लिए अन्य व्यापारी की तरह एक व्यापार बन गई है जिसके माध्यम से वे दोनों हाथों, किसी भी प्रकार से जितना हो सके धन बटोरने के लिए लालायित हैं। धन की इस लिप्सा में उन्होंने शिक्षक की गरिमा को भी तिलांजलि दे दी है। ये वाक्य कड़वे भले ही लगें लेकिन इनकी सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता। शिक्षा संस्थाओं और शिक्षकों की मन-

मानी और शोषण के शिकार केवल छात्र ही नहीं होते बल्कि अभिभावकों पर उसका कहीं अधिक प्रभाव होता है। अभिभावक छात्रों के भविष्य के प्रति भी चिंतित रहने के कारण आर्थिक और मानसिक दोहरी परेशानी उठाते हैं। अभिभावकों को अक्सर प्रतिष्ठा हानि का भी शिकार होना पड़ता है, क्योंकि शिक्षा संस्थाओं एवं शिक्षकों के अन्याय व शोषण के फलस्वरूप कई बार छात्रों को योग्य होते हुए भी अनुत्तीर्ण होना पड़ता है जिससे समाज के अन्य लोगों की दृष्टि में ऐसे छात्रों के साथ ही उनके अभिभावक भी स्वयं को हीन समझने लगते हैं। कई भावुक किस्म के असफल छात्र तो आत्महत्या तक करके अपने अभिभावकों को जीवन-भर का दर्द दे जाते हैं।

निंदनीय स्वार्थ परता

अभिभावकों एवं छात्रों के प्रति अन्याय एवं शोषण के लिए बहुत बड़ी सीमा तक शिक्षकों की अपनी स्वार्थपरता उत्तरदायी है जिसकी पूर्ति के लिए वे बड़े ही अदूरदर्शितापूर्ण एवं विवेकहीन पग उठाते रहते हैं। अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए वे सदैव शिक्षा और छात्रों के भविष्य को दांव पर लगा देते हैं जिससे छात्रों के साथ तो अन्याय होता ही है, अभिभावकों का घृणित शोषण भी होता है। शिक्षकों की यह अदूरदर्शिता और विवेकहीनता उस समय और बढ़ जाती है जब वे ठीक परीक्षाओं से कुछ समय पूर्व के अध्ययन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण काल में हड़ताल करते हैं। पिछले कई वर्षों से यह देखा जा रहा है कि उत्तर प्रदेश के माध्यमिक शिक्षक हड़ताल के लिये इसी महत्त्वपूर्ण समय को चुनते हैं और हड़ताल को लम्बा खींचने में नहीं हिचकते। उनकी इस समय की हड़ताल का कोई फल निकले या न निकले लेकिन विद्यार्थियों की पढ़ाई की भारी हानि होती है।

पाठ्यक्रम पूरा न होने के कारण विद्यार्थी परीक्षाओं में अनुचित साधनों का प्रयोग करने के लिए बाध्य हो जाते हैं क्योंकि आज के विद्यार्थियों की दृष्टि में उत्तीर्ण होना ही अध्ययन का लक्ष्य है। ऐसे विद्यार्थी समाज का कोई भला नहीं कर पाते और केवल बेरोजगारों की संख्या बढ़ाते हैं। शिक्षा क्षेत्र में भ्रष्टाचार, शिक्षा के गिरते स्तर तथा घटती उपादेयता के लिए आज के शिक्षकों की अदूरदर्शिता, विवेकहीनता एवं स्वार्थपरता भी कम उत्तरदायी नहीं है जिसके समस्त दुष्परिणाम केवल अभिभावक व छात्र ही भोगते हैं।

छात्र और अभिभावक शिकार क्यों ?

शिक्षकों का यदि कोई विवाद है, जिसके लिए उनका आन्दोलन आवश्यक

है, तो वह सरकार या विद्यालय प्रबंधकों से होता है और उसके लिए आन्दोलनात्मक पग भी ऐसा चुना जाना चाहिये जिससे सरकार या प्रबन्धकों पर ही प्रभाव पड़े। ऐसा आन्दोलनात्मक पग क्यों उठाया जाता है जिससे छात्रों का भविष्य खतरे में पड़े और छात्रों-अभिभावकों के साथ अन्याय व उनका शोषण हो? क्या छात्रों व अभिभावकों की बलि का बकरा बनाये बिना शिक्षक आन्दोलन नहीं कर सकते? उनकी हड़ताल सफल हो या असफल, उसकी समाप्ति के लिए उनकी पहली शर्त यही होती है कि हड़ताल की अवधि का वेतन नहीं काटा जायेगा। आश्चर्य की बात यह है कि सरकार और प्रबन्धक उनकी इस मांग पर अभिभावकों के निंदनीय शोषण की चिंता न करते हुए झुक जाते हैं। हड़ताल के कारण छात्रों को महीनों तक पढ़ाया कुछ नहीं जाता और फीस वसूल कर ली जाती है।

चेतना : एक शुभ लक्षण

अभिभावकों में यह चेतना शिक्षा जगत् में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं गंभीर अनियमितताओं को बहुत बड़ी सीमा तक रोकने में समर्थ हो सकती है, इसमें संदेह नहीं। अब तक शिक्षा जगत् की अनियमितताओं को अभिभावकगण चुपचाप सहते चले आये हैं। फलस्वरूप ये अनियमितताएं एवं भ्रष्टाचार बढ़ते ही चले गये हैं और आज उन्होंने विकराल रूप ग्रहण कर लिया है। किन्तु अब उन्हें एक सशक्त विरोध पक्ष का सामना करना होगा जिससे उनमें निश्चित ही काफी कमी होगी। फलस्वरूप शिक्षा का गिरता स्तर भी कुछ सुधरेगा तथा अभिभावकों व छात्रों के साथ अन्याय व शोषण पर भी रोक लग सकेगी। अभिभावकों के संगठन का स्वागत किया जाना चाहिए तथा इसका ग्राम-ग्राम तक विस्तार कर इसे सशक्त बनाया जाना चाहिये ताकि यह शिक्षा जगत् में बढ़ते भ्रष्टाचार, अन्याय व शिक्षा के गिरते स्तर के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष छेड़ सके अभिभावकों में इस चेतना के निश्चित हो सुपरिणाम सामने आयेंगे।

सबसे अधिक निर्धन वे हैं जिनकी सबसे अधिक इच्छायें हैं।

शरीर के रोगों के लिए अच्छे विचारों से बढ़कर कोई औषधि नहीं।

ज्ञान का दान सब दानों में उत्तम है।

सन्तोष समाप्त होते ही निर्धनता आ जाती है।

गौ की रक्षा में हो सबकी रक्षा

सदाजीवत लाल चन्दूलाल

गांधी जी ने कहा था कि 'गौरक्षा के प्रश्न में हमारे देश की आर्थिक स्थिति का सवाल छिपा हुआ है। गौरक्षा के धर्म की जांच करते समय हमें अर्थ (धन) का विचार करना ही पड़ेगा। अर्थादि से अलग धर्म नाम की कोई चीज नहीं।"

गोपाल ग्राम अर्थ रचना का केन्द्रबिन्दु है, यही लेखक ने इस लेख में दर्शाया है।

"कुछ साक्षर, विशेषकर अंग्रेजी पढ़े-लिखे राजनैतिक मानस रखने वाले बंधुओं का मानना है कि गाय का प्रश्न बुनियादी नहीं है, "एक लेख में हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार जैनेन्द्र कुमार कहते हैं, "देश में भुखमरी है, गरीबी है, बेरोजगारी है, और ये प्रश्न विचार के लिए प्राथमिक होने चाहिए। मैं मानता हूं कि इन प्राथमिक प्रश्नों को गाय के सवाल से अलग करके यंत्रों का सहारा लेकर निपटाना संभव नहीं होगा। यान्त्रिक प्रगति से देश आगे अवश्य बढ़ रहा है, लेकिन यात्रिक भीमोद्योगों से उत्पन्न सम्पन्नता आर्थिक विषमता उत्पन्न करती है। गाय प्रतीक है उस वैकल्पिक सभ्यता की जो यात्रिक की जगह हार्दिक होगी। उसमें मानव-संबंध सूखेंगे नहीं, प्रत्युत स्निग्ध और संवादी बनते जायेंगे।…गाय सहयोगी संस्कृति की प्रतीक है। गौ और गौ वंश के आधार पर चलने वाला ग्राम-जीवन अनायास एकत्र होगा और वहां सद्भाव फैलेगा। सच्चे स्वराज्य का आधार स्वशासित ग्राम ही होने वाला है।

"मैं जब गौ-संस्कृति की बात करता हूं, तो मेरा आशय आर्थिक और नैतिक के योग और सामंजस्य का है। केवल आर्थिक दृष्टि पर्याप्त सिद्ध नहीं हो सकेगी। रासायनिक खाद पर इतने निर्भर हो जाने से नहीं चलेगा कि

सहज उपलब्ध खाद को हम बर्बाद होने दें। न ट्रैक्टर का अवलम्बन ग्राम जीवन को पुष्ट और स्वस्थ कर सकेगा। आर्थिक के साथ नैतिक दृष्टि का योग आवश्यक है।"

गाय के प्रश्न को इसी बृहत् संदर्भ में—जिसमें गो वध की बंदी अंतिम और काफी नहीं है—महात्मा गांधी ने भी देखा था, जब कहा—"मैं जैसे-जैसे गो रक्षा के प्रश्न का अध्ययन करता हूं, वैसे-वैसे उसका महत्व मेरी समझ में आ रहा है। गो रक्षा में देश की आर्थिक स्थिति का सवाल छिपा है। हर धर्म में आर्थिक और राजनैतिक विषय रहते हैं, जो धर्म शुद्ध अर्थ (धन) का विरोधी है, वह धर्म नहीं। धर्म रहित धन त्याज्य है। गो रक्षा के धर्म की जाँच करते समय हमें अर्थ (धन) का विचार करना ही पड़ेगा।"

हिन्दू धर्मशास्त्रों ने गाय को विश्व की माता और गाय के दूध को अमृत माना था। (जब यक्ष ने प्रश्न पूछा था, 'अमृत किम् ?' (अमृत क्या है ?) तो युधिष्ठर ने उत्तर दिया था, 'गवामृतम्।')

गो दुग्ध अमृत है, यह वैज्ञानिक प्रयोगों से भी सिद्ध हो गया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि गोदुग्ध के समान बल-वीर्य, ओज-शक्ति, विद्या-बुद्धि तथा सम्पूर्ण कामनाओंको सिद्ध करने वाला संसार का अन्य कोई खाद्य-पदार्थ नहीं।

हमारे सामने गो-संवर्धन का लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए। विदेशों में गो-संवर्धन का लक्ष्य गाय से दूध और मांस की प्राप्ति है। भारत में गो-संवर्धन का लक्ष्य इतना ही नहीं है, सर्वांगी है। हमें गायों से दूध के अलावा दुधारु बछड़ियां और खेती जोतने के लायक स्वस्थ बछड़े भी चाहिए, क्योंकि हमारी ७० प्रतिशत खेती बैलों पर ही निर्भर है। बैलों की खेती के लिए आवश्यकता हमें आगामी दशकों में भी रहेगी।

गोहत्या का कलंक कैसे दूर हो ?

इस दृष्टि से गोरक्षा हम सब भारतवासियों का राष्ट्र धर्म बन जाता है, क्योंकि गो वंश हमारे लिये न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अपितु आर्थिक दृष्टि से भी कल्याणकारी है।

गोवंश के महत्व को स्वीकार कर मुगल बादशाहों तक ने गोहत्या कानून द्वारा बंद कर दी थी। अंग्रेजों के शासन में गोहत्या आरम्भ हुई, पर भारत की जनता ने कभी गोहत्या बर्दाश्त नहीं की।

शेष पृष्ठ ६६ पर
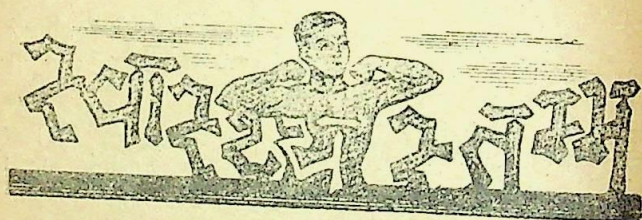
शाकाहार द्वारा रोगों की चिकित्सा

अन्तर्राष्ट्रीय शाकाहारी संस्था के अध्यक्ष डॉक्टर गोर्डन लोट्टो ने यह कहकर कि शाकाहार द्वारा अनेक रोगों की सफल और अचूक चिकित्सा संभव है, विश्व के प्रायः सभी अग्रणी चिकित्सकों के इस मत की पुष्टि ही की है कि संतुलित शाकाहारी भोजन करने वाले व्यक्ति सदा सुखी और स्वस्थ रहते हैं।

मांसाहारी लोगों तथा ऐसे शाकाहारी लोगों में जो अपने आहार में बिना चोकर वाले आटे और चीनी का आवश्यकता से अधिक प्रयोग करते हैं, दंत-क्षय रोग बहुत अधिक प्रचलित है। आहार में फलों और हरी शाक-सब्जियों की मात्रा बढ़ा कर, तथा उसमें से मांस को निकालर, इस रोग को समूल नष्ट किया जा सकता है और हिलते दाँतों को स्थिर किया जा सकता है। 'बेरी-बेरी' नामक रोग को अपरिकृत चावल के आहार से, जिसमें विटामिन 'बी' की मात्रा काफी होती है, दूर किया जा सकता है। 'स्कर्वी' नामक रोग को ऐसे फलों को लेकर, जिनमें विटामिन 'सी' की मात्रा प्रचुरता से उपलब्ध होती है—जैसे नींबू, संतरा आदि, सरलता से, तथा बिना किसी दवा के दूर किया जा सकता है।

कब्ज एक ऐसा रोग है,जिससे अधिकांश व्यक्ति—विशेष रूप से नगरों में रहने वाले व्यक्ति—पीड़ित रहते हैं। वे नियमित रूप से कब्ज की दवाइयां लेते रहते हैं, किन्तु उनसे उन्हें कोई लाभ नहीं होता। ऐसी रोगी, अपने आहार में

परिष्कृत आटे और चावल का प्रयोग बंद करके तथा अपने आहार में फलों और सब्जियों की मात्रा बढ़ाकर इस रोग से स्थायी रूप से मुक्ति पा सकते हैं। मांसाहार या अत्यधिक तले आहार के सेवन से उत्पन्न बृहदंत्र-शोथ नामक गंभीर रोग से भी शाकाहार द्वारा सरलता से मुक्ति पायी जा सकती है।

गठिया के रोग में भी ऐसे शाकाहार द्वारा, जिसमें प्रोटीन और कैलरियों की मात्रा न्यूनतम हो, स्थायी रूप से छुटकारा पाया जा सकता है।

रक्तचाप को, जिसके फलस्वरूप हृदयोग तथा प्रमस्तिकी रक्त स्राव जैसे गंभीर रोग उत्पन्न होते हैं, दूर करने की सरलतम तथा अचूक विधि है, संतुलित शाकाहार।

अन्य सहायक रोगों का इलाज भी मांसाहार का परित्याग करने तथा शाकाहार को अपनाने से संभव है।

चाय और काफी से मानसिक रोग भी

अमरीकी वैज्ञानिकों के एक दल ने वर्षों तक चाय और कॉफी के दुष्परिणामों के बारे में जो अनुसंधान-कार्य किया था, उससे यह अंतिम रूप से सिद्ध हो गया है कि इन दोनों पेय पदार्थों के अत्यधिक सेवन से गंभीर मानसिक रोग भी उत्पन्न हो जाते हैं। इस दल ने अपनी रपट में कहा है, "जो लोग दिन भर में १० से १२ प्याले चाय या कॉफी लेते हैं, उन्हें उन्हीं शारीरिक और मानसिक व्याधियों का सामना करना पड़ता है, जो शराबियों के तन और मन को ग्रस्त करती रहती हैं। सच तो यह है कि चिड़चिड़ापन, मानसिक अशांति और असंतुलन तथा मनोविकार जितने चाय और कॉफी पीने वालों में होते हैं, उतने उन लोगों में नहीं होते, जो इनका सेवन या तो बिल्कुल नहीं करते या करते हैं, तो बहुत कम। जो लोग दिन-भर चाय या कॉफी पीते ही रहते हैं, उनमें ये व्याधियां बढ़कर गंभीर रूप धारण कर लेती हैं।"

इन वैज्ञानिकों ने अपनी रपट में यह भी कहा है कि चाय और कॉफी के अत्यधिक सेवन से हृदय की धड़कनें अस्वाभाविक रूप से तेज हो जाती हैं, जो आगे चलकर गंभीर हृदय रोगों का कारण बन जाती हैं। चाय और कॉफी का अत्यधिक सेवन उच्च रक्त चाप और अति अम्लता का कारण भी बन जाता है। चाय और कॉफी के दीवाने अनिद्रा के रोगी तो होते ही हैं।

चाय और कॉफी दोनों में कैफीन की मात्रा बहुत है, जिसके कारण आमाशय में व्रण तथा मधुमेह आदि अन्य गंभीर रोग भी आसानी से जन्म लेते हैं। वस्तुतः डॉक्टरों का तो यहां तक कहना है कि कैफीन की अल्प मात्रा का नियमित आगमन भी शरीर की व्यवस्था को अस्तव्यस्त करने के लिये काफी है।

आप चाय-कॉफी या स्वास्थ्य का उपभोग एक साथ नहीं कर सकते, चाय-कॉफी के प्रेमियों को इस वैज्ञानिक सत्य को हृदयंग कर लेना चाहिए।

पृष्ठ ९३ का शेष

स्वाधीनता आंदोलन के दिनों में कांग्रेसी नेताओं ने जनता को आश्वासन दिया था कि देश के स्वाधीन होते ही गोहत्या बंद कर दी जायेगी, किन्तु शासन-सत्ता हाथ में आते ही वे इस आश्वासन को भूल गये और यह भी भूल गये कि देश के संविधान के निर्देशात्मक सिद्धांतों में धारा ४७ के अन्तर्गत गोहत्या पर प्रतिबंध लगाना राज्य की नीति मान्य की गयी है। उत्तरप्रदेश में तो गो-वंश-विनाश की साजिश में स्वयं सरकार भी शामिल है। वहां की सरकार गोहत्या में लगे भ्रष्ट सरकारी अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई नहीं करती और जो गो-प्रेमी गोवध-विरोधी आन्दोलन या सत्याग्रह में भाग लेते हैं, उन्हें आपराधिक चरित्र वाले व्यक्ति ठहरा देती है।

हमें आशा है कि प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी, जो समग्र देश के लिए गोहत्या बंदी कानून बनाने में पूर्णतया सक्षम हैं, पूरे आत्मविश्वास के साथ, और राष्ट्र के व्यापक हित को ध्यान में रखकर इस दिशा में आगे बढ़ेंगी।

पंडिता राकेशरानी पर मुकद्दमे

महोदय,

हमारे धर्म निरपेक्ष देश में अकाली यह शोर मचा रहे हैं कि उनका दमन हो रहा है और मुसलमान भी अपने आप को अल्प संख्यक कहते हुए दमन व भेदभाव का शिकार बताते रहते हैं परन्तु वास्तविकता यह है कि इस देश में दमन व शोषण के शिकार तो बहुसख्यक हिंदू ही हैं जो अपने ही देश में इन अल्प संख्यकों के हाथों मरते हैं, पिटते हैं और जवाब भी नहीं दे सकते। यदि उफ भी करते हैं तो सरकार उन पर जुल्म ढाने में कसर नहीं छोड़ती। असम, पंजाब व हरयाणा इस बात के ज्वलंत उदाहरण हैं।

सरकार हिंदुओं के साथ कितना भेदभाव व उनका कितना दमन कर रही है इसका उदाहरण दयानंद संस्थान, नई दिल्ली की अध्यक्ष पण्डिता राकेश रानी हैं जो जनज्ञान (मासिक) की सम्पादक भी हैं।

उन पर सरकार ने इस समय तक कुल २८ अभियोग चला रखे हैं। ये सारे अभियोग धारा १५३ ए तथा २९५ ए के तहत हिंदुओं को जगाने और उनमें शोषण, दमन व साम्प्रदायिक हमलों के खिलाफ चेतना लाने के अपराध में लगाये गये हैं। ये सारे अभियोग कलम की उस सिपाही पर लगाये गये हैं जो मुसलमानों व ईसाइयों से देशभक्त बनने का आह्वान करती है —मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत देश-भक्तिपूर्ण लेख लिखती है।

इन पर तो मुकद्दमे चलाने में तो इतनी तेजी बरती जाती है कि इधर जनज्ञान या कोई अन्य पुस्तक निकली नहीं और उधर मुकद्दमा दायर। क्या लौंगोवाल और भिंडरांवाले के प्रति भी सरकार कभी इतनी कड़ी हुई है?

जो लोग तलवार और बन्दूक की भाषा में बात करते हैं उनके साथ सहृदयता और लेखनी से आत्मरक्षा का आह्वान करने वालों के प्रति कठोरता। यह है हमारी धर्मनिरपेक्षता और शांतिप्रियता का नमूना।

धन्य है हमारी धर्मनिरपेक्ष सरकार!

अजमेर

धर्मवीर

भारतीय संस्कृति की अवहेलना

सम्पादक जी,

आशा थी कि स्वतंत्रता प्राप्त होने पर भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार होगा। किन्तु दुःख है कि ३६ वर्षों के पश्चात् भी उन्नति की कौन कहे हम निरन्तर अवनति की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं। अंग्रेजियत की झूठी चकाचौंध ने हमारी आंखों पर परदा डाल दिया है और हम पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करते जा रहे हैं। न तो हम अंग्रेज ही बन पाए न भारतीय ही रह गये। हम में इतनी योग्यता नहीं कि अंग्रेजी भाषा पर अधिकार प्राप्त कर सकें। केवल वेशभूषा, रहन-सहन तथा, खान-पान आदि बुराइयों को ही हम ग्रहण करते जा रहे हैं। पत्र हिन्दी में लिखते हैं और उस पर पता अंग्रेजी में, सूट-बूट-टाई तथा अन्य बनाव श्रृंगार में अंग्रेजों के कान काटने का दम भरने वालों में कितने ऐसे हैं जो शुद्ध अंग्रेजी लिख-पढ़ सकते तथा इस भाषा में बात कर सकते हैं। किन्तु आज घरों में मम्मी, डैडी, आन्टी, अंकल आदि सम्बोधनों का फैशन हो गया है। मां, पिता, मौसी, चाची, चाचा आदि सम्बोधनों में जो माधुर्य, आदर तथा सार्थकता है वह अंग्रेजी में व्यक्त करना सर्वथा असम्भव है। कितनी लज्जा की बात है कि हम इस अधकचरे ज्ञान का फिर भी पीछा नहीं छोड़ रहे हैं। आज औरंगजेब जैसे शासक नहीं फिर भी हिन्दुओं के सिर से चोटी तथा जनेऊ गायब होने की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। आज आर्यत्व तथा भारतीयता का दम भरने वाले परिवारों में भी हिन्दुत्व तथा भारतीयता के प्रति घोर उपेक्षा स्पष्ट परिलक्षित होती है। दूसरों को भारतीयता पर चलने का उपदेश देने वाले भी अपने बच्चों को अंग्रेजी मीडियम में अथवा अंग्रेजी पद्धति पर आधारित विद्यालयों में ही भेजते हैं। यदि इन बुराइयों का समय रहते उपचार न किया गया तो राष्ट्र में घुन लग जायगा और सारा राष्ट्र जर्जर हो जायगा। भारत में बसने वाले समस्त निवासियों का, चाहे वे किसी भी धर्म, सम्प्रदाय अथवा जाति के हों, यह कर्तव्य है कि वे स्वयं अपने बच्चों तथा परिवार सहित भारतीय संस्कृति को

ाएं तथा यथाशक्ति अन्यों को भी इसके लिए प्रेरित करें। इसी में राष्ट्र
भला है।

ती

दुर्गाप्रसाद भट्ट

वे हिन्दूसमाज के संघर्षशील योद्धा थे

रणीय बहन जी,

आप के पत्र से यह दुःखद समाचार जानकर अत्यन्त आघात पहुंचा कि
जगत् एवं हिन्दूसमाज के संघर्षशील योद्धा महात्मा वेदभिक्षु जी अब इस
र में नहीं रहे।

उन्होंने आर्यसमाज की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा दयानन्द संस्थान
माध्यम से आर्यसमाज एवं हिन्दूसमाज का जो मार्ग दर्शन किया है वह एक
हास है।

सर्वाधिक दुःख इस बात का है कि वैदिक साहित्य के साहसिक और
कारी प्रकाशक का दायित्व सम्भालने वाला अब कोई नहीं रहा।

मैं हृदय से समवेदना प्रकट करते हुए ईश्वर से उनकी स्वर्गस्थ आत्मा
शान्ति के लिये प्रार्थना करता हूं।

समवेदनाओं के साथ

आपका भाई

चेम्बूर (बम्बई) गुलजारी लाल आर्य

यह क्षति अपूरणीय है

माननीय बहिन राकेश रानी जी,

आर्य साप्ताहिक पत्रों में महात्मा वेदभिक्षु जी के असामयिक निधन का
चार पढ़कर दुःख हुआ। भगवान् उनकी अमर आत्मा को सद्गति प्रदान
तथा परिवारजनों को तथा आर्यसमाज के प्रेमियों को शक्ति दे कि वे
ा वियोग सहन कर सकें।

महात्मा जी के कार्य की क्षति को कोई पूरा नहीं कर सकेगा। उन्होंने अपना
मन और आत्मा की पूरी शक्ति समाज और देशोद्धार में लगा रखी थी।

उनके सदृश साहित्यकार और महर्षि दयानंद जी के अनन्य भक्त रह कर जो निरन्तर कार्यरत रहे हैं वह इनके जैसे विरले व्यक्तिओं का ही काम है। उनके कार्यों में आप आज तक सहयोग देती रही हैं। भगवान् आपको शक्ति दे कि इस काम को बढ़ाते हुए देशोउन्नति में लगी रहें।

आर्य कन्या गुरुकुल पोरबन्दर सुशीला पंडिता

उन्होंने मृततुल्य जाति में जीवन फूंका

आदरणीय श्रीमती राकेशरानी जी,

महात्मा वेदभिक्षु जी ने आर्यसमाज तथा समाज की सेवा में बहुत भारी कार्य किया है। उन्होंने आर्यसमाज के प्रचार कार्य को आगे बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान किया है। मृततुल्य जाति में जीवन फूंका है। ईश्वर ने उनको हमारे बीच से अदृश्य कर दिया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह महान् आत्मा पुन: शरीर धारण कर देश और जाति के उद्धार के लिये शेष कार्य को पूरा करे, शोक संतप्त परिवार को अपार दुःख सहन करने की क्षमता और उस महान् आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

नई दिल्ली-४४

धर्मवीर

वे अपने कर्तव्यपथ पर अडिग रहे!

प्रिय बहिन राकेशरानी जी,

ईश्वर की लीला अपरम्पार है। उसके समाने किसी की नहीं चलती। २१ दिसम्बर के तरुण भारत में भाई भारतेन्द्रनाथ जी के आकस्मिक निधन के विषय में पढ़कर शोक हुआ। वैसे तो उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था; फिर भी अपने स्वास्थ्य की बिल्कुल भी चिन्ता न करते हुए उन्हें हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति व ऋषि दयानन्द के प्रति अनन्य निष्ठा थी। उन्होंने अपना सारा जीवन ऋषि दयानन्द के कार्यों के लिए समर्पित किया। वें जीवन-भर संघर्ष करते रहे पर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। अपने कर्त्तव्य पथ पर अडिग रहे। उनके जैसा धुन का धनी आदमी ही इतना कार्य कर सकता है। उन्हें उठते-बैठते वेद, ऋषि व हिन्दू जाति का विचार था। शरीर से अशक्त होते हुए भी उन्होंने कर्त्तव्य से मुह नहीं मोड़ा। उन्होंने अकेले आर्यसमाज का इतना कार्य किया है कि

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा भी इतना कार्य नहीं कर सकी। वे अपनी संयोगी थे। उन्होंने सारी एषणायें छोड़ दी थीं। उनकी तो बस एक ही इच्छा थी कि हमारी जाति कैसे एक हो। आज-कल हमारी जाति को धर्म विमुख करने के लिए नाना प्रकार के कुचक्रों व प्रलोभनों का जाल फैला हुआ है। हमारे भाई अपनी जाति को बचाने के लिए शरीर से अस्वस्थ रहते हुए भी बहुत कार्य किया। आप पर हमारी सरकार ने कितने मुकद्दमे चलाये पर आप ने भी उनका बहादुरी से मुकाबला किया। आज उन जैसा सच्चा त्यागी जीवनदानी आदमी मिलना मुश्किल है। उनकी ही साधना से जनज्ञान जैसा अखबार बिना धन के भी उन्होंने चलाया। यह उनके ही साहस का परिणाम है। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति दे। जो आया है उसे जाना है। वह जो कुछ करके गया वह अमर है। हमारे भाई भारतेन्द्रनाथ जी अमर हैं। उनका नाम सदा अमर रहेगा। ईश्वर आप को शक्ति दें कि जो कार्य उन्होंने आरम्भ किया है आप उस कार्य को उनसे भी अधिक बहादुरी से करें। भगवान् आपको दीर्घायु करे। ईश्वर पर भरोसा रख कर कार्य कीजिए। अवश्य सफलता मिलेगी वही सबकी मदद करता है। ईश्वर की आप पर कृपा रहे और भगवान् आपको कष्ट सहन करने की शक्ति दे। वह सबकी सहायता करता है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन,
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।

नागपुर — चन्द्रकांता विद्यालंकृता

हिन्दुओं और मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं के प्रति भेदभाव क्यों ?

महोदय,

अभी हाल में केन्द्रीय सरकार ने मुस्लिम समुदाय की धार्मिक भावनाओं का आदर करके उनकी दिल्ली स्थित ऐतिहासिक सफदरजंग मकबरे की मस्जिद में नमाज पढ़ने की अनुमति इसलिये प्रदान कर दी, क्योंकि उसके लिये गत एक वर्ष से मुस्लिम मुतिहिद्दा महाज निरन्तर आन्दोलन कर रहा था। इस मांग के पीछे सभी राजनीतिक दलों के मुस्लिम सांसद और विधायक ही नहीं, जामामस्जिद के इमाम अब्दुल्ल' बुखारी भी थे। साथ ही ऐसा

करने से कांग्रेस (इ) को अगले चुनावों में मुसलमानों के वोट मिल जाने की आशा है।

इसके विपरीत देश भर का हिन्दू समुदाय विशेषता: उनके तीन धार्मिक स्थान—मथुरा का श्री कृष्ण जन्म स्थान, अयोध्या की श्री राम की जन्म स्थली तथा काशी मा विश्वनाथ महादेव का मन्दिर, जिन्हें मुस्लिम शासन काल में मस्जिद बनाकर उन पर अपना अधिकार जमा लिया था, वापिस हिन्दुओं के देने के लिये मांग करता आ रहा है, परन्तु उनकी मांग अभी तक स्वीकृत नहीं की गई और उक्त स्थानों पर पुलिस गार्ड का पहरा लगा रखा है। क्या इससे हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचती ?

सरकार द्वारा हिन्दुओं और मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं के प्रति यह भेदभाव क्यों ?

जयपुर

युगलकिशोर चतुर्वेदी

अकाली नेता किस ओर ?

महोदय

अकाली नेता एक तरफ तो संविधान की प्रतियां जला रहे हैं दूसरी ओर अधिकारों की मांग कर रहे है। जो व्यक्ति अपने कर्तव्यों को नहीं समझता, उसे क्या अधिकार है कि वह कोई मांग करे ? संविधान की प्रतियां जला कर वे राष्ट्र का अपमान तो कर ही रहे हैं, साथ ही सिख समाज का अपमान भी कर रहे हैं। यदि अकाली नेता व उग्रवादी भारतीय संविधान के अन्तर्गत नहीं रहना चाहते तो उन्हें तुरन्त भारत छोड़ देना चाहिये। मेरी तो उन्हें यही राय है। सरकार उनके मतदान अधिकार को खत्म करदे व उन्हे कड़ी सजा दे।

अलीगढ़

हेमसिंह

अनुपम पत्रिका

परम आदरणीया बहन जी,

साहस, वीरता, निर्भीकता तथा राष्ट्र-प्रेम का जैसा अद्वितीय संगम आपकी पत्रिका 'जन-ज्ञान' में देखने एवं पढ़ने को मिला, उस स्तर के लेख एवं विचार मुझे अन्य किसी भी पत्रिका में नहीं दिखे।

भिनगा (बहराइच)

डा. हरिमोहन श्रीवास्तव

धर्म प्रचार और हिन्दू रक्षा अभियान यज्ञ में प्राप्त आहुतियां

५० रु० देने वाले

कृष्णा नन्द जी (सालमपुर), डी० आर० शर्मा (नेपाल), श्री भागवत् प्रसाद गुप्त (बेडो, रांची)

३१ रुपये देने वाले

मोहन शाह (दिल्ली), प्रमोद कुमार (सहारनपुर), जगदीश कुमार (लुधियाना), रामनिधि जी (लातूर), रामअवतार जालान (बम्बई), विश्वनाथ कपूर (बम्बई), रामनिवास (लातूर), एम० पी० अग्रवाल (बम्बई), ए० के० महाजन (तम्मूतवी), श्याम सुन्दर (रानीगंज), र० स० भटनागर (चण्डीगढ़), रामेश्वर लाल सोनी (जावला, नागोर), राधाकिशन राठी (जावला-नागोर), श्याम सुन्दर (जावला, नागोर)

३० रुपये देने वाले

शंकर लाल मूलचन्द (डूंगरपुर), त्रिलोक नाथ गुप्त (छपरा), हरिराम (रांची), गुप्तदान (रामनगर)

२५ रुपये देने वाले

कुमार राजेन्द्र सिंह (जमशेदपुर), हरिनारायण मेहरोत्रा (रुड़की), शौनक ऋषिदास (झुंझनू), हंसराज शर्मा (शाहदरा), रामपाल सिंह (नाटडी), मुरलीधर टंडन (पटना), एस० पी० यादव (गोंडा), अवन्तीलाल (मुजफ्फरपुर), शिवनाथसिंह (बिजनौर), बाबूलाल (बम्बई), प्रेमसुख रामावतार (राजस्थान), सुरेश कुमार (मिर्जापुर), ऊषा गुप्ता (गिरिडीह), इन्दर सिंह (अद्राम), ओम्प्रकाश (फतेहगढ़), नारायण दास (इटावा), लाल सिंह (मैनपुरी), श्याम लाल (गुड़गांवा), पद्म भूषण (पटना), जयबाल लाल (प्रतापगढ़), मणिलाल (बांसवाड़ा), वीर जलाल (पोरबन्दर) कर्मवीर गुप्त (हरदोई), प्रेम सिंह (बहादुराबाद), मोहन लाल वी० मेहता (जूनागढ़), प्रेमलाल चौधरी (कोटा), आनन्द स्वरूप (रुड़की), कृष्ण कुमार (करनाल), शिव कुमार आर्य (रामनगर),

२२ रुपये देने वाले

श्री राम स्वरूप (महेन्द्रगढ़)

२१ रुपये देने वाले

श्री बाबू राम श्रीवास्तव (हरदोई), चौधरी दिविन्दर सिंह, डा० सी० पी० सिंह (फतेहपुर), चक्रधर (बेगूसराय), ज्ञान चन्द आर्य (जालन्धर), राधेश्याम अग्रवाल (बम्बई), मुकुट दुबे (हजारी बाग), सुनील गोयल (कोपरगांव), मेवा लाल आर्य (राम नगर), अयोध्या प्रसाद आर्य (राम नगर), हरि प्रसाद आर्य (रामनगर), रामानन्द सोनी (जावला, नागौर), जमना दास (जावला, नागौर), बिहारी लाल सोनी (जावला, नागौर), अमर चन्द चाण्डक (जावला, नागौर), मदनलाल सांखला (जावला-नागौर), धर्मी चन्द जैन (जावला, नागौर), भीकदान खिडीया (जावला-नागौर), मोहन लाल रेगर (जावला, नागौर), श्री मती सावित्री भटनागर (जयपुर), श्री मोहन लाल आर्य (श्री गंगानगर), श्री महेन्द्र कुमार (मेरठ) शेर सिंह श्रीवास्तव (देहरादून), मि० भूपिन्दर साहनी (नई दिल्ली), धर्मपाल सिंह यादव (गाजियाबाद), दौलतराम (जालन्धर), अजीत सिंह (बलिया), काशीराम शर्मा (कलकत्ता), माखाल चन्द (लुधियाना), राम लखन प्रसाद (वाराणसी), जयप्रकाश (सोलन), किशन स्वरूप (ऋषिकेश) बनारसी लाल (अमृतसर), अनिल कुमार (बुलन्द शहर), जगतराय आर्य (ज्वाला पुर), सुरजन सिंह (सांपला), लकी मैटल इन्डस्ट्रीज (जगाधरी), डी० सी० जैन (नई दिल्ली), विश्वनाथ श्रीवास्तव (खरगोन), विशम्बर दयाल (गुड़गांव), दुर्गाप्रसाद (दिल्ली-५२); प्रेमनाथ शर्मा (जम्मू), छोगा लाल (धार), के० बी० हास्टो (शालीमार), राजबहादुर (एटा), चरण सिंह (साहिबाबाद), सुखबीर सिंह (नई दिल्ली), रामकुमार (श्री गंगानगर गुरु अभय सिंह (सिवाना), एस० पी० मोदी (कलकत्ता), सुरदारी ताज बाबी, नन्दकिशोर (सतना), श्याम सुन्दर सेठ (कीर्तिनगर), विद्या (सहारनपुर), हनूराम (जम्मू तवी)

२० रुपये देने वाले

श्री हरवंस लाल सैनी (नई दिल्ली), सोमप्रकाश सिंह (रेवाड़ी), ए० एन० नारायणराव (बगलौर), रामलखन (कानपुर), रामदेव आर्य (शाहदरा), महावीर प्रसाद (भीलवाड़ा), रामजीलाल (महेन्द्रगढ़), राधेश्याम अग्रवाल (महेन्द्रगढ़), बलवन्त सिंह गुप्त (आजादपुर), ओम्प्रकाश (असहरा), सूबेदार क्लर्क (फतेहगढ़), भगवती प्रसाद, पुरुषोत्तम आर्य

आगरा), एस० जी बलेबी (बम्बई), डी० बी० गुलाटी (चितरंजन नगर) बिहारी लाल (चतरा), एस० एन० माहेश्वरी (असम), महेन्द्र-नाथ (सरोजिनी नगर), वायु प्रसाद (पूर्णिय), मानव कल्याण पुस्तकालय जालन्धर) नारायण सिंघल (हापुड़), धर्मपालसिंह (गाजियाबाद), करण लाल (सहारनपुर), लक्ष्मीप्रसाद (मुंगेर), ओमप्रकाश (आइजट नगर), अमरनाथ स्वामी (अम्बोआ), डुन्डुराम (कटराई), सोमप्रकाश सिंह (रेवाड़ी) तुलसीदास (बम्बई),

१५ रुपये देने वाले

प्रभुनाथ सिंह (सारण), रामचन्द्रनारायण राव (निजामाबाद), जयपाल सिंह (मेरठ), शिवप्रसाद पौराणिक (कोटा), रामचन्द्र प्रसाद (समस्तीपुर), रामदयाल शर्मा (कानपुर), सत्येश पुस्तक भंडार (नाथद्वारा), चिरंजी लाल (विदिशा), हरनायण लाल आर्य (बस्ती), लक्ष्मी चन्द (राजस्थान), रमेशचन्द्र (सहारनपुर), जंगली साहू (पलामू), कैलाश प्रसाद (पलामू), जय प्रसाद (पलामू), विजयदास (पलामू), नरेन्द्रकुमार शर्मा (रावत वाड़ा), अक्षय कुमार (कोट द्वार),

११ रुपये देने वाले

नवमान प्रकाशन (अलीगढ़), आर० के० मिश्रा (लश्कर), उमाशंकर चौहान (बोकारो), बी० एस० शर्मा (सुजानगढ़), लक्ष्मीनारायण (नागौर) चन्द्रप्रसाद (बम्बई), वी० एस० गुप्त (खम्मन), रतनकिशोर (फरीदाबाद), राधा कृष्ण (चित्तौड़ गढ़), बलवन्त सिंह (दिल्ली), रामगोपाल (सिरसा), अजब सिंह (धौलपुर), केशवदेव (सुजानगढ़), राधेश्याम गर्ग (बुलन्दशहर), अचल नैन (शिवगंज), के० एम० कौशल (मुजफ्फरनगर) मदनलाल शर्मा (मथुरा), भगवान् दास गुप्त (कानपुर), श्री भान चन्द (मन्सा), लालदेव प्रकाश गर्ग (अलीगढ़), घनश्याम दास (बाराबंकी), कंवर लाखन (टीकम गढ़), प्रह्लाद अग्रवाल (धनबाद), सत्य नारायण (हैदराबाद), बकट लाल (बीड), शिव भगवान (कलकत्ता), गोपाल कृष्ण (मुरैना) मगनभाई (गुजरात), राजेन्द्र प्रसाद (थाना), भगवान् दास (मिर्जापुर), पतिदेव महतो (हजारीबाग), प्रतापसिंह (नान्देड़), प्रेम मिश्रा (बिलासपुर), एम० बी० पान्डे (मंदसौर), बाल चन्द्र अग्रवाल (पूर्णिया), आलम सिंह (लुधियाना), मन्नालाल (कानपुर), हीरालाल मौर्य (रामनगर), विक्रमजीत वर्मा (रामनगर), बद्रीनारायण (सीतापुर), एन० सी० आर्य (रायसेन), प्रह्लाद प्रसाद (बुलन्दशहर), के० र० पाटील (महाराष्ट्र),

एस० आर० मित्तल (भटिन्डा), यशवन्त राव (अकोला), डी० बी० सोनी (थाना), परमानन्द शर्मा (हापुड़), धीरज आर्य (गाजियाबाद), दीपा राम (सिरोही), डी० एन० आसमवार (वर्धा), जी० एम० (परभणी), देवी-सिंह पटेल (रतलाम), नत्थी लाल गुप्त (धौलपुर), ठाकुर धीरसिंह (श्री गंगानगर), गुप्ता प्रेस(कोसीकलां), कालीचरण (गाजियाबाद), छोटे-लाल (लखनऊ), एस० के० डिस्ट्रीब्यूटर्स (लखनऊ), प्रताप सिंह (लखनऊ), राजीव ड्रग हाउस (लखनऊ), ब्रज किशोर (लखनऊ), शिवशंकर मित्तल (लखनऊ), लक्ष्मी नारायण (लखनऊ), जवाहर लाल (लखनऊ), राधे-श्याम (अलीगढ़), भगवती देवी (देहरादून), धर्मवीर लाल गुप्ता (दुधी) ज्ञानेन्द्र कुमार बिश्नोई (सूरजनगम), विन्देश्वरी प्रसाद(गोलारोड), कैलाश-नाथ त्रिपाठी (बामन पुर), राम लखन धोबी (अशरफा बाद), भोला-राम सोनी (जावला, नागौर), धन्ना दास वैष्णव (जवला, नागौर), राज-नाथ जोगी (जावला, नागौर), केसरी मल अग्रवाल (जावला, नागौर), कैलाश चन्द (जावला, नागौर), मोहन लाल खाती (जावला, नागौर), भेरु सिंह सेखावत(जावला, नागौर), तुलसी राम व्यास(जवला, नागौर), पन्ना लाल जाधू (जावला, नागौर), सम्पत राज लोढ़ा (जावला, नागौर), मदन लाल चाण्डक(जावला, नागौर), राम कुंवार भूतड़ा(जवला, नागौर), जग-दीश प्रसाद सोनी (जावला, नागौर), आत्मा राम रेगर (जावला, नागौर), सी० पी० वर्मा (महाराष्ट्र), गोचरण लाल (नई दिल्ली), शिवनारायण वर्मा (कानपुर), बनवरी लाल अग्रवाल (देहली), प्रेम सिंह जिंदल (दिल्ली) रमेश-महेश एण्ड ब्रदर्स (मुरादाबाद), शोबन सिंह (नैनीताल), ओम्प्रकाश गुप्ता (करनाल), कान्ति स्वरूप (मवाना), हीरालाल (नई दिल्ली), पवन कुमार(जम्मू), राम सिंह शर्मा(शाहजहांपुर), अम्बिकाप्रसाद (मुंगेर), एल के. सहगल (बम्बई), भंवर लाल (पानीवाल-उदयपुर), कन्हैया लाल शर्मा (अहमदाबाद), रामा आयरन स्टोर्स (मेरठ), शिवकुमारअग्रवाल (अलीगढ़), दानमल जमुनादास (बीकानेर), राम अवतार (मथुरा), राजेन्द्र कुमार (मुरादाबाद), उत्तम चन्द (भोपाल), हरमनदास (झुंझुनूं), महीपाल सिंह (देहरादून), प्रेम सिंह राठौर (बांसवाड़ा), रागेश्वरी पान्डेय (उन्नाव), प्रभुदयाल सिंह (जमशेदपुर), रामनाथ वकील (मुरादाबाद), रघुबीर प्रसाद (पटना), अमर सिंह (मेरठ), रामराय (दिल्ली), वृतराम उनियाल (गढ़वाल), ओम्प्रकाश (मुरादाबाद), राजेन्द्र कुमार (गोंडा), लक्ष्मी-नारायण (सरदार शहर), बलदेव सिंह (रायसेन), हीरालाल मौर्य (राम-नगर), रामअचल पाणे (रामनगर),

२ रुपये देने वाले

नारायण जी गोदरा (जावला, नागौर), राधेश्याम वैष्णव(जावला, नागौर) धीसादास वैष्णव महावीर प्रसाद रामेश्वर लालकुमार शिवप्रसाद रेगर भवानी शंकर खटीक जीवन खटीक शंकर मेघवाल मंघाराम रेगर हजारी-रेगर रामनिवास चौधरी श्रीमति शान्ति देवी सन्तलाल सिंघल (गाजियाबाद), श्रीकृष्ण मायूस (सीलमपुर), दीपक सक्सेना (झांसी), नन्दलाल आर्य-(गया), वासुदेव जी यादव (अहमदाबाद कृष्णनाथ यादव (अहमदाबाद), केशवदेव दिलीपसिंह श्री कलाप जी ए०डी०एम केशवलाल चन्द्रप्रकाश शर्मा पुरवराड़ा एम०जी० शेखर रामचन्द्र शुक्ला डी०एन० उपाध्याय एन०डी० कोयन रतनचन्द्र शर्मा एम०सी० खन्ना भरतभाई लक्ष्मीनारायण (कानपुर), कुलदीप नारायण (कानपुर), हीरालाल कन्हैयालाल मैकूलाल नारायणराम (मालदा), चन्द्रभाल त्रिपाठी (हरदोई), मस्तराम लिपिक (अम्बोआ), दाताराम एल०टी० (अम्बोआ), केदार भगत (पथरगामा), एस०एल० शर्मा (गोविन्दपुर), बुद्धि सागर मिश्र (मझौड़ा), नोरतमल सोनी (जावला, नागौर), यादव जी डाक्टर देवाराम नाई (जावला, नागौर), रामखेलावन जी जगदीश सेन चंद्रिका प्रसाद दूबे विष्णुसन सत्यनारायण खानी सीताराम-हरिजन माता प्रसाद द्विवेदी बालमुकन्द गोड़ कृष्ण औषधालय (रामनगर), तुलसीराम वैष्णव गिरिजा शंकर गोस्वामी (मर्जापुर मसेना), शंकरपुरी-गोस्वामी रामलोटन यादव बाबूलाल टेलर

डेढ़ रु० देने वाले

विनोद कूमार गुप्त (राम नगर)

१ रुपया देने वाले

राजा पी० आर० एम० (हनुमानगढ़), राजेन्द्रसिंह (श्रीगंगानगर), जीतसिंह (अहमदाबाद), प्रकाश (अहमदाबाद), धीरजसिंह रावत (अहमदा-बाद), प्रतापसिंह (अहमदाबाद), के०डी० सरकार मनाराव के०नार० सिंह रामविशाल मेघनाथ जवाहरसिंह हरीराम यादव (मिझौड़ा), रामजीत-कुम्हार (रामनगर डिहवा), हरीराम यादव (मिझौड़ा), जानकी प्रसाद नाई नरेन्द्रदेव तिवारी राममूर्ति तिवारी चन्द्रप्रकाश दूबे परमेश्वरदीन रामनरेश-चौरसिया रामबहादुर सिंह हरिप्रसाद गुहा श्रीराम गुहा श्री काशिप्रसाद माथुर शिवकुमार तिवारी (मिझौड़ा),

सब का धन्यवाद।

—राकेशरानी

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान व कोषाध्यक्ष

हिन्दू रक्षा समिति, नई दिल्ली- ५

प्रेरक प्रसंग

सर्वोपरि गुण

अहल्याबाई होलकर की प्रसिद्धि चारोंओर फैल चुकी थी। एक धार्मिक परोपकारिणी वीराङ्गना के रूप में सभी उनका सम्मान करने लगे थे। प्रजा के कल्याण के लिये वे रात-दिन सचेष्ट रहती थीं। बड़े-बड़े विद्वान् और गुणीजन भी उनका यश गाते थे।

राज्य के एक विद्वान् ब्राह्मण अहल्याबाई के अलौकिक गुणों के प्रति बड़े मुग्ध थे। उनके मन में आया—ऐसी भक्तिमती वीर रमणी की प्रशंसा में काव्य-रचना की जाय। उन्होंने श्रीमती अहल्याबाई के यशोगान के रूप में बड़े परिश्रम के साथ एक ग्रन्थ लिखा। ग्रन्थ बहुत ही उत्कृष्ट कोटि का बना पण्डित महोदय अपनी अफलता पर फूले न समाते थे। ग्रन्थ को लेकर वे महारानी के दरबार में पहुँचे और उनसे प्रार्थना की कि वे उनका ग्रन्थ सुनने की कृपा करें। महारानी ने पण्डितजी का सत्कार किया और उनका आदर करने के लिये ग्रन्थ सुनने को तैयार हो गयीं। पण्डितजी संस्कृत श्लोक पढ़ने लगे और उनका भावार्थ समझाने लगे। एक-से-एक सुन्दर उपमाएं और उत्प्रेक्षाएं थीं।

अहल्याबाई ने कुछ श्लोक सुने कि वे गम्भीर हो गयीं। उनके नेत्रों में अश्रु कण झलक आये। उन्होंने हाथ जोड़कर पण्डितजी से प्रार्थना की—'महाराज जी! आप अपना ग्रन्थ सुनाने के कार्यक्रम को विराम दें। मैं यह ग्रन्थ सुनना नही चाहती। मैं तो एक सामान्य स्त्री हूं। मैं इस प्रकार की स्तुति के योग्य नहीं हूं। इतना परिश्रम, इतनी योग्यता का उपयोग करके यदि आपने उस जगन्नियन्ता परमपिता की स्तुति का ग्रन्थ रचा होता तो आपका तथा ग्रन्थ सुनने वालों का मङ्गल होता। मुझ जैसी मरणधर्मा नारी की यशोगाथा का वर्णन करके आपने अपने समय और योग्यता को व्यर्थ ही गँवाया है।'

यों कहकर महारानी ने पण्डितजी का उचित सत्कार किया और उस ग्रन्थ को लेकर निकट में बहने वाली नर्मदा नदी में प्रवाहित करवा दिया।

पण्डितजी का हृदय भर आया। उनके मन में आया—'महारानी के इस स्वरूप की तो मैंने अपने ग्रन्थ में कहीं अवतारणा ही नहीं की। सचमुच महारानी का यह गुण सर्वोपरि है।'

संत-सेवा

'भाई जी ! लगता है, यह शरीर अब अधिक दिन चलेगा नहीं। मेरी यह इच्छा है कि शरीर का अवसान आपके पास हो; किंतु एक कठिनाई है, जिसके कारण मन में थोड़ा संकोच हो रहा है। आप जानते ही हैं कि मैं टी०बी० का रोगी हूं और धीरे-धीरे उसने अपना प्रभाव मेरे शरीर पर जमा लिया है। टी०बी० का रोग भीषण रूप से संक्रामक होता है। ऐसे रोगी को डाक्टर-वैद्य पृथक् रहने तथा रखने की सलाह देते हैं। इस रोग को लेकर मैं आपके पास क्यों रहूं ? पर मन मानता नहीं; बार-बार यही इच्छा होती है कि अन्तिम श्वास आपकी संनिधि में ही जाय।'

प्रसिद्ध श्री रामसनेही सम्प्रदाय के संत श्रीच्यवनरामजी ने अपने मन की यह अभिलाषा श्रद्धेय श्री भाईजी (श्री हनुमान्प्रसादजी पोद्दार) के समक्ष आज से लगभग तीस वर्ष पहले व्यक्त की थी। उन दिनों श्रीभाईजी अपने पैतृक स्थान रतनगढ़ में रहते थे। संत श्रीच्यवनरामजी की राम-नाम जप पर अनन्य निष्ठा थी। उनका जीवन बड़ा ही सीधा-सादा तथा संतोचित सद्गुणों से भरपूर था। श्री भाईजी के प्रति उनके मन में बड़ी ही आत्मीयता, बड़ा ही स्नेह, बड़ी ही श्रद्धा थी। वे श्रीभाईजी को सिद्ध महापुरुष मानते थे और यही हेतु था कि वे जीवन का अवसान श्रीभाईजी की सन्निधि में चाहते थे। महापुरुषों की सनिधि में अमोघ शक्ति होती है—इस पर संत श्री च्यवनराम-जी का दृढ़ विश्वास था।

श्रीभाईजी तो स्नेह की मूर्ति थे, साथ ही उनके हृदय में संतों-महात्माओं के प्रति बाल्यकाल से ही बड़ी श्रद्धा थी। वे मानते थे कि साधुमात्र की सेवा करना गृहस्थ का धर्म है और वे स्वयं गृहस्थ थे—आदर्श गृहस्थ थे अतएव एक सच्चे संत के मुख से जब उन्होंने यह अभिलाषा सुनी कि उनके पाञ्चभौतिक शरीर का अवसान उनके पास ही हो, तब सहज प्रसन्नता के भाव से श्रीभाईजी ने निवेदन किया—'महाराजजी ! यह घर तो आपका ही है।

संतोंकी चरण-रज से ही घर की शोभा है। यह मेरा सौभाग्य है, जो आप मुझे अपनी सेवा का अवसर प्रदान कर रहे हैं। जैसी भी सेवा मुझसे बन पड़ेगी, उसे करने में मुझे प्रसन्नता होगी। आप तनिक भी संकोच न करें। टी०बी० का रोग है तो क्या? मरना तो सभी को है। रोग उसी का होता है, जिसको होना है। भगवान् के विधान के बिना किसी की सेवा करने से किसी को रोग नहीं लगता।'

श्री भाई जी के आत्मीयता एवं सौहार्दपूर्ण शब्द सुनकर संत श्री च्यवनराम-जी का हृदय भर आया।

सेवा-धर्म परम गहन है। इसका निर्वाह होना बड़ा ही कठिन है। अपने व्यक्तिगत सुख एवं स्वार्थ का ही नहीं, अपने 'अहम्' का विलय करने के पश्चात् ही मनुष्य सेवा का अधिकारी बनता है। भगवत्कृपा से श्री भाई जी में ये चीजें सहज ही विद्यमान थीं। अतएव संत श्री च्यवनराम जी की सेवा बड़े ही व्यवस्थित एवं सुन्दर रूप में होने लगी।

श्री भाईजी ने महाराजजी के आवास के लिये अपने मकान में ही व्यवस्था कर दी। अपने नित्य बैठने के कमरे के ठीक सामने का बड़ा कमरा उन्हें दिया, जिससे श्री भाईजी बराबर उनकी सँभाल रख सकें। दिन में जब-जब श्री भाईजी अपने कमरे से बाहर निकल कर भोजनादि के लिये भीतर जाते, तब-तब वे महाराजजी से पूछते—'कहिये, महाराजजी! क्या हाल है?' और श्री महारजजी उत्तर देते—'ठीक है, भाईजी!' और भाई जी मुस्कुराते हुए भीतर चले जाते। इतना ही नहीं, वे स्वयं प्रतिदिन कुछ समय के लिये श्री महाराजजी की सेवा में उपस्थित होते थे। उस समय उनके शारीरिक कष्ट की बातचीत होती, दवा एवं पथ्य आदि की व्यवस्था के सम्बन्ध में विचार-विमर्श होता। साथ ही भगवत्चर्चा भी होती। रोगी के रूप में संत थे और सेवक के रूप में संत थे; अतएव उस समय की भगवत्चर्चा विशेष महत्त्व-पूर्ण होती थी। जिन व्यक्तियों को उस समय की चर्चा में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, वे आज भी अपने को धन्य मानते हैं।

अपने भक्तों का गौरव बढ़ाने के लिये भगवान् उनकी परीक्षा लेते हैं। रोगी के रूप में मानो भगवान् ही श्री भाईजी की परीक्षा लेना चाहते थे। परम तितिक्षु और निःस्पृह संत श्री च्यवनरामजी के स्वभाव में एक विचित्र परिवर्तन भगवान् ने उत्पन्न कर दिया। एक दिन जिस पात्र में वे भोजन करते, दूसरे दिन उन्हीं पात्रों को अपने सामने देखकर वे कहते—'इन पात्रों में तो कल

न किया था, आज दूसरे पात्र लाइये।' श्री भाईजी तत्काल दूसरे पात्रों व्यवस्था करते। इस प्रकार छः सेट बर्तन उनके लिये निर्धारित कर दिये थे, जिससे एक पात्र की बारी छः दिन के बाद आती थी। यही बात ढ़ने के कम्बलों के सम्बन्ध में भी। कम्बलों के भी कई सेटों की व्यवस्था भाईजी ने की। और भी कई प्रकार की विषम परिस्थितियाँ समय-समय उपस्थित हो जाती थीं, किंतु श्री भाईजी का संत की सेवा में बड़ा उल्लास। उनकी परमसाध्वी, सेवा परायण धर्मपत्नी भी उस सेवा की व्यवस्था में ही उल्लास एवं प्रसन्नता के साथ सहयोग करती थीं।

इस प्रकार सेवा चलने लगी। किंतु श्री भाईजी के प्रति समाज के सभी क्तियों का अपनापन था। बहुत व्यक्तियों को तो उनके शरीर के प्रति ह था। एसे महानुभाव श्री भाईजी के पास पहुंचने लगे और उनसे प्रार्थना रने लगे—'भाईजी! आपने महाराजजी को अपने घर पर रखने का जो र्णय किया है, वह औचित्यपूर्ण नहीं है। महाराजजी को आप देखते ही हैं कितना-कितना बलगम प्रतिदिन गिरता है। टी०बी० का रोग बड़ा भीषण ता है। यह बहुत जल्दी लगता है। आप स्वयं श्री महाराजजी के समीप ते हैं। कभी-कभी वे अपना सिर आपकी गोद में रख लेते हैं। आपसे ना है कि आप श्रीमहाराजी को घर से पृथक् किसी स्वतन्त्र स्थान में वस्था कर दें।'

श्री भाई जी हितैषियों की आत्मीयता भरी सलाह सुनते और मुस्कुरा । उन पर रोग की भीषणता का तनिक भी प्रभाव नहीं था। संत च्यवनरामजी भी अपना मन निरन्तर भगवान् में लगाये रखते थे। ओम्नाम जप तथा श्री भाई जी द्वारा सम्पादित एवं गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित ढ़ाई हजार अनमोल बोल' पुस्तक का स्वाध्याय करते रहते।

रोग प्रतिदिन बढ़ता चला जा रहा था। श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदास-महाराज भी बीच-बीच में रतनगढ़ आया करते थे और अपने हाथों से महाराज जी की सेवा करते थे। महाराज जी श्रद्धेय स्वामी जी के गुरु ई थे। दोनों में बड़ा सौहार्द था।

प्राण-प्रयाण का समय आया। श्रद्धेय श्री भाई जी, स्वामी जी महाराज, गोस्वामी जी आदि उपस्थित थे। भगवन्नाम कीर्तन हो रहा था। इसी रम सात्त्विक वेला में संत श्रीच्यवनराम जी के प्राण-पखेरू उड़ गये।

श्री भाई जी ने महाराज जी के सम्प्रदाय की परम्परा के अनुसार निष्प्राण

कलेवर का विधिवत् संस्कार किया। संकीर्तन के साथ बड़ा जुलूस शव-यात्रा में था। स्वयं श्री भाई जी कीर्तन करते हुए पैदल चल रहे थे।

जिस कमरे में श्री महाराज जी का शरीर छूटा, उस कमरे को अच्छी तरह धुलवा कर श्री भाई जी ने उसमें श्री भगवन्नाम का अखण्ड कीर्तन प्रारम्भ करवाया। श्रद्धालुओं, प्रेमियों एवं स्वजनों के सहयोग से अखण्ड संकीर्तन बड़ी धूमधाम से चलने लगा। श्री भाई जी प्रतिदिन अपने व्यस्त जीवन में से कुछ समय निकाल कर कीर्तन में सम्मिलित होते थे। वैसे उनका अपना कमरा उसके ठीक सामने था और इस प्रकार कीर्तन की सँभाल भी वे बराबर करते थे। ढाई वर्ष तक अखण्ड नाम-कीर्तन चला।

एक संत द्वारा एक संत की सेवा का यह स्वरूप होता है!

आर्यो! उठो

मृगु उठो ! अंगिराओ उठो।
वेद की सब ऋचाओ उठो॥

कर्म का सोम तैयार है।
इन्द्र, भग, देवताओ उठो॥

सरस्वती, सिन्धु के तीर से।
एक हो फिर से आर्यों उठो॥

गो चुराने लगा पणि-तिमिर।
वज्र को आजमाओ उठो॥

देश धन-धान्य से पूर्ण हो।
सूक्त ऐसा सुनाओ उठो॥

—गिरि मोहन गुरु

बन्दा क्यों बँधा ?

—केवलकृष्ण

बन्दा खयालों के कारण बंधा हुआ है और इसीलिए उसे बंदा कहते हैं। इस बन्दे को किसी ने बांधा नहीं है अपितु यह स्वयं ही बंधा हुआ है। यदि वह इन खयालों का बन्धन काट दे तो यही बन्दा बंदगी के योग्य हो जाता है। लोग उसकी पूजा करने लग जाते हैं। यह खयाल ही बंदे को एक स्थान पर टिकने नहीं देता। इसे कभी यहां कभी वहां घुमाता फिरता है। कभी यह इच्छा, कभी वह इच्छा और तब इच्छाओं की पूर्ति के लिए यह बंदा भटकता फिरता है, लेकिन उसकी ये इच्छाएं भी पूर्ण नहीं होती हैं क्योंकि सांसारिक पदार्थों का यह नियम है कि जितना इनके पीछे भागो उतना वे आगे भागते हैं। परन्तु ज्यों ही इन इच्छाओं का त्याग किया जाता है, ये स्वयं ही तृप्त हो जाती हैं। यदि ये इच्छाएं सांसारिक पदार्थों की बजाय अपने आपको जानने में परिवर्तित हो जाती हैं तो पुरुष को वह धन मिल जाता है जिससे सांसारिक इच्छाओं का त्याग हो जाने के कारण सांसारिक पदार्थ उसके पीछे भागते हैं और वह इनकी चाहना भी नहीं करता। स्वामी रामतीर्थ ने अपना अनुभव स्पष्ट कहा है—

भागती थी दुनिया जब हम तलब करते थे,
छोड़ी तलब तो यह जालिम मिलने को बेकरार हुई।

वास्तव में यह इच्छा भी मनुष्य में सांसारिक पदार्थ पाने की नहीं है अपितु इसके पीछे कुछ और ही वास्तविकता छिपी है। वह है सुख और शान्ति को पाने की। कोई पति पत्नी से इसलिए प्यार नहीं करता कि वह उसकी पत्नी है अपितु उससे प्राप्त होने वाले सुख के लिए ही उससे प्यार करता है। कोई पत्नी अपने पति को इसलिए प्यार नहीं करती कि वह उसका पति है अपितु उससे प्राप्त होने वाले सुख के लिए ही उससे प्यार करती है। कोई पुत्र इसलिए अपने पिता से प्यार नहीं करता कि वह उसका पिता है अपितु उससे प्राप्त होने वाले सुख के लिए उनसे प्यार करता है। इसी प्रकार सांसारिक पदार्थों से हम केवल सुख और शान्ति की आशा करते हैं परन्तु ज्यों ज्यों इन पदार्थों की इच्छा करते हैं, हम बन्धन में बंधते जाते हैं और ये इच्छाएं हमें भटकाती रहती हैं। सारे दिन की दौड़-धूप के पश्चात् हम अन्त में इन इच्छाओं से भी छुटकारा पाने के लिए अपने आप को स्वप्न अवस्था में ले जाना चाहते हैं जहां कोई किसी प्रकार का भी

बन्धन नहीं है, कोई खयाल नहीं है। यह सुख पाने की इच्छा भी एक प्राकृतिक नियम के अधीन काम कर रही है। आग को देखो, वह दहन करती है। जल को देखो, वह ठंडक पहुंचाता है। यह उनका स्वाभाविक गुण है। इसी प्रकार आत्मा आनन्दस्वरूप है। उसका स्वभाव आनन्दस्वरूप होने के कारण ही जीव में सुख पाने की स्वाभाविक इच्छा होती है लेकिन उस सुख को अपने अन्दर प्राप्त न करके वही मुक्तस्वरूप, आनन्दस्वरूप आत्मा सांसारिक पदार्थों की इच्छा के कारण बन्धन में पड़ जाता है और जब तक इन इच्छाओं को समाप्त करके आत्मस्वरूप को प्राप्त नहीं हो जाता है वह भटकता रहता है। एक नियम यह भी है कि जब तक बन्धन में पड़ा हुआ बन्दा अपने आप को पहचान नहीं लेता, उसकी इच्छाएं समाप्त नहीं होतीं। इसलिए इस बन्दे को सोचना चाहिए कि आखिर वह इस संसार में क्यों आया? क्या उसका कर्तव्य है? क्या उसे दिन से लेकर रात तक धन-दौलत कमाते अथवा खाते रहने के लिए ही इस संसार में आना पड़ा? यदि ऐसा है तो सांसारिक पशु-पक्षियों और हममें क्या अन्तर हुआ क्योंकि वे भी तो यह सब-कुछ करते हैं। कोल्हू के बैल की भांति घूमते रहने से लाभ क्या? जब तक यह बन्दा इन सब बातों को विचार करके अपने कल्याण का मार्ग नहीं पहचानता तब तक वह बन्धन में बंधा हुआ अनेक दुःखों को भोगता है और इच्छाओं की पूर्ति न हो सकने के कारण दुःखी रहता है और पशुओं से भी अधिक कष्टदायक यातनाएं सहता है, क्योंकि पशु केवल भोग योनि में होने के कारण भोग भोग कर समाप्त कर लेता है लेकिन मनुष्य अपने अज्ञान के कारण और कर्म करके, और इच्छाएं करके बन्धन में पड़ता जाता है।

जिन्दगी भर साथ दे सकते हैं आपके दांत

—डा० अंशु डी० नैयर (दंत विशेषज्ञ)

हमारे दांत कठोर और कोमल दो प्रकार के तंतुओं से निर्मित हैं। कठोर तंतुओं से हमारे दांत बने होते हैं जबकि कोमल तन्तुओं द्वारा ये दांत जबड़े से जुड़े होते हैं जो मसूड़े कहलाते हैं। अतः इन दोनों की समुचित देखभाल न होने के कारण दांत और मसूड़े दोनों में विविध रोग उत्पन्न हो सकते हैं। दंत कृमि सबसे पहले दांतों की पहली रक्षा पंक्ति "इनेमल" (श्वेतावरण) पर आक्रमण करते हैं, उसके बाद ही वे दांतों में प्रवेश करते हैं। दंतक्षय के प्रारम्भ में रोगी को कोई दर्द नहीं होता लेकिन जब यह दन्तमज्जा तक पहुंच जाता है तब पीड़ा शुरू होती है और उस समय तक काफी विलम्ब हो जाता है।

दांतों के कोमल तन्तुओं अर्थात् मसूड़ों की बीमारी को पायरिया कहते हैं। इसमें मसूड़े फूल जाते हैं और उनमें सड़न शुरू हो जाती है। खाना खाने के बाद मुंह में रुके आहारकणों की सफाई न करने से मसूड़ों के चारों ओर एक पीला-सा कठोर पदार्थ जमा हो जाता है जिसे "प्लाक" कहते हैं। इसके कारण मसूड़ों के संयोजक तन्तु ढीले पड़ जाते हैं और उनमें इस तत्त्व की घुसपैठ के कारण सूजन उत्पन्न हो जाती है। धीरे-धीरे स्थिति बिगड़कर रक्त और मवाद उत्पन्न होने लगता है। यही पायरिया कहलाता है।

समय पर ध्यान दें

यदि दंतक्षय की प्रक्रिया अभी सफेद परत और दंतधातु तक ही सीमित हो, तब तो दांत को भरने (फिलिंग) की क्रिया द्वारा बचाया जा सकता है। दांतों के खोखले हुए स्थान को सोने, चांदी, सीमेंट किसी भी पदार्थ से भरा जा सकता है। लेकिन यदि बीमारी दंत-मज्जा तक पहुंच गई हो तो उपचार काफी लम्बा और खर्चीला हो जाता है। इसलिए जहां तक हो सके दांत को रोग की प्राथमिक अवस्था में भरवा लेना चाहिए।

मसूड़ों की बीमारी पायरिया में भी प्रारम्भिक उपचार से स्थिति नियंत्रित हो सकती है। प्रारम्भिक स्थिति में उपचार सरल होता है। इस स्थिति में दांतों पर जमे अवांछित कठोर पदार्थ "प्लाक" को विभिन्न यन्त्रों से साफ करके दांतों को पालिश किया जाता है।

अमरीका में प्रत्येक व्यक्ति वर्ष में एक बार अपने दांतों पर जमे इस पीली पर्त को साफ कराता है। यह विधि बड़ी सरल, दर्द-रहित और हानि-रहित है और इसके कारण पायरिया जैसे घातक रोग होने की सम्भावनाएं समाप्त हो जाती हैं। यदि दंत परीक्षण की असावधानी से पायरिया हो जाता है तो एक लघु शल्य क्रिया द्वारा ही इसका उपचार सम्भव हो पाता है।

दंत-रोगों से कैसे बचें ?

दंत स्वास्थ्य के बारे में कुछ बातों का ध्यान रखा जाय तो दांतों के रोगों से बचा जा सकता है। पहली और सबसे आवश्यक बात यह है कि दांतों की स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाय। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन प्रात: जागरण के पश्चात् और रात्रिको सोने के पूर्व, दो बार अवश्य अपने दांतों को किसी ब्रश अथवा दातुनसे भली भांति साफ करना चाहिए।दंत धावन के लिए कोई भी फ्लोराइड युक्त टूथपेस्ट और मुलायम ब्रश उपयोग किया जा सकता है। साथ ही दिन में कुछ भी खाने के पश्चात् साफ पानी से मुंह और दांतों को साफ अवश्य कर लेना चाहिए। यदि इन दो साधारण नियमों का ध्यान रखा जाय तो दांतों की बीमारियों से बचा जा सकता है। लेकिन सचाई यह है कि लोग इन दो सरल नियमों की उपेक्षा करते हैं और फिर दंत रोग हो जाने पर आश्चर्य प्रकट करते हैं। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को वर्ष में एक बार अपने दांतों का परीक्षण अवश्य करा लेना चाहिए। ताकि किसी भी संभावित दंत रोग का प्रारम्भिक नियन्त्रण किया जा सके।

पोषक आहार की आवश्यकता

दंत रोगों से बचने के लिए भोजन की आदतों की ओर भी ध्यान देना जरूरी है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जिस दंत रोग होते हैं। इसका कारण मनुष्यों का अप्राकृतिक भोजन ही है। मानव समाज अग्नि पर पके मुलायम भोजन का आहार करता है। यही उसके दंत रोग का कारण है। आग पर पकाए हुए भोजन को खाने के बाद दांत साफ न करने से दंतक्षय होता है इसलिए जहां तक सम्भव हो, बच्चों को सेब, गाजर आदि कच्चे फल, और तरकारियां खाने की आदत डालनी चाहिए और उन्हें आईसक्रीम,सॉफ्टी चाकलेट तथा केक जैसी मीठी वस्तुएं खाने से हतोत्साह करना चाहिए। प्रत्येक भोजन के बाद फल खाने की आदत डालनी चाहिए। भोजन के बाद फल खाने से दांत साफ हो जाते हैं।

बारह वर्ष तक के बच्चों तथा गर्भवती महिलाओं को कैल्शियम, फासफोरस और विटामिन डी से सम्पन्न आहार अथवा गोलियों के रूप में ये तत्त्व दिए जाने चाहिएं; इससे जन्म लेने वाले बालक के दांत और हड्डियां मजबूत बनती हैं।

उपदेश : मां का

सामवेद के पूर्वार्चिक आरण्यक काण्ड की तृतीय दशति का प्रथम मन्त्र है—

मयि वर्चो अथो यशो ऽथो यज्ञस्य यत्पयः
परमेष्ठी प्रजापतिर्दिवि द्यामिव दृंहतु ॥

(परमेष्ठी) जीवात्मा रूपी परम स्थान में निवास करने वाला (प्रजापतिः) सब उत्पन्न पदार्थों का स्वामी (मयि) मुझ में (वर्चः) ब्रह्म तेज (अथो) और (यशः) तत्सम्बन्धी यश (अथो) और (यज्ञस्य) ध्यान यज्ञ का (यत्) जो (पयः) सार है अर्थात् मोक्ष है उन्हें (दृंहतु) मुझमें दृढ़ रूप में स्थापित करे, (इव) जैसे उसने (दिवि) द्युलोक में (द्याम्) चमकते सूर्य को तथा तारामण्डल को दृढ़ रूप में स्थापित किया हुआ है।

आप इस मन्त्र को २-३ बार पढ़ें और ध्यान से इस पर विचार करें। यह मन्त्र मोक्ष तक पहुंचाने का मार्गदर्शन कर रहा है।

प्रभु कहते हैं—

मैं सर्वत्र उपस्थित हूं—जड़ में भी और चेतन में भी। जो कुछ तुम देखते हो या भोगते हो उस सब में तो मैं उपस्थित हूं ही, पर जो तुम हो, अमर आत्मा—जो सब कुछ देखते और समझते हो, उसमें भी मैं विद्यमान हूं।

मेरी ज्योति का यश ब्रह्माण्ड में विस्तृत है। मेरे प्रकाश से सब प्रकाशित हैं। मेरे द्वारा ही ज्ञान पाकर तुम उत्कर्ष की ओर बढ़ सकते हो।

ध्यान यज्ञ करो!

अर्थात् चिन्तन करो सत्य का, अपना और उसका, जिसे पाना तुम्हारा एकमात्र उद्देश्य है।

तुम अपना उद्देश्य ही भूल गए और प्रभु को छोड़कर प्रकृति की आराधना में लग गए। इसी से तुम्हें आनन्द के स्थान पर कष्ट मिले। सुख के स्थान पर चिन्ता मिली। तुम्हारा जीवन स्वर्ग नहीं, नरक बन गया और तुम अन्धकार में भटक गए।

—राकेशरानी

फाड़ना संविधान का या राष्ट्रीयता का ?

—सुरेन्द्र चतुर्वेदी

पंजाब और चण्डीगढ़ का पानी अब नाक के ऊपर से बहने लगा है। देश की अखण्डता व एकता की दुहाई देने वाले मुट्ठी भर सिखों ने अपनी राजनीतिक प्यास को बुझाने के लिए खून की नदियां बहानी शुरू कर दी हैं और अब स्थिति उस दौर में पहुंच गई है जब अकाली भारतीय संविधान का अपमान करने पर तुल गए हैं। पंजाब व चण्डीगढ़ में अकालियों द्वारा संविधान का फाड़ा जाना इस बात का स्पष्ट उदाहरण है कि अकालियों को भारत की राष्ट्रीयता से अब कोई मतलब नहीं रहा है। उनकी दृष्टि में भारत अब उनका राष्ट्र नहीं रहा। वे हिन्दुस्तान में जन्म लेकर और बड़े होकर भी हिन्दुस्तान के साथ नमकहरामी कर रहे हैं किन्तु सरकार की खामोशी उन्हें फिर भी बख्श रही है। हमारी दृष्टि में यह खामोशी ठीक नहीं।

खामोशी का दूसरा अर्थ कहीं राष्ट्रीयता पर समर्पित होने वालों के खिलाफ जिहाद छेड़ना तो नहीं ? आखिर वह कौन सी वजह है कि संविधान के साथ धमकी देकर बलात्कार करने वाले दरिंदों के आन्दोलन को धार्मिक आंदोलन मानकर बख्शा जा रहा है जबकि हिन्दुस्तान के नमकहलालों को 'हिन्दू' कहलाने के लिए दण्डित किया जा रहा है। उन पर मुकद्दमे चलाए जा रहे हैं। नई दिल्ली की ओर एक महान् हिन्दू महिला पण्डिता राकेशरानी पर 'हिन्दू' शब्द का साथ देने और उसे प्रचारित करने का दण्ड २७ मुकद्दमे चलाकर दिया जा रहा है, शासन-तंत्र की यह कौन-सी मुहिम है कि अपने राष्ट्र व राष्ट्रवासियों के पक्षधर होने वालों को सजा दी जाए और देश के गणतंत्र को गाली देने वाले खूनी दरिंदों को स्वर्ण मन्दिर के नाम पर छूट दी जाती रहे। चन्द्रशेखर आजाद की पुण्यतिथि पर संविधान के पन्ने फाड़ दिए गए और हमने फाड़ने वालों को तिहाड़ जेल पहुंचाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ ली। जिन्होंने संविधान की धाराओं में वर्णित हिन्दू शब्द को सारगर्भित अर्थों में जीना चाहा व दूसरों को जीना सिखलाया उनकी पत्रिकाओं को जब्त कर दिया, उनके लेखों पर पाबन्दी लगा दी, उनकी जुबान पर ताले लगा दिए। हमें याद आते हैं स्व० वेदभिक्षु: जिन्होंने कभी अजमेर में आयोजित एक सभा में कहा था कि ये अकाली हिन्दुस्तान के

विभाजन का खाका तैयार कर रहे हैं व इन्हें अपनी आस्तीनों में पालकर दूध पिलाते रहना निहायत ही बेवकूफी होगी। उन्होंने यह भी कहा था कि हम रहें न रहें, हमारे हिन्दुस्तान की एकता को जो खण्डित करने का प्रयास करेगा, हमारी पीढ़ियां उसे जिन्दा नहीं रहने देंगी। आज वेदभिक्षु: जी इस संसार में नहीं हैं पर उनकी आवाज आज भी पूरे राष्ट्र में गूंजती हुई पूछ रही है एक लाल सवाल कि पंजाब के इस खूनी दौर का जवाब क्या है? क्या जवाब है संविधान पर कीचड़ उछालकर 'खालिस्तान' के सपने देखने वालों का? क्या जवाब है संसद् में बैठने वाले सभी राजनैतिक दलों की इस पराजित आस्था का?

लेकिन ये सवाल उन लोगों से पूछे जाने चाहिए जिन्हें वास्तव में 'संविधान' का अर्थ आता हो। जो हिन्दू होने के कारण संविधान को गीता के तुल्य मानते हों, सिख होने के नाते जो संविधान को गुरुग्रन्थ साहब के समान मानते हों, ईसाई होने के नाते जो संविधान को बाइबल की तरह सम्मान देते हों, जो मुसलमान होने के नाते संविधान को कुरान जैसी मान्यता देते हों, पर यहां ऐसा है क्या? हम मानवतावादी, धर्मसहिष्णु और प्रगतिशील विचारक होने का झूठा मुलम्मा जो चढ़ाए हुए हैं। क्योंकि हम हिंदुस्तान में रहते हैं इसलिए हिन्दू हैं—यह कहने में भी हमें शर्म आती है। और फिर किसी सम्प्रदाय से बंधकर क्या हम चुनाव नहीं हार जायेंगे? अत: हमसे कोई ये सवाल न पूछे क्योंकि इन सवालों के जवाब हमारे पास नहीं हैं।

राजनीति के प्रस्तुतीकरण का ही यह नतीजा है कि हम पंजाब की समस्या का कोई जवाबी हल नहीं खोज पा रहे। वे स्वर्ण मन्दिर में बैठकर नासमझ सिखों से निर्दोष लोगों को मरवा रहे हैं, दूसरे धर्म को अपमानित कर रहे हैं लेकिन सरकार के पास स्वर्ण मन्दिर में प्रवेश करने का साहस नहीं। हत्यारों को मंदिरों में पनाह देकर अकाली सरकार को ही नहीं अपितु उसकी सार्वभौमिकता को चुनौती दे रहे हैं।

काश! उस स्वर्णमंदिर में बैठे भिंडरांवाला और लोंगोवाल सड़क पर आकर खुद अपनी बात रखने का साहस कर पाते। मगर नहीं। वे कायरों की तरह चूड़ियां पहनकर मंदिर को रनिवास बनाकर बैठे हैं। और वहीं से कुत्ते-बिल्ली की तरह लड़वा रहे हैं भाई से भाइयों को। गोली चाहे सिख के लगे या गैर-सिख के, वह गोली किसी भारतवासी को लगती है। ईसा मसीह को लगती है, मुहम्मद साहब को लगती है, गुरुनानक व गुरुगोविन्द सिंह को लगती है, राम और कृष्ण को लगती है। यह बात पता नहीं क्यों हमारी सरकार उन जिद्दी लोगों को नहीं समझा पा रही। ▭

आरुणि

—प्रेमचन्द्र शास्त्री

पांच हजार वर्षों से भी कुछ पहिले की बात है, हमारे देश में तक्षशिला नाम का एक स्थान था। वहां विद्या का बहुत बड़ा केन्द्र था। हमारे देश के तथा दूसरे भी अनेक देशों के बालक वहां विद्या पढ़ने आया करते थे। उस विद्या-केन्द्र में प्रायः सभी विषयों की शिक्षा दी जाती थी।

वहीं आयोद धौम्य नाम के एक ऋषि आश्रम बनाकर रहा करते थे। उनके पास सैकड़ों शिष्य विद्याध्ययन के लिए रहते और गुरुजी की भक्ति-भाव से सेवा किया करते। शिष्यों के दूध पीने के लिए सैकड़ों गौएं भी उस आश्रम में पलती थीं, जिनकी सेवा वे शिष्य ही किया करते थे। वे ही उन्हें चारा-पानी देते और वे ही उन्हें वन में चराने के लिए ले जाते। इसके साथ ही ऋषि ने शिष्यों के खाने के लिए खेत में अन्न भी बोया हुआ था। धान के खेत की क्यारियों में जल भरा रहता था। ऋषि के यों तो सैकड़ों ही शिष्य थे—किन्तु तीन शिष्य गुरुजी के अधिक भक्त थे। उनके नाम हैं—आरुणि, उपमन्यु और वेद। आरुणि की कहानी सबको आश्चर्य में डालने वाली है। उससे पता चलता है कि आरुणि कितना अधिक गुरुभक्त था। उसने अपनी जान पर खेलकर भी गुरुजी की आज्ञा का पालन किया।

एक दिन ऋषि अपने कुछ शिष्यों को साथ लेकर प्रातः भ्रमण के लिए निकले। वे उन्हें मार्ग में शिक्षा भी दे रहे थे। भ्रमण के पश्चात् जब वे अपने आश्रम में वापिस पहुंचे और भ्रमण-काल में दी गई शिक्षा को दोहराने लगे तो इतने में ही वर्षा आरम्भ हो गई। थोड़ी ही देर में तूफान आ गया और मूसलाधार वर्षा पड़ने लगी।

ऋषि ने शिष्यों से कहा—बेटो, खेत में धान की क्यारियों के बांध इस वर्षा में कहीं टूट न जायें! इतना सुनना ही था कि आरुणि ने न किसी से कुछ कहा और न ही किसी दूसरे साथी की प्रतीक्षा की, वह तुरन्त ही खेत की ओर दौड़ पड़ा। खेत में जाकर उसने देखा कि एक क्यारी का बांध भारी वर्षा से टूट गया है और क्यारी का पानी बाहिर बह रहा है। उसने मिट्टी और घास रख-रखकर उस बांध को ठीक करना शुरू किया—किन्तु वर्षा तेज थी, पानी तड़ातड़ पड़

रहा था—इसलिए आरुणि बांध रोकने के अपने प्रयास में सफल नहीं हो पा रहा था।

आरुणि सच्चा गुरुभक्त था। उनकी आज्ञा का पालन करना, अपने प्राण खोकर भी, वह परम धर्म समझता था। उसने हिम्मत नहीं हारी और उस बांध को ठीक करने का और भी दृढ़ संकल्प बना लिया। ज्यों-ज्यों वह बांध में मिट्टी लगाता, त्यों-त्यों वर्षा और तेज होती जाती और बांध में लगाई गई मिट्टी बह जाती। वर्षा में और आरुणि में एक प्रकार से प्रतिस्पर्द्धा छिड़ गई। मानो वर्षा यह कह रही थी कि मैं जितना भी हो सके, आज ही बरसूंगी और आरुणि मानो यह कह रहा था कि मैं आज ही बांध को ठीक करके दम लूंगा। आरुणि ज्यों ही मिट्टी का लौंदा वहां रखता, त्यों ही वह पानी के तेज बहाव से बह जाता।

अपने इस प्रयत्न में जब आरुणि असफल हो गया और बांध ठीक न कर सका तो उसकी बुद्धि ने उसका साथ दिया। उत्तम पुरुष वही होता है जो बार-बार विघ्न आने पर भी अपने प्रारम्भ किये हुए कार्य को बीच में नहीं छोड़ता। आरुणि को एक उपाय सूझा। बांध के जिस स्थान पर वह मिट्टी लगा रहा था आर मिट्टी रुक नहीं रही थी, वहां वह स्वयं लम्बा लेट गया। उसकी सूझ-बूझ ने काम किया और क्यारी का पानी बहना बन्द हो गया। आरुणि पानी रोकने के लिए वहां लेटा रहा। हवा बहुत तेज और ठण्डी बह रही थी, ऊपर से उसके ऊपर मूसलाधार वर्षा पड़ रही थी। मिट्टी से मिला पानी आरुणि के शरीर पर से होकर उतर रहा था।

उधर आश्रम में आरुणि के साथी उसके वापिस आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। किन्तु आरुणि तो खेत में बांध की जगह स्वयं लेटा हुआ था। सारा दिन बीत गया, सन्ध्या-काल भी चला गया और रात्रि भी आ गई। सब आश्रमवासी रात्रि में निद्रामग्न हो गए। प्रातः उठकर शिष्यों ने देखा कि आरुणि अभी तक खेत से वापिस नहीं आया है। उन्होंने गुरुजी से निवेदन किया कि गुरु जी, आरुणि कल खेत पर गया था, सारा दिन बीत गया और रात्रि भी चली गई, वह अभी तक वापिस नहीं लौटा है।

यह सुनते ही गुरु जी एकदम चिन्तित हो गये और कुछ शिष्यों को लेकर खेत की ओर चल पड़े। दयार्द्र ऋषि ने जोर-जोर से आवाज देनी शुरू की—आरुणि, बेटा आरुणि! गुरु जी की पुकार का कोई उत्तर नहीं मिला। अब तो गुरु जी और आरुणि के साथी इधर-उधर घूम-घूमकर उसे ढूंढ़ने लगे! ढूंढ़ते-ढूंढ़ते उन्होंने देखा कि खेत में एक क्यारी के बांध की जगह आरुणि स्वयं लेटा हुआ है। भयंकर सर्दी के कारण वह सिकुड़ा पड़ा है। उसके शरीर पर मिट्टी की

पतली-पतली कई परतें जम गई हैं और वह बेहोश हो गया है। ऋषि करुण स्वर में आरुणि को पुकारने लगे और अपने प्रिय शिष्य आरुणि के हाथों को हिला-जुलाकर जगाने लगे। अन्त में उसकी चेतना कुछ प्रबुद्ध हुई और उसने आंखें खोल दीं। उनकी दृष्टि अपने गुरु जी के ऊपर भी पड़ी और झट उठकर उसने उनके चरणों में प्रणाम किया। गुरु जी ने छाती से लगा लिया।

गुरु जी आरुणि को वहां से आश्रम ले गये, वहां उसे स्नान कराया गया और शीत निवारक औषध डालकर गर्म दूध पिलाया गया—फिर उसे गर्म वस्त्र धारण कराए गये।

जब आरुणि स्वस्थ हो गया, तो उसके साथी उसे गुरु जी के समीप ले गए। गुरु जी ने पुनः आरुणि को अपनी छाती से लगाया, उसके सिर पर स्नेह-भरा हाथ फेरा और परम प्रसन्न होकर उसे आशीर्वाद दिया—"बेटा आरुणि, तुम परम गुरुभक्त हो। तुम्हारा नाम सदा अमर रहेगा और संसार आदर के साथ अनन्त काल तक तुम्हारा स्मरण करेगा। सहस्रों यज्ञों का फल तुम अनायास ही प्राप्त करोगे और वेदादि सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञान बिना पढ़े ही तुम्हें प्राप्त हो जायेगा और तुम क्यारी के बांध को तोड़कर उठे हो इसलिए तुम्हारा नाम उद्दालक प्रसिद्ध होगा।

बालको! तुम भी आरुणि के समान गुरुभक्त बनो। गुरु जी की आज्ञा का सदा पालन करो। गुरु जी प्रसन्न होकर तुम्हें आशीर्वाद देंगे और उनके अन्तःकरण से निकला आशीर्वाद सदा सफल होगा। फलस्वरूप तुम्हारा नाम भी अनन्त काल तक अमर रहेगा।

जन-ज्ञान की प्रतीक्षा रहती है।

'जन-ज्ञान' नियमित रूप से लेता हूं। मैं तथा मेरा परिवार इससे बहुत प्रभावित हुए हैं। प्रत्येक मास हम इसकी अधीरता से प्रतीक्षा करते हैं। वास्तव में यह पत्रिका हिन्दू समाज की आधुनिक पथ प्रदर्शिका सिद्ध हो रही है। हम आपको पूरे सहयोग का आश्वासन देते हैं।

नई दिल्ली हरिसिंह आर्य

महान् जनरल हरिसिंह नलवा

—विजयकुमार चोपड़ा

(यह लेख पिछले अंक में नहीं जा सका—चित्र के साथ; अब प्रकाशित किया जा रहा है।)

जनरल हरिसिंह नलवा महाराजा रणजीत सिंह के अत्यन्त प्रतिष्ठित और जाने-माने जनरलों में से थे और महाराजा रणजीत सिंह की तरह ही (१७६१ में) गुजरांवाला में पैदा हुए थे। उनके जीवन की बहुत-सी घटनाएं महाराजा के जीवन की घटनाओं के साथ-साथ चलती नजर आती है। वे महाराजा के पर्सनल अटेंडेंट के तौर पर लाहौर सर्विस में भरती हुए और अन्ततः भारत के महाराजा के जाने-माने जनरलों में गिने जाने लगे।

पिता के इकलौते पुत्र

हरिसिंह अपने माता-पिता के इकलौते पुत्र थे और अभी वे केवल सात साल के थे कि १७९८ में उनके पिता सरदार गुरदयाल सिंह का स्वर्गवास हो गया और उनके पालन-पोषण का भार उनके मामा पर आ पड़ा। १८०१ में उन्होंने सिक्खी ग्रहण की अर्थात् उनका पोहुल संस्कार हुआ। उन्हें पंजाबी और फारसी पढ़ाई गई। हालांकि उन्हें कभी कोई विधिवत् सैनिक शिक्षा नहीं दी गई, परन्तु पन्द्रह वर्ष की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते वे एक अच्छे घुड़सवार, अच्छे निशानची और तलवार के अच्छे धनी हो गए।

नलवा नाम कैसे पड़ा ?

एक बार वे महाराजा रणजीत सिंह के साथ शिकार पर निकले। जंगल में चीते ने उन्हें पकड लिया और देखते ही देखते हरिसिंह ने तलवार के भरपूर वार से चीते का सिर धड़ से अलग कर दिया। उनकी इस वीरता से प्रसन्न होकर महाराजा ने उन्हें 'नलवा' की उपाधि भी दी और एक छोटी-सी सैनिक टुकड़ी भी उनकी कमान में दे दी। यहीं से उनका सैनिक जीवन आरम्भ हुआ। यह भी कहा जाता है कि हरिसिंह क्योंकि राजा नल की तरह दानवीर थे, इसलिए भी लोग सत्कार के साथ उन्हें नलवा कहते थे।

स्वयं का निर्माण स्वयं

हरिसिंह नलवा उल्लेखनीय योग्यताओं के स्वामी थे। उन्होंने जीवन में कभी भी युद्ध की शिक्षा नहीं ली, मगर युद्ध क्षेत्र में बड़े-बड़े सूरमाओं के दांत खट्टे कर दिए। उन्होंने अपने जीवन का निर्माण स्वयं किया था। वे बड़े आत्म-संयमी, दृढ़-निश्चयी और मौत के पंजे से पंजा लड़ाकर शत्रु से लोहा लेने वाले

व्यक्ति थे। सर लैपल ग्रिफेन ने कहा है कि जनरल हरिसिंह सही अर्थों में खालसा का मूरत थे।

निष्ठा और कर्त्तव्य-परायणता

वे महाराजा के प्रति अत्यन्त निष्ठा रखते थे और अपने कर्त्तव्य के पालन को ही अपने जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य मानते थे। एक सच्चे सैनिक की तरह युद्ध क्षेत्र में ही वे वीरगति को प्राप्त हुए। सूबा सरहद के विद्रोही पठानों को जितनी बुरी तरह से हरिसिंह नलवा ने कुचला, वह एक अविस्मरणीय गाथा है। जहां भी उनका कोई सैनिक मारा गया, वहीं उन्होंने दूर-दूर तक तबाही मचा दी। अफगान लोगों में हरिसिंह का कितना आतंक था इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि आज भी अफगान माताएं अपने शैतान बच्चों को डराने के लिए कहा करती है 'हरियां रगले दा' अर्थात् चुप होजा, हरिसिंह आ रहा है। दूसरे शब्दों में विद्रोही पठानों के लिए वे हौवा बन गए थे। यही कारण था कि लाहौर दरबार में महाराजा रणजीत सिंह के बाद सबसे अधिक आदर हरिसिंह नलवा का होता था।

पेशावर और नलवा

क्योंकि पेशावर उत्तर-पश्चिम से आने वाले शत्रुओं के लिए दरवाजे का काम करता था, इसलिए उन्होंने इस दरवाजे को बन्द कर देने का निश्चय किया। पेशावर विजय और उस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण किलों का निर्माण उनकी नीतियों का फल था। वे सिख राज को पेशावर से आगे तक ले जाना चाहते थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने टैंक, बल्लू और डेरा इस्माईल खां में अपनी विजय पताका लहराई थी।

महाराजा रणजीत सिंह ने उनकी वीरता से प्रभावित होकर उन्हें आठ लाख रुपए की जागीर और बहुत-से इनाम दिए थे। हजारा, पुलकी, घमतौर, खानपुर, कोलरा, काछी, कलारघर, भरपूर, मिट्टा टिवाना, चलपार और गुजरांवाला के क्षेत्र हरिसिंह की जागीर में शामिल थे। एक बहुत ईमानदार व्यक्ति होने के बावजूद हिसाब-किताब के मामले में वे बहुत कच्चे थे और महाराजा ने उन पर जुर्माने भी किए थे। तमाम पंजाबी जनरलों में वे सबसे ज्यादा पढ़े-लिखे थे। पंजाबी, फारसी और पश्तो पर उनका पूरा अधिकार था और राजनैतिक मामलों में उनकी सूझ-बूझ बड़ी विलक्षण थी।

सभी धर्मों का आदर

कट्टर सिख होने के बावजूद अन्य धर्मों के लिए भी उनके मन में पूरा आदर था। वे सबको अपने-अपने ढंग से पूजा-पाठ करने की खुली छूट देते थे। जब

उन्होंने हजारा में हरिपुर शहर और किला बनाया तो वहां गुरुद्वारे के साथ-साथ मंदिर और मस्जिद भी बनवाई। उनकी निजी जागीर की देखभाल भी एक मुसलमान ही करता था और उनकी सेना में भी बहुत-से मुसलमान थे। १८३२ में गुरुद्वारा पंजा साहब में उन्होंने बहुत-से सुधार किए और पांच सौ रुपए की जागीर भी उसके साथ लगाई।

बेहतरीन मकान

हरिसिंह नलवा ने अपने रहने के लिए एक बहुत शानदार तीन-मंजिला मकान बनवाया हुआ था। जब अंग्रेज यात्री बार (Barr) १८३९ में गुजरांवाला आया तो उसने हरिसिंह के मकान को देखकर लिखा "पूरब में इससे अधिक सुन्दर मकान मैंने नहीं देखा।" इस यात्री ने हरिसिंह का वह नौबतखाना भी देखा, जिसमें उन्होंने चीते पाल रखे थे। उल्लेखनीय है कि उन्हें चीते पालने का बड़ा शौक था। वे दो सूबों के गवर्नर भी रहे और दोनों ही जगह उनके नाम पर 'हरिसिंह' सिक्का भी चला। कश्मीर में १८९० तक हरिसिंह रुपया चलता रहा।

आर्थिक सुधार

हरिसिंह ने बहुत-से आर्थिक सुधार भी किए। कश्मीरी कागज का जो उद्योग अफगानों के समय में नष्ट हो गया था, उन्होंने दोबारा शुरू किया। जन्म और विवाह पर लगने वाला जोड़ा टैक्स भी उन्होंने समाप्त कर दिया। बहुत-से कश्मीरी जो घाटी छोड़कर चले गए थे, उनके सुधारों से प्रभावित होकर वापस घाटी में आ गए।

एक अंग्रेज ने लन्दन के एक साप्ताहिक पत्र हिट व्हिम में लिखा था "बहादुरी में हरिसिंह विश्व के नैपोलियन, हिंडनबर्ग, किचनर, ड्यूक आफ वैलिंगटन, चंगेज और हलाकू जैसे सफल जनरलों से मीलों आगे थे।" क्लाजवाइज ने लिखा है "हरिसिंह उन लोगों में से थे जो थोड़े-से साधनों में ही बहुत कुछ कर दिखाते हैं।" भारत को अपने इस महान् सपूत पर गर्व है और गौरव भी। ▭

मुस्लिम राष्ट्र अशांत क्यों ?

—चन्द्रिकाप्रसाद गुप्त

पिछले महीने ढाका में मुस्लिम देशों के विदेश मन्त्रियों का सम्मेलन हुआ और वह बिना किसी उपलब्धि के समाप्त हो गया। यह सम्मेलन मुस्लिम राष्ट्राध्यक्षों के होने वाले सम्मेलन की पूर्व भूमिका है। वास्तव में धर्म के नाम पर ४४ देशों के इस सम्मेलन की आवश्यकता क्यों पड़ी ? शायद यह धर्म का आंख बन्द करके अनुसरण करना ही है।

यदि हम मुस्लिम राष्ट्रों की वर्तमान स्थिति को झांक कर देखें तो हमें कई दरारें नजर आती हैं। ये दरारें हत्या के रूप में होती हैं या फिर एक युद्ध के रूप में। सन् १९८१ में मिस्र के राष्ट्रपति अनवर सादात की और उससे पहले ईरान के राष्ट्रपति मुहम्मद अली रजाई एवं प्रधानमन्त्री मुहम्मद जावेद बा-हुनर की हत्या की गई। ईरान के धार्मिक व राजनैतिक नेता श्री मुहम्मद अयातुल्ला खुमैनी के द्वारा किया गया कत्लेआम एक आम बात हो गई है। पहले भी हमारे पड़ोसी देशों में सत्ता में अवरोध पैदा करने वाले तत्त्वों को नष्ट कर दिया गया था। दो वर्ष पहले लाहौर में चौधरी जहूर इलाही की हत्या की गई थी और जुल्फिकार अली भुट्टो, मुजीबुर्रहमान व जियाउर रहमान की हत्यायें आज भी हमारे दिमाग में तरोताजा हैं।

अगर हम मध्यकालीन भारत के इतिहास को पलट कर देखें तो पता लगता है कि सत्ता को हथियाने के लिए श्वसुर, पिता, चाचा और भाइयों तक को मार डाला गया है।

और आज भी अगर हम मुस्लिम देशों की स्थिति को देखें तो पता लगता है कि वे कितने अशांत हैं।

ईरान इसराइल और ताइवान की मदद से इराक से लड़ रहा है जिसको मिस्र से मदद मिल रही है। इसराइल ने इराक के परमाणु रियेक्टर पर बम फेंक कर विश्व में पहला स्थान प्राप्त किया। लीबिया जिसकी आबादी बम्बई की तिहाई है वह अपने पड़ोसी देश जैसे सूडान, चाड़, नाइजर और दूसरे देशों के साथ युद्ध कर रहा है। लीबिया की मिस्र और ट्यूनीसिया के साथ नहीं बनती। पोलीसेरिया आन्दोलन के गुरिल्ला मोरक्को के साथ अपनी स्वतन्त्रता के लिए

लड़ रहे हैं और मोरक्को की अलजीरिया से नहीं बनती। सऊदी अरब आधुनिक विमान व शस्त्र एकत्र कर रहा है जबकि उनकी आवश्यकता नजर नहीं आती है। इसी तरह द्विपक्षीय झगड़े सीरिया के इराक व जार्डन के साथ, दक्षिणी यमन के उत्तरी यमन के साथ चलते ही रहते हैं।

इन सबसे एक बात तो स्पष्ट ही है कि मुस्लिम देश शान्ति से बहुत दूर हैं।

आखिर इसका क्या कारण हो सकता है कि मुस्लिम लोगों में और उनके देश में भावना एवं मानवीय व्यवहार को भौतिकता की तुलना में तुच्छ समझा गया है। क्या यह बात उनके व्यक्तित्व में समा गई है?

पाकिस्तान की वायुसेना के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री ए० रहीम खान ने 'दि मुस्लिम' नामक समाचारपत्र में अपने एक लेख में कहा है कि क्या पाकिस्तान में क्षुद्र लोग रहते हैं या फिर हम लोगों का ऐसा राष्ट्र है जहां पर हमें फौज को कष्ट देना पड़ता है। आगे उन्होंने लेख में कहा है कि हमने नागरिकों को चोर, डकैत, उपद्रवी एवं असामाजिक तत्त्व ही बनाया है। यहां तक कि कुछ राजनीतिक, कुछ राष्ट्रद्रोही भी हो गए हैं। उन्होंने कहा कि क्या पाकिस्तान की जनता को सही रास्ते पर नहीं लाया जा सकता?

इससे यह तो पता लगा कि कम से कम एक मुसलमान को तो आत्म-ज्ञान हुआ।

इस अशांति के कारणों की हम विवेचना करें। इस प्रश्न को तो दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है—एक तो वैज्ञानिक और दूसरा सामाजिक।

(१) वैज्ञानिक कारण—रीति-रिवाजों के अनुसार चाचा की लड़की अर्थात् बहन के साथ विवाह करते हैं अपनी भतीजी के साथ भी। उनका विश्वास है कि इससे खून खानदान में रहता है। किन्तु विज्ञान के दृष्टिकोण से इस प्रकार की शादियों से उत्पन्न बच्चे विकृत आकार के या फिर कुछ आनुवंशिक बीमारियों से या फिर कम बुद्धि के होते हैं क्योंकि जीन (Gene) होमोजाइगस हो जाते हैं।

वैसे स्वस्थ मुस्लिम समाज इस दृष्टिकोण के लिए चुनौती तो अवश्य है जिसका वैज्ञानिक कारण है कि हानिकारक जीव होमोजाइगस अवस्था में आए और समाप्त हो गए।

चलो, मान लिया कि जीव वैज्ञानिक दृष्टि से एक अलग प्राणी तो नहीं है किन्तु इस बात को बिल्कुल नहीं नकारा जा सकता कि इस प्रकार की भाई-बहन की शादी से उत्पन्न मनोविज्ञान एक अलग ही प्रकार का होता है जो भौतिकता जैसे शासन, अधिकार इत्यादि को सर्वोपरि मानता है और भावनाओं व मानवीय सम्बन्धों की तो उसके मां-बाप अर्थात् भाई-बहन शादी करके

बलि चढ़ा देते हैं। यानी जो भाई-बहन के साथ शादी करेगा उसकी मानवीय सद्गुणों की भावनाएं तो वहीं समाप्त हो गयीं।

(२) सामाजिक कारण—दूसरा सामाजिक कारण है जो मुसलमानों के असाधारण प्राणी बनने की पुष्टि करता है। यह दो तरह से होता है—

(क) पीढ़ी दर पीढ़ी एक जैसे विचारों को ही अपनी सन्तान को सिखाना जैसे भौतिकता, शासन को हथियाना, अहं भावना इत्यादि। और (ख) हीन शृंखला।

ऐसा कहा जाता है कि विनम्रता 'विनम्रता की जननी है। किन्तु मुसलमानों के सन्दर्भ में यह कहना उचित है कि अपराध अपराध की जननी है। यदि किसी आदमी को या किसी राष्ट्र को कुछ हानि पहुंचती है तो प्रतिकार की भावना उसमें आ जाती है। क्षमा के बारे में वह सोच भी नहीं सकता क्योंकि उनकी पवित्र पुस्तक कुरान या उनके साहित्य में क्षमा शब्द ही नहीं है। हिन्दुओं में कौन नहीं जानता—

क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात।
का रहीम हरि का घट्यो जो भृगु मारी लात॥

बदले की भावना हर मुसलमान में जब तक रहेगी तब तक आपसी अनबन व युद्ध स्वाभाविक है। वे चलते रहेंगे। किन्तु मुस्लिम धर्म अब विचारों का इतना कट्टर हो गया है कि उसका बदलना नामुमकिन-सा है। वैसे अंग्रेजी में एक कहावत है—

A dead person and a fool never Change their views
अर्थात् मुर्दा व मूर्ख अपने विचार कभी नहीं बदलते।

आज आवश्यकता इस बात की है कि मुसलमान लोग (जो अपने आप को किसी ढंग से नहीं बदल सकते) या तो धर्म परिवर्तन कर सहिष्णु एवं मानवतावादी हिन्दू धर्म स्वीकार करें या फिर आपस में संघर्ष करते हुए समाप्त हो जाएं।

बंगलादेश में प्रजातन्त्र को लाने के लिए वहां के मुख्य मार्शल लॉ प्रशासक श्री मुहम्मद इरशाद ने अपने आपको स्वयं राष्ट्रपति घोषित करके अपनी स्थिति और मजबूत कर ली है जैसा हम एक मुसलमान से अपेक्षा कर सकते हैं।

स्वर्गीय महात्मा वेद भिक्षु: भाषण देते हुए।

Regd. No. 107119/65

वेद मन्दिर पो० आ० अलीपुर दिल्ली-३६

महाराणा प्रताप